महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री खुलासा

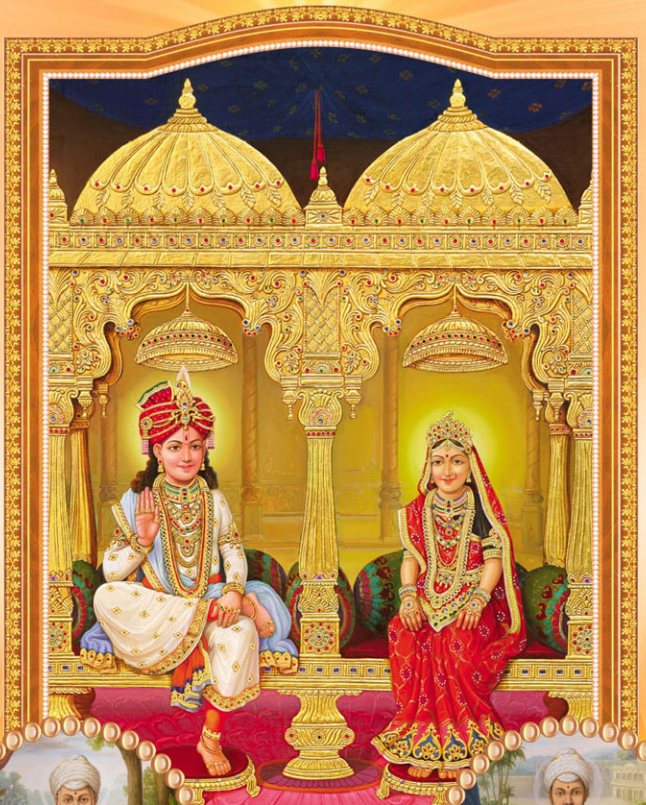

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री खुलासा

खुलासा फुरमानका (कुरानका स्पष्टीकरण)

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए ।
किए हादीने जाहेर, याही मगज मुसाफ के ॥ १

महामति कहते हैं, परमात्माके आदेशने कुरानमें जो कहा है उसका रहस्य सद्‌गुरु (हादी) श्रीदेवचन्द्रजीने मेरे हृदयमें विराजमान होकर मेरे द्वारा इस खुलासा ग्रन्थके माध्यमसे स्पष्ट किया है.

ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें वि चार ।
रूहें हक सूरत दिल में लई, छोडी दुनियां कर मुरदार ॥ २

हे सज्जनो ! कुरानमें निर्दिष्ट सिद्धान्तोंका स्पष्टीकरण देखिए. इन पर ब्रह्मसृष्टि ही विचार कर सकेंगी. क्योंकि उन्होंने परमात्माके स्वरूपको अपने हृदयमें धारण कर मिथ्या जगतको तुच्छ माना है.

चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम ।
हक अरस वाहेदत में, हुआ रोसन दिन खसम ॥ ३

दिव्य तारतम ज्ञान और परमात्माके आदेशसे यह चौदह लोकयुक्त ब्रह्माण्ड

अखण्ड हो जाएगा. परब्रह्म परमात्मा अखण्ड अविनाशी, अद्वैत धाममें रहते हैं. उनके दिव्य तारतम ज्ञानके प्रकाशसे अब आत्मजागृतिका दिन प्रकट हो गया है.

बडाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन ।
खोले द्वार खिलवत के, एही कुंजी बका वतन ॥ ४

इस दिव्य तारतम ज्ञानकी महिमा आज तक कहीं भी प्रकट नहीं हुई थी. अब इसीके द्वारा अद्वैतके रहस्य (द्वार) स्पष्ट कर दिए हैं. वस्तुतः यह अखण्ड परमधामकी कुञ्जी है.

खुले द्वार सब अरसों के, एही रूह अल्ला इलम ।
एही लुदंनी खुदाई, ए कौल हक हुकम ॥ ५

निजानन्द स्वामी श्रीदेवचन्द्रजी प्रदत्त इस तारतम ज्ञानके द्वारा (वैकुण्ठसे लेकर परमधाम तक) सभी धामोंके द्वार खुल गए हैं. यह तारतम ज्ञान परमात्माका ज्ञान है, इसके वचन साक्षात् परमात्माके वचन हैं और उनकी ही आज्ञासे प्रकट हुए हैं.

ए कलाम आए हकसे, ए नुकता कह्या जे ।
ए जानें बिचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए ॥ ६

ये वचन परब्रह्म परमात्मासे ही अवतरित हुए हैं, तारतमके इन बीज वचनोंको कुरानमें नुक्ता (बीज) कहा गया है. जिन ब्रह्ममुनियोंके लिए यह ज्ञान अवतरित हुआ है, वे ही इस पर विचार करेंगे.

किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अरससे रूहें फिरस्ते ।
मोमिन मुतकी ए सुन के, रेहे ना सके जुदे ॥ ७

परमधामसे ब्रह्मसृष्टि और अक्षरधामसे ईश्वरीसृष्टि इस संसारमें अवतरित हुई हैं, उनके लिए ही यहाँ पर कुरान तथा पुराणके ज्ञानका स्पष्टीकरण हुआ है. इन वचनोंको सुनकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने धामसे अलग नहीं रह सकेंगी.

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरफ करें ना सहूर ।
रूहें फिरस्ते और दुनियां, ए लिख्या तीनोंका मजकूर ॥ ८

यह बात कुरानसे ही स्पष्ट हुई है, तथापि विद्वान(आरफ) इस पर विचार क्यों नहीं करते ? कुरानमें ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि एवं जीवसृष्टि इन तीनोंका वृत्तान्त लिखा गया है.

देखो दोऊ पलडे, एक दुनी और अरस अरवाए ।
रूहें फिरस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियां खुदा हवाए ॥ ९

इन दोनोंको तुलामें तौलकर देखो, एक ओर संसारके जीव हैं तो दूसरी ओर अखण्ड धामकी आत्माएँ हैं. इनमें ब्रह्मात्माएँ एवं ईश्वरीसृष्टि परमात्माके स्वरूपका ध्यान करती हैं तथा संसारके जीव शून्य-निराकारको ही परमात्मा मानते हैं.

ए जो गिरो अरस अजीम की, तिनपें हकीकत मारफत ।
बडी बडाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत ॥ १०

परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंको यथार्थ ज्ञान और पूर्ण पहचान है. ब्रह्मात्माओंकी यही सबसे बड़ी महिमा(प्रशंसा) है कि वे अखण्ड अविनाशी परमधाममें अद्वैत रूपसे रहनेवाली हैं.

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फिरस्तन ।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन ॥ ११

अक्षरधामसे प्रकट हुई आत्माएँ ईश्वरीसृष्टिका समूह कहलाती हैं. ये सभी अखण्ड धामसे अवतरित हुई हैं इसलिए यथार्थ ज्ञानके बिना वहाँ नहीं पहुँच सकती.

ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत ।
रूहें फिरस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत ॥ १२

कुरानके आम सिपारे (अध्याय) की इन्ना इन्जुलना नामक सूरत (प्रकरण) में यह उल्लेख है कि ब्रह्मात्माएँ और ईश्वरीसृष्टि सभी जीवोंको सुरक्षा प्रदान

कर अखण्ड मुक्ति देंगी तथा अन्तिम(आत्मजागृति अर्थात् कयामतके) समयमें इनका ही आदेश चलेगा.

ए पैदा बनी आदम की, ए जो सकल जहान ।
सो क्यों कर आवे अरस में, बिना अपने मकान ॥ १३

संसारके सभी जीव मनु (आदम) की सन्तान कहलाती हैं इसलिए वे अपने घर (क्षर ब्रह्माण्ड) को छोड़कर परमधामके मार्ग पर कैसे आ सकेंगे ?

जाहेर सिपारे आठ में, लिख्या पैदा आदम हवाए ।
इबलीस लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह ॥ १४

कुरानके आठवें अध्याय(सिपारे) में स्पष्ट लिखा है कि संसारके प्राणी आदम और हव्वासे उत्पन्न हुए हैं तथा उनको इबलीस (मन) की सृष्टि भी कहा गया है. यही मन उन सभीके हृदयका सम्राट(शासक) बन कर उन पर शासन करता है.

भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह इबलीस ।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस ॥ १५

जैसे आदमका परिणय हवासे हुआ, इसी प्रकार संसारके प्राणी मनके साथ बँधे हुए हैं. कुरानमें यह स्पष्ट रूपसे लिखा है कि संसारके लोग अपनी इच्छा अनुसार हवा अथवा मायाकी पूजा करते हैं.

तिन हवा हिरससे पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे ।
सो फैल कर जुदे पडे, ए जो फिरें दुनियांके फिरके ॥ १६

इसी मायासे उत्पन्न हुए संसारके जीव अपनी इच्छानुसार आचरण(व्यवहार) करते हुए एक-दूसरेसे अलग हुए और विभिन्न सम्प्रदायोंमें बँट गए.

पैदास बीच इबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल ।
पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां यह अकल ॥ १७

यह आदमकी सन्तान भी वस्तुतः मन(इबलीस) की ही सृष्टि कहलाती है. इसलिए ये सभी मायाको ही परमात्मा मानकर पूजते हैं तथा इनकी बुद्धि ही ऐसी है.

कह्या कुलफ आडे ईमान के, हवाई का देख ।
दुनी का लिख्या बेवरा, सोए कहूं विवेक ॥ १८

संसारके जीवोंकी श्रद्धा और विश्वास पर मायाका आवरण (ताला) छाया हुआ है. कुरानमें

इन जीवोंका विवरण ही इस प्रकार लिखा है, उसीको मैं यहाँ पर विवेक पूर्वक कह रहा हूँ.

राह पकडे तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम ।
सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अरस इलम ॥ १९

जो आत्माएँ अद्वैतका मार्ग ग्रहण कर अन्तिम मुहम्मद (मेरे) के पदचिह्नों पर चलती हैं तथा जिनका हृदय परमधामके ज्ञानसे प्रकाशित है, उन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है.

कह्या सेजदा आदम पर, अजाजीलें फेर्‌या फुरमान ।
सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान ॥ २०

कुरानमें ऐसा उल्लेख है, परमात्माने अजाजीलको कहा कि तुम आदमको नमन (सेजदा) करो. किन्तु अजाजीलने उस आदेशका उल्लंघन किया. इस अवज्ञासे आदमको जो श्राप मिला, आज संसारके सभी जीव (आदमकी सन्तानें) उसी (श्राप) से प्रभावित हैं.

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान ।
पातसाही इबलीस दिल पर, जो करत है सैतान ॥ २१

कुरानके कथन अनुसार संसारके जीवोंकी वास्तविकता (सच्चाई) यही है. क्योंकि आज सभी जीवोंके हृदय पर दुष्ट मन (इबलीस) ही शासन कर रहा है.

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत ।
ढूंढे दजालको बाहेर, पावें न लिखी इसारत ॥ २२

अपराध तो अजाजीलने किया, किन्तु संसारके जीवोंके हृदयमें दुष्ट मन

(इबलीस) के बैठनेसे उन सभीको भी धिक्कार मिला. इसलिए संसारके लोग मन पर बैठे हुए इस शत्रु (दज्जाल) को न पहचान कर इसे बाहर ढूँढते हैं. इस प्रकार कतेबमें लिखे हुए सङ्केतोंको वे समझ नहीं पाते.

इबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर ।
ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर ॥ २३

कुरानमें लिखा है कि आदमकी सन्तानके हृदय पर मन (इबलीस) शासन करता है. इतना स्पष्ट लिखने पर भी लोग नहीं समझते, क्योंकि वे आत्म-दृष्टिसे देखते ही नहीं हैं.

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील ।
राह मारत सब दुनी दिलों, इबलीस इनों वकील ॥ २४

कुरानके अनुसार चौदह लोकोंके सिंहासन स्वरूप वैकुण्ठ (मलकूत) में अजाजील फरिश्ता बैठा है. संसारके लोगोंके हृदयमें बैठकर इनका वकील मन (इबलीस) परब्रह्म प्राप्तिके मार्गमें बाधा पहुँचाता है.

बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक ।
दे कुलफ आडे ईमान के, किए सब हवा के तालुक ॥ २५

यह अजाजील अपने सिर पर निराकारका परदा डाल कर स्वयं महान बना हुआ बैठा है. इसीने संसारके जीवोंके विश्वास पर ताला लगा दिया और सबको शून्य-निराकारके अधीन कर दिया.

तोड हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार ।
हवा तरक कर लेवें तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार ॥ २६

जो आत्मा अपने दृढ़ विश्वाससे शून्य निराकार (हव्वा) रूपी तालेको तोड़कर आगे बढ़ती है वही श्रेष्ठ शिरोमणि कहलाती है. वह शून्य-निराकारको त्यागकर अद्वैतका मार्ग ग्रहण करती है, उसकी यह शक्ति एवं विलक्षणता ही उसे श्रेष्ठ सिद्ध करती है.

पूजे हवा कौल तोड के, ए फौज सबे इबलीस ।
लेने बुजरकी जुदे पडे, कर एक दूजे की रीस ॥ २७

रसूल मुहम्मदकी आज्ञाका उल्लंघन कर शून्य-निराकारकी पूजा करने वालोंको

कुरानमें इबलीसकी सेना कहा गया है. वे लोग रसूल मुहम्मदके पश्चात् अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिए एक-दूसरेसे विरोध कर अलग-अलग सम्प्रदायों (फिरकों) में बँट गए.

सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पडे ।
त्यों कौल तोड महंमद के, एक दीन पर रहे ना खडे ॥ २८

कुरानके आठवें सिपारेमें लिखा है कि यहूदी और ईसाई (नसारे) अलग-अलग हो गए. इसी प्रकार मुहम्मदके अनुयायी भी उनके वचनोंका उल्लंघनकर एक धर्म पर नहीं रह सके.

कह्या अरस दिल महंमद का, ए पूजत सब पथर ।
माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर ॥ २९

रसूल मुहम्मदने कहा था कि यह हृदय ही परमात्माका घर है किन्तु उनके अनुयायी पत्थरको खुदा मानकर पूजने लगे. कुरानके अर्थ रहस्यमय हैं किन्तु ये लोग बाह्यदृष्टिसे उसका मात्र शब्दार्थ ही ग्रहण करते हैं.

लोक लानत जाने इबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह ।
लोक ढूंढे बाहेर दजाल को, इन किए ताबें अपनी राह ॥ ३०

वे लोग इतना ही जानते हैं कि इबलीसको ही धिक्कार मिला है परन्तु वह तो सबके हृदय पर शासन कर रहा है. वे इस दुष्टको बाहर ढूँढते हैं, किन्तु यह तो सबको अपने अधीन कर इन्हें कुटिल मार्ग पर चला रहा है (सबको पथभ्रष्ट कर रहा है).

यकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत ।
तो यकीन उठा सबन से, जो आए पोहोंची सरत ॥ ३१

जब कभी आपत्ति आती है उस समय प्रवाहमें बहनेवाले लोगोंका विश्वास विचलित हो जाता है. इसलिए जब आत्म-जागृतिका समय निश्चित आ गया तब सबके हृदयसे विश्वास उठ गया.

तो जोरा किया दजाल ने, देखो आए नामे वसीयत ।
लिखाए महंमद मेहेदिएं, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत ॥ ३२

इस प्रकार जब दुष्ट कलियुगका अत्याचार बढ़ने लगा तब मक्कासे चार

वसीयतनामे (अधिकार पत्र) आ गए. वस्तुतः ये अन्तिम समयके धर्मगुरु (मुहम्मद महदी) निजानन्द स्वामीकी प्रेरणासे ही लिखे गए थे, तथापि कयामत (आत्म-जागृति) के इस निश्चित समयको बाह्यदृष्टि वाले (औरङ्गजेब बादशाह जैसे) लोग समझ न सके.

दिल मोमिन अरस कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान ।
ए जाहेर इन विध लिख्या, आरफ क्यों न करें बयान ॥ ३३

ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा है और सांसारिक लोगोंके हृदयको शैतानका घर कहा है. कुरानमें यह स्पष्ट लिखा हुआ है, तथापि विद्वान (आरिफ) इसका ऐसा वर्णन क्यों नहीं करते ?

जो कोई दुनियां कुंन से, आए ना सके माहें अरस ।
जो रूहें फिरस्ते उतरे, सोई अरसों के वारस ॥ ३४

परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन) इस प्रकार कहनेसे जिन सांसारिक जीवोंकी उत्पत्ति हुई है वे परमधाममें पहुँच नहीं सकते. जो परमधामसे ब्रह्मात्माएँ और अक्षरधामसे ईश्वरी सृष्टि अवतरित हुईं हैं वे ही क्रमशः परमधाम एवं अक्षरधामके अधिकारी हैं.

रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदाई चलन ।
दुनियां राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमन ॥ ३५

आत्माएँ तो इस नश्वर संसारमें भिन्न-भिन्न धामोंसे आईं हैं और उनका व्यवहार भी संसारके जीवोंसे भिन्न है. इसलिए संसारके जीव उस मार्गको कैसे ग्रहण कर सकते. जिस पर ब्रह्मात्माएँ सहज ही समर्पित हो जाती हैं.

मोमिन रूहें करें कुरबानियां, और मता वजूद समेत ।
छोड दुनी इसक लेवहीं, दिल अरस हुआ इन हेत ॥ ३६

ब्रह्मात्माएँ परमात्माके नाम पर अपने तन, मन, धन सहित समर्पित हो जाती हैं. वे इस मायाको छोड़कर परमात्माके प्रेमको ग्रहण करती हैं, इसी हेतु इनका हृदय परमात्माका धाम बन गया.

अरस कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर ।
आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर ॥ ३७

ब्रह्मआत्माओंके हृदयको परमधाम कहा है. संसारके लोग इतना भी विचार नहीं करते कि जो ब्रह्मात्माएँ संसारमें आकर नश्वर मानव तन धारण कर रही हैं, उनका हृदय कैसे इतना प्रकाशित हुआ ?

दुनी दिल पर इबलीस, दिल मोमिन अरस हक ।
कुरान कौल तो ना बिचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक ॥ ३८

सांसारिक लोगोंके हृदय पर शैतान बसा हुआ है और ब्रह्ममुनियोंके हृदयमें परमात्माकी बैठक है. इसीलिए ये लोग कुरानमें लिखे हुए इन वचनों पर विचार ही नहीं करते. क्योंकि इनमें लेशमात्र भी आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है.

ए देखें दिल अरस मोमिन, अरस हक बिना होए क्यों कर ।
एह बिचार तो ना करें, जो कुलफ कहे दिलों पर ॥ ३९

कुरानके जानकार विद्वान भी कुरानके इस प्रसङ्गको देखते हैं कि ब्रह्मात्माओंका हृदय परमधाम है. वस्तुतः परमात्माके आए बिना ब्रह्मात्माओंने धारण किए हुए इस नश्वर तनका हृदय कैसे परमधाम हो सकता है ? ये लोग कुरानके इस रहस्य पर इसीलिए विचार नहीं कर सकते, क्योंकि इनके हृदय पर ताला लगा हुआ है.

बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अरस में तन ।
यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अरस दिल मोमन ॥ ४०

कुरानमें यह भी लिखा है कि ब्रह्ममुनियोंका चिन्मय शरीर (परआत्मा) परमधाममें है. इस प्रकार परमात्माने अपने वचनोंमें स्पष्ट कहा है कि मैं ब्रह्मात्माओंके हृदयको अपना धाम बनाकर बैठा हूँ.

पथर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ ।
कह्या दरिया हैवान का, समझ ना करे एक हरफ ॥ ४१

सांसारिक लोग पत्थर, पानी और आग (आदि जड़ पदार्थों) को पूजते हैं

उनमें-से किसीने भी परमात्माकी दिशाको नहीं जाना. इसलिए कुरानमें संसारको पशु वृत्तिवालोंका समुद्र कहा गया है क्योंकि संसारके जीव कुरानके गूढ़ रहस्योंके एक शब्दको भी समझनेका प्रयत्न नहीं करते.

होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक ।
कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियां अपनी मत माफक ॥ ४२

यदि अखण्ड परमधामका एक कण भी इस नश्वर जगतमें आ जाए तो चौदह लोकोंमें उसकी पूजा होती. कुरान स्पष्ट कहता है कि ब्रह्मात्माएँ अखण्ड परमधामसे अवतरित हुई हैं किन्तु सांसारिक लोग इनको पहचाने बिना ही अपनी बुद्धिके अनुसार चलते हैं.

इत सहूर दुनी का ना चले, सुरैया छोडे ना इनों अकल ।
सरभर करे मोमिन की, जिनकी अरस असल ॥ ४३

इस विषयमें संसारके जीवोंका समझ काम नहीं करता, क्योंकि इनकी बुद्धि ज्योतिस्वरूपको छोड़कर आगे नहीं जा सकती. इसलिए ये लोग उन ब्रह्मात्माओंको भी अपने समान मानते हैं, जिनका मूल घर परमधाम है.

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ ।
डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुनत जमात ॥ ४४

ये लोग रसूल मुहम्मदके अनुयायी तो कहलाते हैं किन्तु उनके सिद्धान्तानुसार नहीं चलते और धर्ममें फूट डालकर दावा करते हैं कि हम ही सुन्नी समुदायके हैं.

पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहंमद सिरदार ।
जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार ॥ ४५

इन लोगोंको उन ब्रह्ममुनियोंकी पहचान ही नहीं है जिनमें श्रीकृष्णको हृदयमें धारण किए हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (श्रीश्यामाजीके अवतार स्वरूप) शिरोमणि हैं. वस्तुतः ये बारह हजार ब्रह्मसृष्टि अखण्ड परमधामकी कहलातीं हैं.

ढूंढ पाए ना पकडे मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर ।
जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर ॥ ४६

संसारके लोग भी अपनी बुद्धिके अनुसार खोज तो करते हैं किन्तु वे अभी तक ब्रह्मात्माओंके चरणोंको पकड़ नहीं पाए हैं. क्योंकि यह समझ पूर्णब्रह्म परमात्माके अधीन है. जब परमात्मा उन पर कृपा करेंगे तब उनके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश फैल जाएगा.

दिल मोमन अरस कह्या, बडा बेवरा किया इत ।
दुनी दिल पर इबलीस, यों कहे कुरान हजरत ॥ ४७

ब्रह्मप्रियाओंके हृदयको परमधाम कहा है कुरानमें उनकी महिमाका वर्णन विस्तारपूर्वक हुआ है. इसी प्रकार हजरत मुहम्मदने कुरानमें यह भी कहा है कि संसारके लोगोंके हृदयमें दुष्ट इबलीसकी बैठक है.

दुनी न छोडे तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी ।
दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी ॥ ४८

क्योंकि सांसारिक जीव उस मायाको त्याग नहीं सकते जिसे ब्रह्मात्माओंने असत्य समझकर छोड़ दिया है. दुनियाँ निराकार (हव्वा) को ही ब्रह्म मानती हैं किन्तु ब्रह्ममुनियोंने तो पर-ब्रह्मके स्वरूपको हृदयमें धारण किया है.

राह दोऊ जुदी परी, दोऊ एक होवें क्यों कर ।
तरक करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर ॥ ४९

इस प्रकार सांसारिक जीव और ब्रह्मात्माओंके मार्ग अलग-अलग हो गए. ये दोनों एक कैसे हो सकते हैं ? जिस मायाको ब्रह्मात्माओंने असत्य मानकर त्याग दिया उसीको सांसारिक जीवोंने अपना घर मान लिया है.

मोमिन उतरे अरस से, सो अरस बिलंदी नूर ।
ए जो रूहें कही दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर ॥ ५०

ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुईं हैं, वह सर्वोच्च परमधाम प्रकाशमय है. इन परमधामकी आत्माओंका अद्वैत सम्बन्ध (अङ्कुर) पूर्णब्रह्म परमात्माके साथ है.

रूहें अरस अजीम की, जाकी हक हादीसों निसबत ।
ए हंमेसा बीच अरस के, हक जात वाहेदत ॥ ५१

अखण्ड परमधामकी आत्माओंका सम्बन्ध श्रीराजजी तथा श्यामाजीके साथ है. ये आत्माएँ सर्वदा परमधाममें रहती हैं इसलिए परमात्माकी अङ्गस्वरूपा होते हुए भी अद्वैत हैं.

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन ।
बडी दरगाह अरस अजीम की, जित असल रूहों के तन ॥ ५२

इन ब्रह्मात्माओंने अपने घरमें ही बैठकर तीन बार मायाका खेल देखा. वस्तुतः सर्वोत्तम परमधाम ही इनका घर है जहाँ इनके मूल चिन्मय स्वरूप (पर आत्मा) विद्यमान हैं.

ए हुकमें कजा करी, अवल से आखर ।
हक अरस मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर ॥ ५३

परमात्माके आदेशने ही यह निर्णय कर दिया कि ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुईं हैं और अन्तमें परमधाममें ही जाग्रत होंगी. वस्तुतः ब्रह्मात्माओंकी सम्पत्ति ही परमधाम है. यद्यपि विभिन्न सम्प्रदायों (फिरकों) के अनुयायियोंने इस पर अपना अधिकार जताना चाहा.

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन ।
वह दुनियां को छोडे नहीं, जो मुरदार करी मोमिन ॥ ५४

सांसारिक जीव यह भी नहीं देखते कि उनका अपना आचरण किस प्रकारका है. वे मायाको ही नहीं छोड़ सकते, जिसको ब्रह्मात्माओंने तुच्छ माना है.

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन ।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अरस दिन ॥ ५५

संसारके सभी लोगोंने ब्रह्मात्माओंके धन 'परमधाम' का दावा किया. परन्तु अखण्ड परमधामके दिव्य प्रकाश स्वरूप तारतम ज्ञानके उदय होने पर वे सभी जादूगरके खेलके कबूतरकी भाँति उड़ गए.

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान ।
दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान ॥ ५६

इस झूठे संसारके सभी जीवोंको यही दोष लगा (वे अपराधी बने) कि उन्होंने अखण्ड परमधामका दावा किया. वास्तविकताकी पहचान होने पर उन्हें अवश्य पश्चात्ताप होगा.

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन ।
ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन ॥ ५७

इनमें-से किसीको भी अभी तक इस तथ्यका ज्ञान नहीं हुआ, परन्तु यह ज्ञान प्रकाशित होने पर ये सब लोग रोएँगे. अखण्ड तारतम ज्ञानरूपी सूर्यके प्रकट होने पर ये सारी बातें स्पष्ट हो जाएँगी.

रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत ।
ए जाने अरस अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत ॥ ५८

परमधामकी आत्माएँ पूर्णब्रह्मकी अङ्गस्वरूपा होनेसे अद्वैत हैं. इस रहस्यको ब्रह्मात्माएँ ही जानती हैं जिनका सम्बन्ध श्रीराजजीसे है.

और गिरो फिरस्तन की, जिन का कायम वतन ।
दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरोह इन ॥ ५९

दूसरा समुदाय ईश्वरी सृष्टिका है, उनका घर अक्षरधाम है. इन ब्रह्मात्माओं एवं ईश्वरीसृष्टिके प्रतापसे सांसारिक जीवोंको भी अखण्ड मुक्ति मिलेगी.

और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल ।
तो दावा किया मोमिनों का, जो दुसमन इबलीस असल ॥ ६०

संसारके अन्य जीव 'कुन्न' (हो जा) कहनेसे उत्पन्न हुए हैं उनको आदमके वंशज माना गया है. ऐसे जीवोंने ब्रह्मात्माओंकी सम्पदा पर अपना अधिकार इसलिए जताया कि उन्होंने अपने शत्रु इबलीसको अपने हृदय पर बैठाया है.

ए लिख्या सिपारे चौद में, गिरो भांत है तीन ।
महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा यकीन ॥ ६१

इस प्रकार कुरानके चौदहवें अध्याय (सिपारे) में तीन प्रकारकी आत्माओंका

वर्णन है. अन्तिम मुहम्मद (मुझ) को सद्गुरुने ऐसा आदेश दिया कि इन तीनों समुदायको उसी प्रकार समझाओ जिनका जिस प्रकारका विश्वास है.

किया तीनों गीरों का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत ।
हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों की हिदायत ॥ ६२

इस प्रकार कुरानमें तीनों समुदायका विवरण कह कर उनको कर्म, उपासना एवं ज्ञानमार्गके आधार पर उपदेश देनेके लिए अन्तिम मुहम्मदको आदेश हुआ है.

हकीकत सों समझावना, समझें इसारतसों मोमन ।
हक सूरत द्रढ कर दई, तब दिल अरस हुआ वतन ॥ ६३

यह भी कहा है कि ब्रह्मात्माओंको यथार्थ ज्ञानके द्वारा समझाना, वे सङ्केत मात्रसे ही समझ जाएँगी. उन ब्रह्मात्माओंने जब परब्रह्म परमात्माके स्वरूपको अपने हृदयमें दृढ़ कर लिया तभी उनका हृदय परमधाम कहलाया.

और राह जो तरीकत, गिरो फिरस्तों बंदगी कही ।
सो समझेंगे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत सही ॥ ६४

वहाँ पर दूसरा जो उपासना (तरीकत) का मार्ग कहा गया है वह ईश्वरीसृष्टि (फरिश्तों) की उपासना (बन्दगी) का मार्ग है. वे मधुर वाणीसे समझ जाएँगी एवं समझकर ही अक्षरधाम पहुँच जाएँगी.

तीसरी गिरो सरियत से, जो करसी जेहेल जिदाल ।
सो समझेंगे जिदैसों, क्या करें पडे बंध दजाल ॥ ६५

तीसरा समुदाय सांसारिक जीवोंका है, वे कर्मकाण्डका अनुसरण करते हुए निरर्थक हठ करते हैं. ऐसे लोग हठपूर्वक कहनेसे ही समझेंगे क्योंकि वे लोग दज्जाल (शैतान) के बन्धनमें फँसे हुए हैं.

ए पढे सब जानत हैं, दिल पर दुसमन पातसाह ।
ले लानत बैठा दिल पर, ए इबलीस मारत राह ॥ ६६

कुरानको पढ़नेवाले ये लोग भी यह सब भली प्रकार जानते हैं किन्तु उनके

हृदयमें भी दुष्ट इबलीस बैठकर शासन कर रहा है. यह दुष्ट धिक्कारका पात्र होकर उनके हृदयमें बैठा है और सबके मार्गको अवरुद्ध कर रहा है.

कुरान पढें चलें सरियत, करें दावा मोमिनों राह ।
पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा ॥ ६७

इसलिए ये लोग कुरान पढ़कर भी कर्मकाण्डका मार्ग ग्रहण करते हैं और ब्रह्मसृष्टिके मार्गका दावा करते हैं. किन्तु क्या करें, तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीके बिना ये लोग गूढ़ रहस्यका स्पष्टीकरण नहीं कर सकते.

मोमिन दुनी ए तफावत, ज्यों खेल और देखनहार ।
मोमिन मता हक वाहेदत, दुनियां मता मुरदार ॥ ६८

ब्रह्मसृष्टि और सांसारिक जीवोंमें यही अन्तर है, जैसे खेलके पात्र और दर्शकमें होता है. ब्रह्ममुनियोंका धन अद्वैत पूर्णब्रह्म परमात्मा है तथा सांसारिक जीवोंका धन नश्वर संसार है.

सबों दावा किया अरस का, हिंदू या मुसलमान ।
वेद कतेब दोऊ पढे, पडी न काहूं पेहेचान ॥ ६९

हिन्दू अथवा मुसलमान सभीने परमधामका दावा किया है. दोनों ही वेद तथा कतेबका अध्ययन करते हैं परन्तु किसीको भी वास्तविक रहस्य (परमधाम) की पहचान नहीं हुई.

कह्या दावा सब का तोड्या, दिया मता मोमिनों कों ।
लिए अरस वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों ॥ ७०

सद्गुरुने मेरे हृदयमें बैठकर तारतम ज्ञानके द्वारा सबका दावा निरस्त करते हुए ब्रह्मात्माओंको अखण्ड धन दिया और उनको अद्वैत परमधाममें ले लिया. उनके अतिरिक्त परमधाममें कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता.

सिपारे सताइस में, लिखे दुनी के सुकन ।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद आब बिन ॥ ७१

कुरानके सत्ताइसवें सिपारे (अध्याय) में सांसारिक जीवोंकी बातें लिखी हुई

हैं. एक अद्वैत परमात्माके प्रेमरूपी जलके बिना ये लोग किसी भी प्रकारसे पवित्र नहीं हो सकेंगे.

मोकों पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फुरमान ।
करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकडो कुरान ॥ ७२

कुरानने यह भी कहा है, ''पवित्र हुए बिना मुझे स्पर्श मत करो. अद्वैत (ब्रह्मज्ञान रूपी) जलमें स्नान कर पवित्र होकर ही मुझे स्पर्श करना.''

सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत ।
सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपें मुसाफ मारफत ॥ ७३

ब्रह्मात्माएँ ही ऐसी पवित्र आत्माएँ कही गईं हैं, उनको ही अद्वैत परब्रह्म परमात्माकी सहायता प्राप्त है. ये पवित्र आत्माएँ ही संसारको पीठ दे सकेंगी जिनके पास कुरानकी पूर्ण पहचान है.

सो सरियत को है नहीं, ए तो खडे जाहेरी ऊपर ।
एक हादी के लड जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहतर ॥ ७४

यह पहचान कर्मकाण्डके मार्गमें चलनेवाले लोगोंके पास नहीं है क्योंकि ये लोग तो बाह्य अर्थको लेकर ही खड़े हैं. एक ही गुरु (मुहम्मद) के अनुयायी होने पर भी ये लोग परस्पर वाद-विवाद कर अलग हुए हैं तथा ये ही नरककी आगमें जलनेवाले बहत्तर फिरके कहलाते हैं.

लिख्या कुरान का माजजा, और नबीकी नबुवत ।
एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित ॥ ७५

कुरानमें इस प्रकार लिखा है कि कुरानका रहस्यपूर्ण चमत्कार और पैगम्बरकी पैगम्बरी ये दोनों तभी सत्य सिद्ध होंगे, जब संसारमें एक सत्यधर्म स्थापित होगा.

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत ।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुसमन राह मारत ॥ ७६

रसूल मुहम्मद तो सबको एक सूत्रमें पिरोना चाहते थे, परन्तु उनके अनुयायी परस्पर मतभेद उत्पन्न कर अलग-अलग हो रहे हैं. ये सभी अभिमानके

कारण पृथक् हुए हैं क्योंकि शत्रु बनकर इनके हृदयमें बैठा हुआ इबलीस ही इनके मार्गको रोक रहा है.

एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखी हक हिदायत ।
एक दीन किया चाहे, एही मोमिनों वाहेदत ॥ ७७

इनके अतिरिक्त निष्ठावान लोगोंका एक समुदाय नाजी फिरका कहलाया जिनको पूर्णब्रह्म परमात्माका निर्देश प्राप्त है. ये ही अद्वैत धामकी ब्रह्मसृष्टि हैं जो एक सत्य धर्म स्थापित करना चाहतीं हैं.

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत ।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत ॥ ७८

बशरी (मानवी), मलकी (तारतम ज्ञानरूपी सम्पदावाले) एवं हकी (परमात्माका आवेश धारण किए हुए) ये तीनों ही परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजीके स्वरूप हैं. वे जिनकी अनुशंसा (सिफारिश) करेंगे उन सभी ब्रह्मात्माओंको परमात्माके दर्शन होंगे.

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन ।
हक सूरत द्रढ कर दई, देसी सबों यकीन ॥ ७९

यही स्वरूप दुनियाँको अखण्ड परमधामका दर्शन कराकर एक धर्मकी स्थापना करेंगे. सभीके हृदयमें पूर्णब्रह्मका स्वरूप दृढ़ करवाकर सभीको एक परमात्माके प्रति विश्वास दिलाएँगे.

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेहेदी महंमद ।
पकडें एक वाहेदत को, और करें सब रद ॥ ८०

ब्रह्ममुनि हौज कौसरमें स्नान करते हैं, इनके साथ ईसा, महदी तथा मुहम्मद हैं, इन्होंने एक ही अद्वैत ब्रह्मको अपने हृदयमें धारण कर शेष सभीको निरस्त कर दिया है.

हक बतावत जाहेर, मेरे खूबोंमें महंमद खूब ।
सो मोमिन छोडें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब ॥ ८१

कुरानके अन्तर्गत परमात्माने स्पष्ट कहा है कि मेरी प्रिय आत्माओंमें प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजी अति प्रिय हैं. उन श्यामाजीके चरणकमलोंको ब्रह्मात्माएँ कैसे छोड़ेंगी जिनको स्वयं परब्रह्मने अपनी प्रियतमा कहा है.

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन माहें खिलवत ।
उतरी अरवाहें अरस से, तो भी पढे न पावें वाहेदत ॥ ८२

सांसारिक जीव प्रेमी आत्माओं (आशिक) और प्रियतम परमात्मा (मासूक) दोनोंको अलग-अलग समझते हैं किन्तु परमधाममें ब्रह्मप्रियाएँ तथा श्रीराजजी अद्वैत स्वरूपमें हैं. ब्रह्मात्माएँ उसी परमधामसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं, तथापि कुरानका अध्ययन करनेवाले इस अद्वैत भावको नहीं समझते.

महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अरस दिल मोमन ।
सो अरस दिल दुनी छोड के, पूजे हवा उजाड जो सुन ॥ ८३

रसूल मुहम्मदने परमात्माका स्वरूप बताया है और उनका धाम ब्रह्म आत्माओंका हृदय बताया है. ऐसी (धामहृदया) ब्रह्म आत्माओंको छोड़कर संसारी जीव उजाड़ शून्य-निराकारकी पूजा करते हैं.

इबलीस कह्या दुनी दुसमन, तो किया मोमिनों मता का दावा ।
सो समझे ना इसारतें, जिन ताले इबलीस हवा ॥ ८४

सांसारिक जीवोंके हृदयमें शत्रु बनकर इबलीस बैठा हुआ है. इसलिए वे ब्रह्मात्माओंकी अखण्ड सम्पदा पर अपना अधिकार जताते हैं. वे कुरानकी साङ्केतिक बातोंको भी नहीं समझते क्योंकि उनके भाग्यमें ही इबलीस और हव्वा हैं.

जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल ।
रूहें साफ रहें आठों जाम, और इबलीस दुनी दिल ॥ ८५

श्रीराजजीने जोशरूप जिब्रील फरिश्ताको अपनी ब्रह्मात्माओंके लिए भेजा है

क्योंकि ब्रह्मात्माएँ आठों प्रहर पवित्र रहतीं हैं, सांसारिक लोगोंके हृदय पर तो तमोगुणी इबलीसकी बैठक हैं.

अरस से आया असराफील, दिया कै विध सूर बजाए ।
सो सोर पड्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए ॥ ८६

इस्राफिल फरिश्ता अखण्ड धामसे अवतरित हुआ और उसने विविध रूपसे अखण्ड ज्ञानका सूर फूँका. उसकी ध्वनि ब्रह्माण्डमें चारों ओर फैल गई. इस प्रकार परमात्माने न्यायमूर्ति (काजी) के रूपमें प्रकट होकर सभी जीवोंको पवित्र करते हुए न्याय दिया.

तो अरस कह्या दिल मोमिन, पाया अरस खिताब ।
इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब ॥ ८७

ब्रह्मसृष्टिके हृदयको इसलिए परमधाम कहा है क्योंकि उनको ही परमधामके होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है. इन्हींके बीच पैगम्बरोंका समुदाय समाहित हुआ है और कुरानके अनुसार परमात्माने भी इन्हींके साथ आकर न्याय किया.

फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम ।
खुली हकीकत हुकमे, इसारतें रमूजें खसम ॥ ८८

कुरानके रहस्योंको स्पष्ट करनेका आदेश अन्तिम धर्मगुरु (इमाम) को प्राप्त हुआ, इसके लिए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी ले आए हैं. अब परमात्माकी आज्ञासे ही कुरान एवं पुराणकी साङ्केतिक बात तथा परमधामकी प्रेमवार्ताका रहस्य स्पष्ट होगा.

जो लिख्या जिन ताले मिने, माहें हक फुरमान ।
रूहें फिरस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान ॥ ८९

परमात्माके आदेश अनुसार जिसके भाग्यमें जैसा लिखा था, उसे वही प्राप्त हुआ. ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि इन तीनोंकी उत्पत्ति स्पष्ट हो गई.

बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अरस हक ।
हक अरस में सब कह्या, दुनियां नहीं रंचक ॥ ९०

कुरानकी पूर्वोक्त बातोंका निरूपण हो जानेसे नश्वर संसार तथा परब्रह्मका

अखण्ड धाम स्पष्ट हो गए. अखण्ड धामकी सभी सम्पदाएँ अलौकिक हैं जबकि संसार नाशवान होनेसे उसकी तुलनामें अस्तित्व हीन (कुछ भी नहीं) है.

और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमन ।
दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अरस तन ॥ ९१

सांसारिक जीव तथा ब्रह्म आत्माओंका विवरण और भी स्पष्ट हो गया है. संसारके जीवोंकी उत्पत्ति शून्य-निराकारसे है तथा ब्रह्म आत्माओंका मूल तन (पर-आत्मा) परमधाममें है.

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने ।
ऐसे कै पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में ॥ ९२

चौदह लोकोंके जीव परमात्माके खिलौनेके समान हैं. ऐसे ब्रह्माण्ड अनेक बार उत्पन्न होते हैं किन्तु इनमेंसे कोई भी अखण्ड नहीं है.

सांच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए ।
हक मोमिन बिना दुनियां, बैठी कुफर खेल बनाए ॥ ९३

सत्य परमधाम और मिथ्या संसार दोनोंकी भिन्नता स्पष्ट कर दी गई. श्रीराजजी और ब्रह्मआत्माओंकी पहचानके बिना संसारके जीव इस स्वप्नका खेल खेल रहे हैं.

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन ।
खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमन ॥ ९४

कुरानके रहस्य स्पष्ट होने पर सभी बातोंका स्पष्टीकरण हो गया. अक्षरद्वारा रचित इस ब्रह्माण्डकी नश्वरता एवं अखण्ड परमधामसे ब्रह्ममुनियोंके प्राकट्यका रहस्य भी स्पष्ट हो गया.

दुनियां दिल पर इबलीस, तो राह पुल सरात कही ।
वजूद न छोडे जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई ॥ ९५

सांसारिक जीवोंके हृदयमें तमोगुणी इबलीस बैठा हुआ है इसलिए उनका धर्म मार्ग पर चलना तलवारके धार (पुलसिरात) पर चलनेके समान कहा

गया है. ऐसे बाह्य दृष्टिवाले लोग नश्वर पदार्थों (तन) का मोह नहीं छोड़ते इसलिए उनके लिए दस प्रकारके नरक (दोजख) बतलाए गए हैं.

[कुरानमें वर्णित दस प्रकारके नरक(दोजख)- १. अविश्वासीलोग बन्दरके मुखवाले होंगे. २. हरामखोर सुअर बनेंगे. ३. बूरे कर्म करनेवाले गधे बनेंगे. ४. सूद खानेवाले अन्धे होंगे. ५. पुकार न सुननेवाले बहरे होंगे. ६. अत्याचारका आदेश देनेवाले गूँगे होंगे. ७. मिथ्याको सत्य कहनेवाले पठितोंकी जिह्वा काटी जाएगी और उससे रक्त और पीब बहेगा. ८. दूसरोंको रञ्ज पहुँचानेवाले सूली पर चढ़ाए जाएँगे. ९. चुगलखोरके हाथ-पाँव कटेंगे. १०. कठोर हृदय वालोंको आघात पहुँचाया जाएगा.]

भिस्त दई तिन को, जो हुते दुसमन ।
सबों लई थी हुजत, हम वारसी ले मोमन ॥ ९६

ब्रह्मात्माओंने उन जीवोंको भी मुक्तिस्थान (बहिश्त) का सुख दिया जो उनके साथ शत्रुता रखते थे. इन सभी जीवोंने यह दावा किया था कि हम ही ब्रह्ममुनि हैं और परमधामकी सम्पदाके अधिकारी भी हम ही हैं.

मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त ।
बीज बुता कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत ॥ ९७

अब तो संसारके जीवों पर अति कृपा हो गई क्योंकि उन्होंने आठों मुक्तिस्थानोंका सुख प्राप्त किया. उनके पास अङ्कुर (बीज) या क्षमता कुछ भी नहीं था तथापि परमात्माके आदेशने उनका भाग्य खोल दिया.

मेहेर करी बडी महंमदें, आठों भिस्तों पर ।
दोऊ गिरो दोऊ अरसों, पोहोंचे रूहें फिरस्ते यों कर ॥ ९८

जीवोंको आठों मुक्तिस्थानोंका सुख प्रदान कर अन्तिम मुहम्मदने उन पर बड़ा अनुग्रह किया. इस प्रकार ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि (दोनों समुदाय) क्रमशः परमधाम तथा अक्षरधाम (दोनों धाम) पहुँच गईं.

कोई आए न सके अरस में, जाकी नसल आदम निदान ।
दै हैयाती सबन को, मेहेर कर सुभान ॥ ९९

निश्चय ही आदमकी सन्तानमें-से कोई भी अखण्ड स्थानमें प्रवेश नहीं कर

सकता. धामधनीने ही कृपा कर (मुझसे) उन सभीको अखण्ड मुक्ति प्रदान करवाई.

करें हिंदू लडाई मुझसे, दूजे सरियत मुसलमान।
पाया अहंमद मासूक हक का, अब छोडों नहीं फुरकान ॥ १००

कितने ही कर्मकाण्डी हिन्दू तथा शरीयत पर चलनेवाले मुसलमान मुझसे झगड़ते हैं. किन्तु मैंने परमात्माकी प्रियतमा श्यामास्वरूप सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीका तारतम बल प्राप्त किया. इसलिए अब मैं कुरानके गूढ़ रहस्यको स्पष्ट करना नहीं छोडूँगा.

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ से लागी जंग ।
हुकम लिया सिर यकीन, छोड दुनी का संग ॥ १०१

ऐसे समयमें महाराजा छत्रसाल अग्रसर हुए जब दोनों (हिन्दू और मुसलमानों) से संघर्ष छिड़ा हुआ था. उन्होंने सांसारिक आसक्तिको छोड़कर मेरा आदेश विश्वास पूर्वक शिरोधार्य किया.

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम ।
दिया महंमद मेहेदीने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम ॥ १०२

सभी सन्देहोंको मिटाने वाले ब्रह्मज्ञान-तारतमज्ञानके द्वारा इस प्रकार सद्गुरुने (मेरे हृदयमें बैठकर) कुरानके रहस्योंका स्पष्टीकरण करवाया तथा ब्रह्मात्माओंकी जागनीका सम्पूर्ण दायित्व मुझे सौंप दिया.

प्रकरण १ चौपाई १०२

खुलासा गिरो दीन का (धर्मनिष्ठ समुदायका स्पष्टीकरण)

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान ।
हक हादी गिरोह अरस की, सक भांन कराऊं पेहेचान ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! कुरानके अन्तर्गत जिन ब्रह्मात्माओं तथा सत्यधर्मका विवरण दिया है, मैं उसीका यहाँ स्पष्टीकरण कर रहा हूँ. अब मैं सभी संशयोंको दूर कर श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मसृष्टिकी पहचान कराता हूँ.

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत ।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत ॥ २

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज परमात्माके स्वरूपके साक्षी हैं और ब्रह्मात्माएँ उसे ग्रहण करनेवाली हैं. वे ही ब्रह्मात्माएँ ब्रह्मधाम (मूलमिलावे) को जानती हैं और आत्म-जागृति (कयामत) के दिनकी लीला भी जानती हैं.

हक बकामें जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से ।
खेल में आए तो भी अरस दिल, ए लिख्या फुरमान में ॥ ३

शाश्वत परमधामका वैभव ब्रह्मात्माओंसे छिपा नहीं है. मायाके झूठे खेलमें आनेपर भी उनके हृदयको कुरानमें परमधाम कहकर उल्लेख किया है.

लिख्या नामें म्याराज में, हरफ नबे हजार ।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार ॥ ४

म्याराजनामा किताबमें नब्बे हजार शब्दोंका वर्णन मिलता है. उनमें-से तीस-तीस हजार शब्द तीनों स्वरूपों (बशरी, मलकी और हकी) पर बाँट दिए तथा उन्हींको खोलनेका अलग-अलग अधिकार भी दिया है.

एक जाहेर किए बसरिएं, दूजे रखे मलकी पर ।
तीसरे सूरत हकीय पें, सो गुझ खोल करसी फजर ॥ ५

एक बशरी स्वरूप (रसूल मुहम्मद) ने तीस हजार शब्दोंसे शरीयतके मार्गको प्रकट किया. दूसरे मलकी स्वरूप (श्रीदेवचन्द्रजी) पर यथार्थ ज्ञान प्रकट करनेका दायित्व सौंपा गया. तीसरे हकी स्वरूप (मुझ) पर यह दायित्व सौंपा कि वे इस यथार्थ ज्ञानसे सभी धर्मग्रन्थोंका गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर ज्ञानका प्रभात करेंगे.

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक ।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नबे हजार बेसक ॥ ६

रसूल मुहम्मदने परमात्माके आदेश (हुक्म) के इन तीनों स्वरूपोंका विवरण देते हुए कहा कि इन तीनों पर परमात्मा श्रीराजजीकी कृपा दृष्टि हुई. इस प्रकार तीनोंका स्पष्टीकरण निःशङ्क रूपसे नब्बे हजार शब्दोंके द्वारा हुआ है.

राह चलाई बसरिएं फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत ।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत ॥ ७

कुरानके अनुसार रसूल मुहम्मदने शरीयतका मार्ग चलाया. दूसरे मलकी स्वरूप श्रीदेवचन्द्रजीको परमधामके द्वार खोलनेकी कुञ्जीरूप तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ. हकी स्वरूप (मुझ) ने तारतम ज्ञानके प्रकाशसे परब्रह्मके स्वरूपकी पूर्ण पहचान करा दी.

ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत ।
मता सब म्याराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत ॥ ८

रसूल मुहम्मदने कुरानमें पहले ही यह बात कही थी कि परब्रह्मकी पहचान आत्म-जागृति (कयामत) के समयमें होगी. इस प्रकार दर्शनकी रात्रि (शबेम्याराज) की बातें और मूलमिलावाकी गूढ़ बातें भी अभी प्रकट कर दी है.

ए जो कागद वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन ।
दुनियां सब तिन पर खडी, ए जो अठारे वरन ॥ ९

इन वेद तथा कतेब ग्रन्थमें परमात्माके आदेशके अतिरिक्त और कुछ नहीं है. संसारके सभी जीव जिनके अन्तर्गत अठारह वर्ण सम्मिलित हैं, वे सभी इन्हीं (वेद-कतेब) ग्रन्थोंके आधार पर टिके हुए हैं. (चौदह विद्या और चार वर्ण इस प्रकार अठारह वर्ण माने गए हैं.)

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान ।
ल्याया पैगंमर आखरी, हक के कौल परवान ॥ १०

कुरानको "परमात्माकी वाणी" कहा गया है, इसलिए यह संसारकी वाणीसे भिन्न है. परमात्मा सम्बन्धी इन यथार्थ वचनोंको अन्तिम पैगम्बर रसूल मुहम्मद ले आए हैं.

कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद ।
फिरवले सबन पर, महंमद के सबद ॥ ११

अब रसूल मुहम्मदकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई, जिसे अधर्मी लोग

अस्वीकार करते थे. इस प्रकार रसूल मुहम्मदके शब्द सर्वत्र फैल गए.

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही क्यामत ।
सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अरस न्यामत ॥ १२

अविश्वासी लोग कुरानमें लिखी गई आत्म-जागृति (कयामत) की वेला पर शङ्का करते थे. अब तो ब्रह्मात्माएँ अवतरित हुई हैं जिनके हृदयमें परमधामकी सम्पदा भरी हुई है. (वे इस पर क्यों शङ्का करेंगी ?)

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद ।
सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड हद ॥ १३

हे सुन्दरसाथजी ! रसूल मुहम्मदके अनुयायी (बन्दे) कहलाने वालोंका विवरण तो देखो. ये कुरानके गूढ़ रहस्य पर विचार भी नहीं करते तथा क्षर ब्रह्माण्ड (हद) को छोड़कर आगे देखते भी नहीं.

ए दुनियां किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद तोफान ।
किन राखी गिरोह कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान ॥ १४

इस संसारके जीवोंको किसने उत्पन्न किया, और व्रजका इन्द्रकोप (हूद तोफान) किसने कराया, किसने गोवरधन पर्वत (कोहतूर) को उठाकर व्रजवासियोंकी रक्षा की ? और अन्य सृष्टिको डुबा दिया.

किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह तोफान।
किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान॥१५

तदुपरान्त पुनः किसने संसारकी सृष्टि की, नूह तूफान (व्रजसे रास जाते समयका प्रलय) किसने कराया, योगमायरूपी नौकामें व्रज गोपिकाओं (खासी गिरोह) को बैठाकर किसने पार उतारा, और अन्य अविश्वासी जनोंको किसने डुबाया ?

तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे ।
हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें ॥ १६

कुरानके अनुसार वसुदेवजी (नूह नबी) के तीन बेटे कहे गए हैं. इनके द्वारा

ही (रासके बाद) तीसरी बार संसारकी यह सृष्टि हुई है. इसी सृष्टिमें रसूल मुहम्मद ब्रह्मप्रियाओंके लिए परमात्माका सन्देश ले आए हैं.

कह्या स्याम बाप उन लोगोंका, रूम फारस आरबन ।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन ॥ १७

रोम (रूम), ईरान (फारस), अरब (आरब) आदि देशोंके संरक्षक (पिता) को कुरानमें श्याम अर्थात् साम कहा है. इसी प्रकार तुर्क स्थानके संरक्षक (पिता) को याफिस तथा भारतीयोंके संरक्षकको हाम कहा गया है.

कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान ।
ना पावें महंमद गिरोह को, जो सौ साल पढे कुरान ॥ १८

आज तक कुरानका गूढ़ार्थ स्पष्ट नहीं हुआ. श्याम (कृष्ण) और रसूल स्वरूपकी पहचान भी किसीको नहीं हुई. परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजी तथा उनके समुदायकी पहचान भी किसीको न हो सकी भले ही वे सौ वर्ष तक कुरान पढ़ते रहे.

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अवल ए आखर ।
बडे काम नजीकी हक के, ए किन किए महंमद बिगर ॥ १९

संसारके लोग मुखसे तो मुहम्मदका नाम लेते हैं और इन्हीं रसूलको प्रारम्भिक (अव्वल) एवं अन्तिम (आखर) पैगम्बर मानते हैं. परन्तु परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार कर ब्रह्मधामके रहस्योंको स्पष्ट करनेका कार्य भी तो मुहम्मदके अतिरिक्त किसने किया है ?

एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊं ।
सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काहूं ॥ २०

रसूल मुहम्मदने कहा कि एक ही पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं किन्तु विभिन्न जाति तथा सम्प्रदाय वाले उनको भिन्न-भिन्न नामसे पूजते हैं. वस्तुतः एक परमात्माके अतिरिक्त इस संसारमें अन्य कोई कहीं भी नहीं है.

ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर माहें जहूदन ।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन ॥ २१

ब्रह्मसृष्टि तथा श्यामस्वरूप मुहम्मद हिन्दुओंके बीच दो बार (व्रज और

रासमें) आए. उन्होंने ब्रह्मात्माओंको अपने संरक्षणमें लिया और नास्तिकोंको डुबा दिया. श्रीकृष्ण (मुहम्मद) के बिना यह काम किसी औरसे नहीं हो सकता.

सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक ।
सबको बंदगी याही की, पीछे लडे बिन पाए विवेक ॥ २२

सभी जातिके लोग एक ही परमात्माको भिन्न-भिन्न नामोंसे पुकारते हैं परन्तु परमात्मा (स्वामी) तो सबका एक ही है. वस्तुतः पूजा भी सभीको इन्हींकी करनी है परन्तु विवेकके अभावसे सभी परस्पर कलह करते हैं.

रूहें अरससे लैलत कदरमें, हक हुकमें उतरे बेर तीन ।
सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन ॥ २३

श्री राजजीके आदेशसे इस महिमामयी ब्रह्मरात्रि (लैलतुलकद्र) में परमधामसे ब्रह्म-आत्माएँ तीन बार अवतरित हुईं. जिनको विशेष समुदाय ब्रह्मसृष्टि तथा श्याम स्वरूप मुहम्मदकी पहचान ही नहीं है वे लोग स्वयंको मुहम्मद द्वारा स्थापित धर्ममें होनेका दावा करते हैं.

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर ।
तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर ॥ २४

पहली बार ब्रह्मसृष्टिका समुदाय नन्दबाबा (हूद) के घर व्रजमें आया. दूसरी बार योगमायारूपी नौका द्वारा व्रजसे रासमें गया. तीसरी बार हजार मास (वि. सं. १६३८ से १७२१ तक) पर्यन्त इस जगतमें उतरा. इसे मुहम्मदकी ग्यारहवीं शताब्दी कहा गया है. इसीमें तारतम ज्ञानका प्रकाश हुआ है.

[श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके जन्मसे लेकर महामति श्री प्राणनाथजीके दीव प्रस्थान पर्यन्त ८३ वर्ष अर्थात् १००० महीने होते हैं.]

जाहेर पेहेचान कही रसूलें, गिरो खासी और कयामत ।
सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावे हकीकत ॥ २५

रसूल मुहम्मदने ब्रह्मात्माओं तथा आत्म-जागृति (कयामत) के दिनकी पहचान स्पष्ट कही है. विवेक बुद्धिसे विचार करने पर ही उक्त दोनों रहस्य स्पष्ट होंगे.

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक ।
लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक ॥ २६

कुरानमें कहा है कि संसारके एक हजार वर्ष व्यतीत होने पर परमात्माका एक दिन होता है. इसी प्रकार महिमामयी ब्रह्मरात्रि (लैलतुलकद्र) के तीसरे चरण (जागनी लीला) को हजार महिनेसे भी अधिक कहा है.

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार ।
अग्यारैं सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार ॥ २७

[हदीसोंमें कयामतके सन्दर्भमें कहा गया है, वह ''फर्दा ए रोज़'' कलके दिन होगी वही बात यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं-] रसूल मुहम्मदकी ग्यारहवीं शताब्दी पर्यन्त सौ वर्षकी रात्रि एवं हजार वर्षका दिन व्यतीत हुआ (इस प्रकार कल अर्थात् एक दिन और एक रात बीत जाने पर) ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तमें ब्रह्मज्ञानके प्रभात होनेकी बात कही है. इस समय पर परमधामसे अवतरित आत्माएँ ही शिरोमणि ब्रह्मात्माएँ कहलाएँगी.

रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत ।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत ॥ २८

रसूल मुहम्मदके समयमें ब्रह्मात्माएँ संसारमें नहीं आई थीं, इसलिए उन्होंने यह वचन दिया था कि कलका दिन कयामत होगा और इसी दिन परमात्माने स्वयं यहाँ आनेके लिए कहा है.

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत ।
एहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत ॥ २९

अभी एक रात (सौ वर्ष) एवं एक दिन (एक हजार वर्ष) व्यतीत हुए हैं. इसलिए इसी (ग्यारहवीं शताब्दी) को कलका दिन (फर्दा ए रोज़) कयामत कहा है. वस्तुतः कुरान ग्रन्थके उत्तराधिकारी ब्रह्मात्माएँ ही हैं और वे ही सद्गुरुके स्वरूप तथा कुरानके गूढ़ रहस्यको समझ पाएँगी.

आए वसीयतनामें मके से, उठ्या कुरान दुनी से बरकत ।
सो अग्यारैं सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत ॥ ३०

मुसलमानोंके पवित्र स्थान मक्कासे (औरङ्गजेबके नाम पर) चार अधिकार पत्र (वसीयतनामे) आए. उनमें इस प्रकार लिखा गया था, कुरानमें दिए गए

सङ्केतोंके अनुसार अरबसे अब धर्मका अभ्युदय और कुरानकी आध्यात्मिकता ऊठ गई है. वस्तुतः कुरानकी भविष्यवाणीके अनुसार ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तमें ब्रह्मात्माओंने तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानके गूढ़ रहस्यको समझा.

झंडा ईसे मेहेदीयने, खडा किया है जित ।
सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत ॥ ३१

जिस भारतवर्षमें सद्गुरु (महदी) श्री देवचन्द्रजी (ईसा) ने सत्यधर्मका झण्डा स्थापित किया है. अब वहीं पर परमात्माका यथार्थ ज्ञान (हकीकत) एवं पूर्ण पहचान (मारफत) के साथ परमधामकी सम्पदा आ गई.

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान ।
सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिंदू या मुसलमान ॥ ३२

कुरानमें यह भी कहा था कि कुरानके द्वारा धर्मका अभ्युदय (बरकत) होगा एवं उसका फल श्रद्धा और विश्वासके अनुरूप लोगोंको मिलेगा. अब तारतम ज्ञानके अभ्युदय होनेसे हिन्दू या मुसलमान सभीके उपासनाके बाह्यस्थान (आग, पानी, पत्थर आदि) अस्तित्वहीन हो गए अर्थात् सभी लोग एक परमात्माकी उपासनामें लग गए.

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर ।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर ॥ ३३

जब वेद-कतेबके गूढ़ अर्थोंको स्पष्ट करते हुए ब्रह्मात्माओंको जागृत कर सद्गुरु (हादी) उन्हें परमधाम ले चलेंगे तब संसारके लोग कैसे रह सकेंगे ? जिन ब्रह्मात्माओंके लिए यह नश्वर खेल बनाया है वे सब अपने निर्धारित समय पर जागृत हो रही हैं.

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान ।
राख लई गिरो पनाहमें, डुबाए दई सब जहान ॥ ३४

देखो, अपनी अङ्गनाओंके लिए धामधनीने तीन बार (हुद तोफान, नूह तोफान, कयामतके दिन अथवा व्रज, रास और जागनीमें स्वयं पधारकर) विशेष कृपा की है. उन्होंने ब्रह्मात्माओंको अपनी संरक्षणमें रखा और संसारका लय कर दिया.

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरा बुतखाने का ।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा ॥ ३५

जब रसूल मुहम्मद इस संसारमें आए तब देवस्थानसे कंगुरा (छोटा शिखर) गिर गया. तब लोगोंने कहा कि यह पैगम्बरके अवतरणका सङ्केत (चमत्कार) है. (तात्पर्य यह है कि रसूलने आकर मूर्तिपूजाके स्थान पर एक परमात्माकी बातें कीं.)

अब देखो माजजा रब आखरी, सब उठाए सेजदे ठौर ।
रोसन हुआ दिन अरस बका, कोई ठौर रही ना सेजदे और ॥ ३६

अब इस अन्तिम समयके परमात्माके प्राकट्यका चमत्कार देखो. उन्होंने तो बाह्यपूजा (कर्मकाण्ड) के स्थानका अस्तित्व ही मिटा दिया. जब अखण्ड परमधामके दिव्य ज्ञानके प्रकाशका प्रभात हो गया. तब परमधामको छोड़कर नमन करनेका अन्य कोई स्थान ही नहीं रहा (तात्पर्य यह है कि तारतम ज्ञानके प्रकाशमें परमधामका स्पष्टीकरण होनेसे उसके अतिरिक्त नमन योग्य अन्य कोई स्थान नहीं रहा).

सिपारे ओगनतीसमें, इन विध लिखे कलाम ।
अरस बका पर सेजदा, करावसी इमाम ॥ ३७

कुरानके उन्तीसवें सिपारे (अध्याय) में इस प्रकारके वचन लिखे हुए हैं कि अन्तिम समयके धर्मगुरु (इमाम) सभी प्राणियोंको अखण्ड परमधाम पर नमन करवाएँगे.

और आगे बुत बोले हुते, सांचा आखरी पैगंमर ।
फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर ॥ ३८

पहले भी रसूल मुहम्मदके समयमें मूर्तिओंसे आवाज आई थी कि अन्तिम पैगम्बरका कथन सत्य है. ये परमात्माका सन्देश लेकर आए हैं. इन पर अविश्वास करने वाले तुम नास्तिक हो.

अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत ।
तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं खाए लिखे सखत ॥ ३९

अब इस समय भी मक्का (खुदाके घर) से पुनः आकाशवाणी हुई. तब इमाम

महदीके अवतरणकी साक्षीके लिए औरङ्गजेबके नाम पर चार वसीयतनामे भेजे गए. इन वसीयतनामोंमें बड़े कड़े शब्दोंमें शपथपूर्वक कहा गया है तथापि संसारके लोग इनकी ओर नहीं देखते.

मके मदीने दीन का, खडा था निसान ।
सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दजाल कुफरान ॥ ४०

मक्का और मदीनामें इस्लाम धर्मके चिह्न स्वरूप झण्डा खड़ा किया था. उसी समय रसूलने कहा था कि भविष्यमें यहाँ पर दज्जाल उपद्रव करेगा. वस्तुतः आज कुरानका कथन सत्य हो रहा है.

तो जोरा किया दजालने, लोगों छुडाए दिया यकीन ।
अग्यारैं सदी के आखर, रह्या न किन का दीन ॥ ४१

वस्तुतः अभी दज्जालने अपना वर्चस्व जमा लिया. क्योंकि लोगोंमें कुरान (वचनों) के प्रति विश्वास नहीं रहा. रसूल मुहम्मदके पश्चात् ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तमें किसीका भी धर्म नहीं बचा.

गजब हुआ दुनियां पर, खैंच लिया फुरमान ।
हादी भेजे नामे वसीयत, इत रह्या न किनों ईमान ॥ ४२

संसारमें बड़े आश्चर्यकी घटना घटी कि मक्कासे कुरानकी शक्ति खींच ली गई. तब वहाँके धर्मगुरुओंने (औरङ्गजेबके नाम पर) वसीयतनामे भिजवाए. उनमें लिखा था कि अब यहाँ पर (मक्कामें) धर्मके प्रति किसीमें भी निष्ठा नहीं रही.

[वसीयतनामामें चार वस्तुएँ अङ्कित थीं – बरकत (शक्ति) शफकत (दुआ), कुरान और ईमान]

आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान ।
करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान ॥ ४३

परब्रह्म परमात्माके आदेशसे देवोंके देव सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भारतभूमि (हिन्दुस्थान) में प्रकट हुए. उन्होंने अपने उत्तराधिकारी (मुझ) को कहा, अब सबका न्याय करो और दुष्ट कलियुगरूपी नास्तिकताको दूर भगाओ.

आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम ।
सो खलक रानी गई, जिन छोडे हक हादी कदम ॥ ४४

वस्तुतः परमात्माका आदेश और कुरानका आध्यात्मिक बल हिन्दुओंमें आ गया. जब जो सच्चे सद्गुरुकी चरण-शरणको छोड़ देंगे वे सब धिक्कारे जाएँगे.

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन ।
सो प्रगट्या अपने समे पर, हुआ हिन्दुओं में रोसन ॥ ४५

परमात्माका दूसरा सन्देश श्रीमद्भागवतको लेकर शुकदेवमुनि पहलेसे ही आए हैं. इसका गूढ़ रहस्य आज तक छिपा हुआ था. वह भी निर्धारित समय पर प्रकट हो गया और हिन्दुओंमें इसका प्रकाश फैल गया.

परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखण्ड ।
कुली कालिंगा मारिया, मुक्ति दई ब्रह्मांड ॥ ४६

परमहंस ब्रह्ममुनि तथा अखण्ड धामधनी प्रकट हो गए. इन ब्रह्मात्माओंने कलियुगरूपी नास्तिकताका हनन किया और ब्रह्माण्डके जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान की.

झूठा अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिन्दुअन ।
दाभा जाहेर हुई मके से, आए हिंद में मेहेदी मोमन ॥ ४७

हिन्दुओंमें परमात्माके प्रकट होने पर धर्मकी झूठी मान्यताएँ (कर्मकाण्ड) अस्तित्वहीन हो गईं. इमाम महदी (अन्तिम समयके धर्मगुरु) ब्रह्मात्माओंके साथ भारतवर्षमें प्रकट हो गए हैं तथा मक्कामें दावातलअर्ज उत्पन्न हुआ (मक्काके लोगोंमें पाशविक वृत्तियाँ बढ़ने लगी जिससे वहाँ पर उपद्रव होने लगे, रसूल मुहम्मदने पहलेसे ही इस प्रकारकी भविष्यवाणी की थी).

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान ।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखर गिरो पर ल्याए फुरमान ॥ ४८

परमात्माने संसारके जीवोंको दो बार (हूद और नूह तोफानमें) डूबा दिया और ब्रह्मात्माओंको दोनों बार उस उपद्रवसे बचाया. पुनः तीसरी बार नई सृष्टि कर अन्तिम समयमें ब्रह्मात्माओंके लिए अपना आदेश पत्र भेजा.

यों अरस गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान।
किन पाई ना सुध रूहें अरस की, आप अपनी आए करी पेहेचान॥४९

इस प्रकार कुरान तथा पुराणके माध्यमसे परमधामकी ब्रह्मात्माओंको (उनके लक्षण सहित) प्रकट किया. तथापि परमधामकी ब्रह्मसृष्टियों के विषयमें किसी भी जीवको सुधि नहीं हुई. इसलिए परमात्माने स्वयं प्रकट होकर अपनी अङ्गनाओंकी पहचान करवाई है.

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत ।
जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत ॥ ५०

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (हादी) के साथ अवतरित ब्रह्मात्माएँ ही कुरानमें वर्णित खासी गिरोह है एवं यही ग्यारहवीं शताब्दी ही फरदा रोज कयामत अर्थात् आत्म-जागृतिकी घड़ी है. मक्कासे आए हुए वसीयतनामे भी इस बातको स्पष्ट कर रहे हैं. अब यह यथार्थता किसीसे छिपी नहीं रही है.

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकडे पुल सरात ।
छोडे ना वजूद नासूती, जान बूझके कटात ॥ ५१

जो लोग कर्मकाण्डको ही धर्ममार्ग समझकर उसीका अनुसरण करते हैं एवं मिथ्या देहाभिमान (नासूती वजूद) को छोड़ नहीं सकते. वे ब्रह्मात्माएँ तथा परब्रह्म परमात्माको कैसे पहचान सकेंगे ? इसलिए वे जानबूझकर तलवारके धार (पूलेसिरात) से कटकर नरकगामी होते हैं.

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सातमें मलकूत ।
तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत ॥ ५२

संसारके लोग यही जानते हैं कि मृत्युलोक (नासूत) से ऊपर सातवें आसमान पर वैकुण्ठ (मलकूत) है. वस्तुतः उसके ऊपर शून्य निराकार (ला-हवा) या अन्धकार (जुल्मत) का आवरण है एवं उससे भी परे तेजोमय अखण्ड अक्षरधाम है.

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से ।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने ॥ ५३

अवतारी पुरुषों (पैगम्बरों) ने अक्षर ब्रह्मके आवेश (जिब्रील फरिश्ता) के

द्वारा संसारमें महत्ता प्राप्त की है. जिब्रील फरिश्ताके द्वारा ज्ञानरूपी सम्पदा प्राप्त करने पर ही अवतारों (पैगम्बरों) ने अविनाशी परमात्माके सामीप्यकी बातें कीं है.

सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए ।
नूर तजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए ॥ ५४

वह चिन्मय दूत (नूरी फरिश्ता) जिब्रील भी अक्षरधाम (जबरूत) से आगे परमधाम (लाहूत) में नहीं जा सकता. अक्षरातीत ब्रह्म (नूरतजल्ला) के दिव्य तेज (तजल्ली) से उसके पङ्ख जलने लगते हैं.

जबरूत ऊपर अरस लाहूत, इत महंमद पोहोंचे हजूर ।
रदबदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर ॥ ५५

अक्षर धामसे परे परमधाममें परब्रह्म परमात्माके समक्ष उनके आदेशके स्वरूप मुहम्मद पहुँच गए. उन्होंने परमात्माके साथ उपासनाके सम्बन्धमें (उपासनामें छूट देनेके लिए) परिसम्वाद किया. इस प्रकार रसूलने स्वयं परमात्मासे चर्चा की.

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए ।
मारफत अरस अजीममें, ए पुल सरातें अटकाए ॥ ५६

रसूल मुहम्मद इसी परमधामसे सङ्केत रूपमें परमात्माका आदेश (कुरानके माध्यमसे) लेकर आए. परन्तु संसारके जीव उन सङ्केतोंको कैसे समझ सकते हैं ? परमात्माकी पूर्ण पहचान होने पर ही परमधाममें पहुँचा जा सकता है अन्यथा पूलेसिरातमें ही कटना पड़ता है.

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए ।
एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए ॥ ५७

कुरानमें स्पष्ट लिखा है कि आदमकी सन्तान (संसारके जीव) शून्य निराकारको ही परमात्मा मानकर उनकी पूजा करती है. मात्र मुहम्मदने ही कहा है कि मैं अक्षरसे भी परे चिन्मय स्वरूप परमात्माके पास पहुँच कर आया हूँ.

दुनियां चौदे तबक में, किन सुरैया उलंघी ना जाए ।
फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए ॥ ५८

इन चौदह लोकोंके जीवोंमें-से किसीने भी ज्योति स्वरूप तथा शून्य निराकारको पार नहीं किया. इस नश्वर ब्रह्माण्डके अन्तर्गत शून्य निराकारमें ही वे गोते खाते रहे.

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन ।
तरफ न जानी चौदे तबकमें, महंमद पोहोंचे ठौर तिन ॥ ५९

इन जीवोंमें-से किसीने भी परमात्माका स्वरूप न अपने आँखोंसे देखा और न ही अपने कानोंसे सुना. इन चौदह लोकोंमें परमात्माकी दिशा तक किसीको नहीं मिली ऐसे अगम्य स्थान पर रसूल मुहम्मद पहुँच पाए.

करी महंमदे मजकूर तिनसों, सुने हरफ नबे हजार ।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुंन निराकार ॥ ६०

रसूल मुहम्मदने म्याराजके समय उन परब्रह्म परमात्माके साथ बातें की और उनसे नब्बे हजार शब्द सुने. परन्तु यहूदीलोग ऐसे परमात्माको शून्य निराकार कहते हैं.

ए भी कहे हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के ।
सोई सबद सुन पकड्या, आगूं काफर केहेते थे जे ॥ ६१

किन्तु स्वयं रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाने वाले लोग भी कहते हैं कि परमात्माकी कोई आकृति नहीं है. उन्होंने भी परमात्माको निराकार कहना आरम्भ किया जैसा अज्ञानी जीव (नास्तिक लोग) पहलेसे ही कहा करते थे.

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर ।
कौल महंमद का रद होत है, जो हकसों किया मजकूर ॥ ६२

यदि ये लोग इतना भी विचार नहीं कर सकते तो स्वयंको रसूल मुहम्मदके अनुयायी क्यों कहते हैं ? परमात्माको निराकार मान लेने पर रसूल मुहम्मदके वे वचन असत्य सिद्ध हो जाते हैं कि उन्होंने म्याराज (दर्शन) के समय परमात्मासे बातें की है.

जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिलेके सुकन ।
सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन ॥ ६३

परमात्मासे मिलकर बातें करनेके कारण ही तो रसूल मुहम्मद अन्य पयगम्बरोंसे श्रेष्ठ कहलाए (उन्हें महानता मिली). उसी परमात्माको निराकार मान लेने पर रसूल मुहम्मदके ये वचन असत्य सिद्ध हो जाते हैं, जरा हृदयमें ज्ञानका प्रकाश भरकर तो देखो.

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नांहें ।
केहेलावें महंमद के पूजें हवा, ए बडा जुलम दीन मांहें ॥ ६४

यदि अज्ञानी लोग परमात्माकी आकृतिको न स्वीकारें तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है परन्तु स्वयंको रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाने वाले यदि शून्य निराकारकी आराधना करने लगे तो रसूल द्वारा चलाए गए धर्मके ऊपर यह बड़ा अन्यायपूर्ण कार्य है.

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे पडत ।
कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित ॥ ६५

रसूल तो कहते हैं कि मैं सभीको एक ही धर्मकी छत्रछायामें लाऊँगा जिससे कोई भी एक दूसरेसे अलग न हो जाए. उन्होंने यह भी कहा, कुरानके चमत्कार पूर्ण रहस्य और मेरी पैगम्बरी (ईश्वरीय दूत) होना तो एक धर्म होने पर ही सिद्ध होंगे.

तुम करत मुझसे दुसमनी, मैं किया चाहों एक राह ।
तो जुदे पडत कै दीन से, जो दिलों इबलीस पातसाह ॥ ६६

रसूलने यह भी कहा, तुम मेरी बात न मानकर मुझसे शत्रुता रख रहे हो. मैं तो सभीके लिए एक ही मार्ग प्रशस्त करना चाहता हूँ. तुममें-से ऐसे कई लोग इसलिए धर्मसे अलग हो रहे हैं क्योंकि उनके हृदयमें दुष्ट इबलीस सम्राट बनकर बैठा हुआ है.

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें ।
लड फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें ॥ ६७

इस प्रकार कुरानको माननेवाले लोग भी कुरानके चमत्कारपूर्ण रहस्य तथा

पैगम्बरकी पैगम्बरी सत्य सिद्ध होने नहीं देते. इसलिए धर्ममें स्वयंको महान् ज्ञानी कहलाने वाले लोग ही परस्पर लड़-झगडकर कई फिरकों (सम्प्रदायों) में बँट गए.

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया अरसों का बयान ।
हौज जोए बाग कै बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान ॥ ६८

रसूल साहबने तो संसारमें आकर परमात्माके स्वरूपकी विस्तृत चर्चा की तथा अखण्ड धामका वर्णन किया. इतना ही नहीं परमधामका हौज कौसर ताल, यमुनाजी, विभिन्न वन-उपवन तथा वहाँके विश्रामस्थल आदिका विवरण भी उन्होंने कुरानके माध्यमसे प्रस्तुत किया.

कहावें फिरके बुजरक, हुए आपमें दुसमन ।
महंमद मता अरस बका, लिया जाए न हवा के जन ॥ ६९

इस प्रकार रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाने वाले लोग भी अपने-अपने सम्प्रदायको श्रेष्ठ कहलानेके चक्करमें आपसमें शत्रुता बढ़ा रहे हैं. क्योंकि निराकारवादी लोगोंसे रसूल मुहम्मद द्वारा बताई गई परमधामकी अखण्ड सम्पदा ग्रहण नहीं की जाती.

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लों महंमद औरों बराबर ।
दई कै बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर ॥ ७०

यदि परमात्माकी आकृतिकी बात नहीं की होती तो रसूल मुहम्मद भी अन्य पैगम्बरोंके समान ही माने जाते. वैसे तो अन्य पैगम्बरों, जो लाखोंकी संख्यामें माने गए हैं, को भी कई महानताएँ प्रदान की गई हैं.

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक ।
हकें मासूक कह्या तो भी ना समझें, क्या करे आम खलक ॥ ७१

उन सभी पैगम्बरोंमें रसूलकी महत्ता तभी ज्ञात होगी जब परमात्माकी पहचान हो जाएगी. स्वयं परमात्माने अपना सन्देशवाहक मुहम्मदको अपना प्रेम पात्र (माशूक) कहा है तब भी ये मायाके जीव (आम खलक) रसूलकी महत्ता नहीं समझते.

जाहेर राह मारे दुसमन, इबलीस दिलों पर ।
जाहेरी इलमें नफा ना ले सके, पेहेचान होए क्यों कर ॥ ७२

यह स्पष्ट है कि इनके हृदयमें बैठा हुआ शत्रु (इबलीस) ही इनको पथभ्रष्ट कर रहा है. क्योंकि मात्र बाह्यज्ञान लेनेवाले व्यक्ति ब्रह्मज्ञानका लाभ नहीं ले सकते. अतः उनको परमात्माकी पहचान कैसे होगी ?

बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत ।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनों बका खिलवत ॥ ७३

अखण्ड परमधाममें तो मात्र मुहम्मद ही पहुँचे हैं. उनके तीन स्वरूप (बशरी, मलकी और हकी) कहे गए हैं. जहाँ पर अन्य कोई पहुँचा ही नहीं है, ऐसे अखण्ड परमधामकी अन्तरङ्ग बैठक (मूलमिलावा) का अनुभव इन तीनोंने प्राप्त किया.

देसी हकीकत सब अरसों की, नूर जमाल सूरत ।
केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत ॥ ७४

ये ही स्वरूप विभिन्न धामोंका यथार्थ ज्ञान देकर अक्षरातीत परमात्माके तेजोमय स्वरूपका वर्णन करेंगे और ऐसे परब्रह्मके साथ ब्रह्मात्माओंके अद्वैत सम्बन्धकी बात स्पष्ट करेंगे जिससे परमधामके गूढ़ रहस्योंके विषयमें किसीको शङ्का नहीं रहेगी.

सरत करी जो रसूलें, सो पोहोंच्या आए बखत ।
तिन इमामको ना समझे, जिनपें कुंजी क्यामत ॥ ७५

रसूल मुहम्मदने जो निश्चित समय कहा था वह अवसर अब आ पहुँचा है. किन्तु बाह्यदृष्टि वाले संसारिक जीव उन सद्गुरु (इमाम) को नहीं पहचानते हैं जिनके पास कयामतका रहस्य स्पष्ट करने वाली तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी है.

बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेहेदी इमाम ।
मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम ॥ ७६

रसूल मुहम्मदने कहा है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्ला) तथा इमाम

महदी परमधामसे इस भूतल पर आएँगे और परमात्मासे हुई मेरी चर्चाकी साक्षी देंगे.

कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब ।
दजाल मारके एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब ॥ ७७

तब कुरानके चमत्कारपूर्ण रहस्य एवं पैगम्बरकी पैगम्बरी सत्य सिद्ध होगी. उस समय सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्ला) दुष्ट कलियुग (नास्तिकता) को निर्मूल कर एक सत्य धर्मकी स्थापना करेंगे.

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी ।
मैं गुझ करी नूर जमालसों, सो होसी जाहेर बुजरकी ॥ ७८

सद्गुरु (मसी) और इमाम महदी जब मेरी साक्षी देंगे तब मैंने जो परमात्मासे बात की है उसकी महत्ता स्पष्ट हो जाएगी.

मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब ।
फिरके होसी मेरे तिहतर, आखर होएगी तब ॥ ७९

संसारके जिन लोगोंको मैं कर्मकाण्ड (शराअ) में बाँध कर इस्लाम धर्ममें ले आया हूँ अब उनका भविष्य देख रहा हूँ. मेरे ये अनुयायी तिहत्तर सम्प्रदायों (फिरकों) में बँट जाएँगे तब अन्तिम दिन कयामतकी घडी आ जाएगी.

तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के ।
हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे ॥ ८०

उस समय वे महान स्वरूप (इमाम महदी) प्रकट होंगे जो अन्तिम समय (कयामतकी घडी) के स्वामी कहलाएँगे. स्वयं परमात्मा प्रत्यक्ष प्रकट होकर उन्हें आत्म-जागृतिका मार्गदर्शन देंगे. उनके साथ नाजी समुदाय (फिरका) रहेगा.

हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए ।
सो अरस मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए ॥ ८१

परमात्माकी आज्ञासे ही मैंने उनके साथ हुई वार्ताके कुछ रहस्यमय शब्द

(प्रसङ्ग) गुप्त रखे हैं. परमधामके उस अखण्ड वैभव एवं अन्तरङ्ग लीलाओंका रहस्य उक्त महान स्वरूप (इमाम) प्रकट होकर प्रकाशित करेंगे.

मता सब म्याराज का, किया अरसमें हकें मजकूर ।
जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सोए सब करसी जहूर ॥ ८२

साक्षात्कारके समय मैंने परमधाममें जो कुछ देखा और जो वार्तालाप हुई तथा मुझ पर सदैव परमात्माकी जैसी कृपा बनी रही है उन सब प्रसङ्गोंको इमाम महदी प्रकाशित करेंगे.

और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर ।
होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर ॥ ८३

तब सभी समुदाय (फिरकों) में बँटे हुए लोग एवं सभी पैगम्बर एक साथ एकत्रित होंगे. ज्ञानके उस प्रभातके समय ब्रह्मस्वरूप इमाम महदीके हाथों सभीका लेखा-जोखा होगा.

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पर खुले ना बिना खिताब ।
गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब ॥ ८४

उपर्युक्त सम्पूर्ण बातें कुरानमें स्पष्ट लिखीं हुईं हैं परन्तु परमात्माकी उपाधि लेकर आनेवाले इमाम महदीके बिना ये रहस्य स्पष्ट नहीं हुए. जब इमाम महदीके रूपमें पधारे हुए परमात्मा अपने हाथोंमें यह ग्रन्थ (कुरान) लेंगे तब सभी गूढ़ रहस्य स्वतः स्पष्ट हो जाएँगे.

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बुजरकी जाहेर क्यों होए ।
कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हें रात में कोए ॥ ८५

रसूलने यह भी कहा था कि स्वयं परमात्माके प्रकट हुए बिना मेरी महत्ता कैसे प्रकट होगी ? अखण्ड सूर्य (दिव्य ब्रह्मज्ञान) के उदय हुए बिना अज्ञानकी रात्रिमें कौन पहचान सकता है ?

अरस कह्या दिल मोमिन, सब अरस में न्यामत ।
कह्या और दिल पर इबलीस, अब देखो तफावत ॥ ८६

ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है, उसी हृदयमें

परमधामकी सभी सम्पदा समाई हुई है. संसारके अन्य लोगोंके हृदय पर तो दुष्ट इबलीसका साम्राज्य कहा गया है. देखो, ब्रह्मात्माओं और संसारके सामान्य जीवोंमें यही अन्तर है.

मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक ।
महंमदे मोमिनों राह ए दई, ए राह क्यों लेवें हवाई खलक ॥ ८७

ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें परमात्माके अतिरिक्त कुछ भी नहीं रखती, उन्होंने तो चौदह लोकोंकी सम्पदाको तुच्छ माना है. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने ब्रह्मात्माओंको इसी मार्ग पर चलनेका उपदेश दिया है. निराकारकी उपासना करनेवाले जीव इस श्रेष्ठतम मार्गको कैसे ग्रहण कर सकते हैं ?

महामत कहें ऐ मोमिनो, राह बका ल्योगे तुम ।
जिन का दिल अरस कह्या, औरों ना निकसे मुख दम ॥ ८८

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! उक्त अखण्ड मार्ग पर तुम ही चल पाओगे, तुम्हारे हृदयको ही परमात्माका धाम कहा गया है. अन्य लोग तो इस मार्गकी बात भी मुखसे नहीं कह सकेंगे (फिर चलनेकी बात तो दूर ही रह गई).

प्रकरण २ चौपाई १९०

खुलासा म्याराजका (साक्षात्कारका स्पष्टीकरण)

हक हादी रूहनसों, जो किया कौल अव्वल ।
ए खुलासा म्याराजका, जो रूहों हुई रदबदल ॥ १

परमधाममें परब्रह्म परमात्माने श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ वार्तालाप कर सर्व प्रथम जो वचन दिए और ब्रह्मात्माओंमें भी परस्पर जो चर्चाएँ हुईं उसीका विवरण इस प्रकरण (खुलासा म्याराजका–साक्षात्कारका स्पष्टीकरण) में दिया गया है.

कौल अलस्तो बे रब का, किया रूहोंसों जब ।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब ॥ २

कुरानके अनुसार परब्रह्मने अपनी अङ्गनाओंसे जब "क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ (अलस्तु बिरब्बि कुम)" इस प्रकार कहकर अपना स्वामित्व दर्शाया,

अब भी वही घड़ी है जरा तारतम ज्ञान (ब्रह्मज्ञान-हक इल्म) की दृष्टिसे तो देखो.

तब बले कह्या अरवाहोंने, अरस से उतरते ।
किया जवाब हकने, रूहों याद किया चाहिए ए ॥ ३

तब ब्रह्मात्माओंने प्रत्युत्तरमें "निःसन्देह (आप हमारे स्वामी है)" इस प्रकार कहा. इसके प्रत्युत्तरमें परमधामसे संसारमें अवतरित हो रही आत्माओंसे धामधनीने पुनः कहा, "हे आत्माओ ! यह बात तुम्हें सर्वदा याद रहनी चाहिए."

तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को ।
याद राखियो आपमें, इत मैं भी साहेद हों ॥ ४

श्रीराजजीने यह भी कहा, खेलमें जाकर तुम एक दूसरेकी साक्षी बनना. ये सभी बातें मैं तुम्हें इसलिए कह रहा हूँ कि तुम इनको याद रखना. मैं भी यहाँ पर तुम्हारा साक्षी रहूँगा.

और साहेद किए फिरस्ते, जिन जाओ तुम भूल ।
फुरमान भेजूंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल ॥ ५

विभिन्न देवी-देवताएँ (फरिश्ते) तुम्हारी साक्षीके लिए हैं इसलिए कि तुम भूलो नहीं. मैं मेरे प्रिय रसूलके हाथ तुम्हारे लिए सन्देश पत्र (फुरमान) भेजूँगा.

म्याराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है ऊजू जल ।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल ॥ ६

जब रसूल मुहम्मदको साक्षात्कार हुआ तब वुजू किया (हाथ धोया) हुआ जल भी हिल रहा था और बैठक (आसन) की गर्मी भी टली नहीं थी उन्हें साक्षात्कारमें क्षणमात्रका समय भी नहीं लगा.

(रसूल मुहम्मद नमाजके लिए बैठकसे उठे और हाथ धोकर वापस आ रहे थे इतनेमें उन्हें साक्षात्कार हुआ. साक्षात्कारके पश्चात् उन्हें ज्ञात हुआ कि अभी तक वुजू किया हुआ हौज का जल भी हिल रहा है और बैठककी गर्मी भी

नहीं टली है अर्थात् क्षण मात्रमें ही दर्शन हुए हैं. यह उदाहरण इसलिए दिया जा रहा है कि परमधाममें ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीसे वार्तालाप कर रही हैं, उस समय जब श्रीराजजीने कहा,क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ ? तब प्रत्युत्तरमें ब्रह्मात्माओंने कहा, नि:सन्देह(आप हमारे धनी हैं). बस, इन शब्दोंकी ध्वनि गूँज ही रही है कि इतनेमें ब्रह्मात्माओंने व्रज, रास और जागनी इन तीनों लीलाएँ देखी और वे जाग्रत भी हुईं अर्थात् ब्रह्मात्माओंको संसारका खेल देखनेमें पलमात्रका ही समय लगा है.)

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान ।
बले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान ॥ ७

यह साक्षात्कार(म्याराज) का उदाहरण इसलिए दिया गया है कि ब्रह्मात्माओंको खेलमें आकर पुन: परमधाममें जागृत होनेमें पलभरका ही समय लगा. क्योंकि ब्रह्मात्माओंने प्रत्युत्तरमें कहे हुए शब्द ''नि:सन्देह(काल्बला)'' की ध्वनि अभी भी कानोंमें गूँज रही है.

उतर आए नासूतमें, भूल गए अरस की ।
इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी ॥ ८

इतने अल्प समयके लिए ब्रह्मात्माएँ नश्वर संसारमें अवतरित हुईं और शाश्वत् परमधामको ही भूल गईं. क्षणभरमें उत्पन्न होकर लय होने वाले इस संसारमें उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानों हम सदा सर्वदासे यहीं पर हैं.

अरस रूहें भूली नासूतमें, इनसों हक हादी निसबत ।
ताए लिख भेज्या फुरमानमें, अजूं सोई है साइत ॥ ९

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें आकर भूल गईं. उनका सम्बन्ध तो पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी एवं श्यामाजीके साथ है. उनके लिए ही सन्देश पत्र (कुरान) में लिखकर भेजा कि अभी भी वही क्षण है.

हाए हाए ए समया क्यों ना रह्या, ए कैसा भोमका बल ।
तो कह्या सिखरा सींग पर, रेहे ना सके एक पल ॥ १०

हाय ! हाय !! वह प्रसङ्ग अब क्षणभरके लिए भी याद नहीं आता, इस मायामयी भूमिका आकर्षण कितना प्रबल है ! इसके लिए तो कहा है कि

जिस प्रकार किसी पशुके सींग पर राईका दाना पल भर भी टिक नहीं सकता इसी प्रकार इस ब्रह्माण्डका अस्तित्व भी पल भरका नहीं है.

आए पडे तिन फरेबमें, चौदे तबकों न बका तरफ ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ ॥ ११

ऐसे क्षणिक ब्रह्माण्डके नश्वर खेलमें ब्रह्मात्माएँ आई हैं जहाँ चौदह लोकोंके प्राणियोंको अखण्ड धामका बोध नहीं है. सभी इसी नश्वर खेलमें खेल रहे हैं, इसमें किसीने भी अखण्ड ज्ञानका एक शब्द भी उच्चारण नहीं किया.

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल ।
अब सीधा क्योंए ना होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल ॥ १२

यह संसारका खेल भी मिथ्या है और यहाँकी रीति-नीति भी मिथ्या है, किन्तु ब्रह्मात्माएँ भी इसी अनित्यमें सम्मिलित हो गईं. अब सरलतासे उनकी सुरता परमधामकी ओर नहीं लौट सकती क्योंकि श्रीराजजीके आदेश (हुकुम) ने ही उनके हृदयको इस प्रकार परिवर्तित कर दिया है.

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहें मजकूर ।
दिया इलम लुदंनी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर ॥ १३

परमधाम मूल मिलावाकी एकान्त बैठकके परिसम्वादमें धामधनीने इन आत्माओंको (उक्त परिस्थितिमें भी) जागृत करनेका वचन दिया था. इसीलिए उन्होंने स्वयं आकर विशाल एवं तेजोमय परमधामकी इन आत्माओंको अखण्ड तारतम ज्ञान प्रदान किया.

देखो बडी बडाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर ।
भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर ॥ १४

देखो ! इनकी कितनी बड़ी महिमा है. धामधनीने इनके लिए अपनी प्रियतमा (माशूका) श्री श्यामाजीको सद्गुरुके रूपमें भेजा. धामधनीने श्री श्यामाजीके हाथ तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी भेजी और उन्हें अपनी आज्ञारूपी शक्ति भी प्रदान की.

हुकम दिया दिल अरस किया, हकें कह्या महंमद मासूक ।
ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक ॥ १५

अपना आदेश देकर धामधनी श्री श्यामाजी (सद्गुरु) के हृदयमें स्वयं विराजमान हुए और उनके हृदयको परमधाम बना दिया. धामधनीने श्यामाजीको अत्यन्त प्रिय कहकर उनकी प्रशंसा की. हाय ! इन वचनोंको सुनकर भी ब्रह्मात्माओंका हृदय विदीर्ण हो टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ.

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल ।
सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अरसमें तन तुम असल ॥ १६

परमधामकी अन्तरङ्ग बैठक मूलमिलावामें श्रीराजजी, श्यामाजी और ब्रह्मात्माओंने मिलकर परस्पर जो वचन दिए थे, हे सुन्दरसाथजी ! वे तुम्हें क्यों याद नहीं आ रहे हैं ? तुम्हारा चिन्मय शरीर (पर आत्मा) तो परमधाममें ही है.

लिखे पहाड कर ईसा महंमद, ए निसान आखर के ।
हक बका अरस देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए ॥ १७

कुरानमें ईसा और मुहम्मदको पर्वतके समान महान (उच्च) माना है और यह भी कहा है कि वे अन्तिम (आत्म-जागृति-कयामतके) समय प्रकट होंगे (उनका प्रकट होना ही कयामतके समयका सङ्केत है). वे परब्रह्म परमात्मा तथा अखण्ड परमधामकी पहचान करवाएँगे एवं आत्मजागृति (कयामत) के दिनकी घोषणा करेंगे. [इस प्रसङ्गका तात्पर्य यह है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (ईसा) और महामति श्री प्राणनाथजी (मुहम्मद) जैसी ऊँच्च विभूतियों का अवतरण हो गया है इसलिए कयामतका समय आ गया है, उन्होंने ही पूर्णब्रह्म एवं परमधामकी पहचान करवाकर कयामतके दिनकी घोषणा की है.]

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद सें ।
आई अरस रूहें गिरो अहंमदी, किए जाहेर जबराईलें ॥ १८

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि अन्तिम समयके मुहम्मदसे मारफतका सूर्य उदय होगा अर्थात् पूर्ण पहचान करवाने वाला तारतम ज्ञान (मारफत)

प्रकाशित होगा. क्योंकि इसी समय श्रीश्यामाजीके अवतार स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके साथ परमधामकी आत्माएँ (श्यामाजीकी अङ्गनाएँ) प्रकट हुई हैं. इस तथ्यकी उद्घोषणा (श्री धनीजीका जोश लेकर मुझमें अवतीर्ण) जिब्रील फिरश्ताने की है.

करसी बका अरस जाहेर, ताके निसान पहाड बिलंद ।
आखर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद ॥ १९

वे महान् स्वरूप अखण्ड परमधामकी पहचान प्रकट करेंगे. उनकी पहचान यह होगी कि वे उच्च पर्वतके समान महत्ता वाले होंगे. इस प्रकार अपने वचनके अनुसार अन्तिम युगके परमात्मा प्रकट हो गए हैं.

हक बका का किबला, कह्या जाहेर होसी आखर ।
पावें ना माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत ॥ २०

कुरानमें यह भी बताया है कि अन्तिम समयमें पूर्णब्रह्म परमात्माका अखण्ड परमधाम ही सबके लिए पूज्य धाम (किबला) के रूपमें घोषित होगा. कुरानके इस प्रकारके रहस्य बाह्यदृष्टि (शब्दार्थ करने) वाले लोग प्राप्त नहीं कर सकते.

हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड कर ।
सो दुनी पूजे पहाड जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर ॥ २१

इन विभूतियोंकी महत्ता बतानेके लिए ही कुरानमें इनको पर्वतकी उपमा दी गई है. किन्तु संसारके लोग प्रत्यक्ष पहाड़ (सफा एवं मरवा) को पूजने लगे. क्योंकि इनमें आत्म-दृष्टि नहीं है (अतः ये ब्रह्म और ब्रह्मधामसे वञ्चित रह गए).

कहे कुरान इन जिमीसे, तरफ न पाई अरस हक ।
ए तेहेकीक किन ना किया, कै ढूंढ थके बुजरक ॥ २२

कुरान स्पष्ट कहता है कि संसारके जीवोंको पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा अखण्ड परमधामका मार्ग नहीं मिला. यहाँ पर कई ज्ञानीजन ढूढ़ते हुए थक गए किन्तु वे इस विषयमें निश्चय नहीं कर पाए.

जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर ।
बेर तीसरी लैलत कदरमें, जिन रोज कयामत करी फजर ॥ २३

सोई गिरोह इसलाम की, खेल लैल देखा दो बेर ।
तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर ॥ २४

आत्माओंके जिस समुदायको इन्द्रकोपके समय व्रजमें गोवर्धन पर्वतके नीचे रखकर बचाया गया एवं जिनको योगमायाकी नौका पर बैठाकर वृन्दावनमें पहुँचाया गया तथा जिन्होंने महिमामयी ब्रह्मरात्रि (लैलतुलकद्र) के तृतीय चरणमें (जागनीलीलाके समय) संसारमें आकर तारतम ज्ञानके द्वारा अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटाकर आत्म-जागृतिका प्रकाश फैलाया. सत्य (धर्म) मार्ग पर चलनेवाले यही समुदाय ब्रह्मात्माओंका है. इन्होंने ही महिमामयी ब्रह्मरात्रि (लैलतुलकद्र) के प्रथम और द्वितीय चरणमें व्रज और रासकी लीलाओंका अनुभव किया है और इस तीसरे चरण आत्म-जागृति (जागनीलीला) के प्रभातमें भी इन्होंने ही तारतम ज्ञानके द्वारा अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटाया है.

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम ।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखर गिरोह स्याम ॥ २५

अपना सिर देने पर भी यदि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा निर्दिष्ट सत्य (धर्म) मार्ग एवं अपने धामधनी श्याम (श्रीकृष्ण) प्राप्त हो जाएँ तो इन आत्माओंको और क्या चाहिए ?

ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे ।
मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के ॥ २६

मायाके अन्धकार (निराकार) से उत्पन्न संसारके जीव परमात्माके द्वारा हो जा (कुन) कहनेसे उत्पन्न हुए हैं. इसलिए कुरानका गूढ़ रहस्य न समझकर वे मात्र बाह्य अर्थ ही ग्रहण करते हैं.

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के ।
कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे ॥ २७

अक्षरसे भी परे अक्षरातीतके हमारे वचनों (तारतम ज्ञान) को ये अज्ञानी जीव कैसे समझ पाते ? ये तो मात्र हो जा (कुन) कहनेसे उत्पन्न हुए शून्य-निराकारके जीव हैं.

लैलत कदरमें रूहें फिरस्ते, जो अरससे उतरे ।
कौल किया हकें जिनसों, सो नूर बानी से समझेंगे ॥ २८

इस महिमामयी ब्रह्मरात्रिमें ब्रह्मात्माएँ एवं ईश्वरीयसृष्टि क्रमशः परमधाम एवं अक्षरधामसे अवतरित हुईं हैं. जिन ब्रह्मात्माओंको परब्रह्म परमात्माने अपना वचन दिया है. वे ही तारतमज्ञानसे समझ सकेंगे.

फना जिमीके बीचमें, जाहेरी पहाड पूजत ।
दुनियां नजर फना मिने, अरस बका न काहूं सूझत ॥ २९

इस नश्वर भूमिकाके जीव बाहरसे दिखाई देनेवाले पहाड़ (सफा मरवा) की पूजा करते हैं क्योंकि इन सभीकी दृष्टि अनित्य वस्तुओं पर ही लगी रहती है. इसीलिए इनको अखण्ड परमधाम नहीं सुझता है.

और दिल हकीकी अरस मोमिन, कह्या तिन दिलकी भी तरफ नाहे।
वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रहत अरस तन माहें ॥ ३०

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ सत्य हृदयवाली कहलाती हैं. इसलिए उनके हृदयका मर्म किसीको भी ज्ञात नहीं होता. वस्तुतः उनका हृदय उस ओर जाए भी क्यों, उनका हृदय तो अपना पर-आत्म स्वरूपमें ही रहता है.

दिल अरस मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत ।
छिन ना छूटे मोमिनसे, मेहेबूब की मूरत ॥ ३१

ब्रह्मात्माओंके हृदयको ही परमधाम कहा गया है. क्योंकि उसमें किशोर स्वरूप परब्रह्म परमात्मा विराजमान हैं. इसलिए ब्रह्मात्माओंके हृदयसे क्षण मात्रके लिए भी प्यारे परमात्माका स्वरूप दूर नहीं होता.

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत ।
ले कुफर बैठे पहाडसे, सो जरे ज्यों ऊडावत ॥ ३२

कुरानमें कहा है कि प्रभातके समय इस्त्राफील फरिश्ता परमात्माके आज्ञासे नुक्ता-इल्मका सूर फुकेगा अर्थात् अक्षरकी बुद्धि तारतमज्ञानका शङ्खनाद करेगी. पर्वतके समान मिथ्या ज्ञानका अहङ्कार लेकर बैठे हुए लोगोंके

अहङ्कारको वह (फरिश्ता) धूलके कणके समान उड़ा देगा अर्थात् तारतम ज्ञान सभीकी भ्रान्तियोंको मिटा देगा.

और कुफर दुनी जो पहाड सी, सूर दूजे कायम करत ।
हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत ॥ ३३

साथ ही पर्वतके समान मिथ्याभिमान लेकर बैठे हुए नश्वर जीवोंको भी यह फरिश्ता दूसरे शङ्खनादसे अखण्ड करेगा. इस प्रकार परमात्माने कृपा कर अपनी ब्रह्मात्माओंके लिए कुरानमें इस प्रकारके गूढ़ रहस्य लिख दिए हैं.

फिरस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सेजदा जिन ।
दई लानत न किया सेजदा, रद किया वास्ते मोमिन ॥ ३४

कुरानके अनुसार परमात्माके निकट रहने वाले महान् फरिश्ता अजाजीलने अखण्ड भूमिकामें सर्वत्र नमन किया. ऐसे अजाजीलको भी (मात्र आदमको नमन न करनेके कारण) धिक्कार मिली और उनके नमनको निरस्त कर उसे नश्वर जगतमें भेज दिया गया. यह भी ब्रह्मात्माओंके लिए ही किया गया है (ब्रह्मात्माओंके लिए नश्वर संसारकी सृष्टि हेतु उसे धिक्कार देकर संसारमें भेजा गया है).

दिल मोमिन अरस कह्या, ए जो असल अरसमें तन ।
ए लिख्या फुरमानमें जाहेर, पर किया न बेवरा किन ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है. उनका चिन्मय शरीर पर-आत्मा परमधाममें है. इस प्रकार कुरानमें स्पष्ट कहा है किन्तु किसीने भी उनका विवरण नहीं दिया कि वे ब्रह्मात्माएँ कौन हैं ?

औलिया लिह्या रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत ।
ए सब बडाई गिरो एक की, जो अरस रूहें हक निसबत ॥ ३६

इन ब्रह्मात्माओंके समूहको धर्मग्रन्थोंमें परमात्माके मित्र, सखियाँ आदि अनेक नामोंसे पुकारा गया है. यह सम्पूर्ण महिमा इन्हीं ब्रह्मात्माओंकी है जिनका सम्बन्ध ही परब्रह्म परमात्मासे है.

हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर ।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर ॥ ३७

परमात्माने सन्देशपत्र (कुरान) के द्वारा अपने वचन लिखकर ब्रह्मात्माओंके लिए भेजे हैं. इसलिए वही समुदाय कुरानके गूढ़ सङ्केतोंका रहस्य स्पष्ट करेगा. ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी इस कार्यके लिए सक्षम नहीं है.

हकें लिख्या मैं करूं हिदायत, एक नाजी फिरके कों ।
सो हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहतर दोजखमों ॥ ३८

परमात्माने कुरानके द्वारा यह कहलाया था कि मैं ब्रह्ममुनियोंके समुदाय (नाजी फिरका) को ही अपना निर्देशन लिखकर भेजूँगा. वही ब्राह्मी समूह ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) के द्वारा परमात्माके निकट पहुँचा. शेष बहत्तर समुदाय (फिरका) के सभी लोग नरकाग्निमें जलने लगे.

लिखियां सब बडाइयां, तिन सब सिर हक हुकम ।
सो सब आमर दई हाथ रूहन, इनों दिल अरस कर बैठे खसम ॥ ३९

सभी धर्मग्रन्थोंमें ब्रह्मात्माओंकी महिमा लिखी गई है. मुख्यतः उन पर ही परमात्माका आदेश है. इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हाथ परमात्माने अपना (जीवोंको मुक्ति देनेका) आदेश दिया और इनके हृदयको परमधाम बनाकर स्वयं उस पर बैठ गए.

और दिल हकीकी अरस मोमिन, हकें दिल अरस कह्या इन ।
दिल मजाजी गोस्त टुकडा, और ऊपर कह्या दुसमन ॥ ४०

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही सत्य हृदया हैं. इनके हृदयको ही परमात्माने अपना धाम कहा है. संसारके जीवोंका हृदय तो मात्र मांसपिण्ड है और उसमें भी दुष्ट शत्रु (इबलीस) बैठा हुआ है.

दुनियां दिल मजाजी इबलीस, दिल हकीकी पर हक ।
एक गिरो दिल अरस कही, सोई अरस रूहें बुजरक ॥ ४१

नश्वर जीवोंके झूठे हृदय पर दुष्ट इबलीस बैठा हुआ है एवं सत्य हृदय पर

परमात्माकी बैठक है. जिस एक समुदायके हृदयको परमधाम कहा है वह परमधामकी श्रेष्ठ आत्माओंका ही समुदाय है.

रूहकी नजरों पाइए, जो हक के नजीकी ।
सो बैठे अपने मरातबे, देवें हक कलाम साहेदी ॥ ४२

परब्रह्मके सान्निध्यमें रहने वाली आत्माओंको आत्म-दृष्टिसे ही पहचाना जाता है. वे आत्माएँ अपने सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हैं. कुरानके वचन इस तथ्यकी साक्षी दे रहे हैं.

बडा फिरस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित ।
सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत ॥ ४३

वैकुण्ठधाम (मलकूत) के बड़े देव (फरिश्ता) भगवान विष्णुकी भी अक्षरधाम (जबरूत) तक गति नहीं है. वे स्वयं कुरानकी यथार्थता समझनेमें असमर्थ हैं. (फिर उनके द्वारा उत्पन्न मायाके जीव कैसे समर्थ होंगे).

मलकूत जबरूत लाहूत, ए अरस कर तीनों लिखे ।
मलकूत फना बीचमें, जबरूत लाहूत बका ए ॥ ४४

वैकुण्ठधाम (मलकूत), अक्षरधाम (जबरूत) तथा परमधाम (लाहूत) इन तीनोंको कुरानमें श्रेष्ठ धाम कहा है. इन तीनोंमें वैकुण्ठधाम नश्वर चौदह लोकके अन्तर्गत आता है परन्तु अक्षरधाम और परमधाम दोनों ही अखण्ड हैं.

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित ।
अरस अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत ॥ ४५

अक्षरधामको प्रकाशमय धाम कहा है, जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता पहुँचा. उससे परे सर्वोच्च धाम परमधाममें परब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी एवं उनकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माएँ रहती हैं.

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत ।
पोहोच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत ॥ ४६

म्याराज (साक्षात्कार) के समय जिब्रील फरिश्ता अक्षरधामसे आगे नहीं जा सका. उनकी सीमा ही अक्षरधाम है, इसलिए वह ब्रह्मात्माओंके सर्वोच्च स्थान चिन्मय परमधाममें नहीं पहुँच पाया.

हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अरस वाहेदत ।
करे इलम लुदंनी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत ॥ ४७

परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ अद्वैत परमधाममें हैं. तारतम ज्ञान (इल्म लुदन्नी) ही इस परमधामका विवरण देता है. इस अद्वैत भूमिकामें अन्य किसीकी भी पहुँच नहीं है.

वाहेदत निसबत अरस की, जब जाहेर हुई खिलवत ।
ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अरस लज्जत ॥ ४८

परमधामका अद्वैत सम्बन्ध एवं मूलमिलावाका अन्तरङ्ग रहस्य जब तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट हो ही गया है तो इन वचनोंको सुनकर ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें परमधामका आनन्द अनुभव करेंगी.

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत ।
वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अरस अजीम उमत ॥ ४९

ये आत्माएँ सदा मूल मिलावामें विराजमान हैं. इनको ही पूर्णब्रह्म परमात्माकी पूर्ण पहचान है. यही ब्रह्मात्माओंका समूह परमधाममें अद्वैतस्वरूप कहा जाता है.

बीच म्याराज इसारतें, मासूक लिख भेजत ।
हांसी करने रूहन पर, ए जो फरेब देखाया इत ॥ ५०

रसूल मुहम्मदको दर्शनके समय परमात्माने अपना जो सन्देश सङ्केतके द्वारा समझाया वहीं कुरानमें लिखा गया है. क्योंकि इन अद्वैतस्वरूपा ब्रह्मात्माओंके साथ हँसी (मनोविनोद) करनेके लिए धामधनीने उन्हें यह मायाका झूठा खेल दिखाया है.

हक अरस नजीक सेहेरगसे, दोऊ हादी खोले द्वार ।
बैठाए अरस अजीममें, जो कह्या म्याराजें नूर पार ॥ ५१

वस्तुतः परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी एवं अखण्ड परमधाम ब्रह्मात्माओंके लिए प्राणनली (शहरग) से भी अति निकट हैं. ये (दोनों) बातें तभी ज्ञात हुई जब निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मेरे हृदयमें बैठकर तारतम ज्ञानके द्वारा पारके द्वार खोल दिए और ब्रह्मात्माओंको हम स्वयं परमधाममें

ही बैठी हुई हैं ऐसा अनुभव करवाया. इसी परमधामको साक्षात्कार (म्याराज) के समय रसूल मुहम्मदने अक्षर (नूर) से परे बताया है.

किन तरफ न पाई अरस हक की, माहें चौदे तबक ।
सो खोल दिए पट हादिएं, इलम ईसा के बेसक ॥ ५२

चौदह लोकोंके जीवोंमें किसीको भी परमधामका मार्ग नहीं मिला था. निजानन्द स्वामी सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीने भ्रान्ति निवारक तारतम ज्ञानके द्वारा अज्ञानका आवरण दूर कर परमधामका मार्ग प्रशस्त किया.

देखो मरातबा मोमिनो, बोले न म्याराज बिन ।
जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अरस रूहन ॥ ५३

ब्रह्मात्माओंकी महत्ता तो देखो ! वे परमधाम तथा साक्षात्कारके अतिरिक्त अन्य कोई चर्चा ही नहीं करती. परमात्माने कुरानमें परमधामके जो रहस्य गुप्त रखे थे वे इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए हैं.

म्याराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन ।
कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर या बिन ॥ ५४

साक्षात्कारके समय रसूल मुहम्मदको प्राप्त सङ्केतोंको ब्रह्मात्माएँ ही ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) के द्वारा स्पष्ट करती हैं. वस्तुतः परब्रह्मके हृदयकी गुह्य बातें ब्रह्मात्माएँ ही कह सकती हैं इनके अतिरिक्त कोई भी इसके लिए समर्थ नहीं है.

कै जोरा किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातर ।
तो भी आगूं आए ना सक्या, कहे जलें मेरे पर ॥ ५५

जिब्रील फरिश्ताने परमधाममें प्रवेश पानेके लिए रसूल मुहम्मदके निर्देशन पर अनेक प्रयत्न किए. उनके लिए एक कदम आगे भी बढ़ा तथापि वह आगे न जा सका और कहने लगा कि मेरे पङ्ख जल रहे हैं.

चढ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमन ।
जो रूहें उतरी लैलत कदरमें, सो चढ जाएंगे अरस वतन ॥ ५६

रसूल मुहम्मदने ध्यान द्वारा परमधाम पहुँच (चढ़) कर एवं पुनः लौट कर

दिखाया. ब्रह्ममुनियोंको मार्ग दिखानेके लिए ही उन्होंने ऐसा किया है. क्योंकि जो ब्रह्मात्माएँ महिमामयी ब्रह्मरात्रि (लैलतुलकद्र) में व्रज, रास और जागनी लीलाके लिए अपनी सुरता द्वारा अवतरित हुई हैं, वे उसी प्रकार पुनः परमधाम लौट जाएँगी.

इसारतें म्याराज में, जो लिख भेजियां हक ।
सो खोलें हम इसारतें, पढाएल रूहअल्ला के बेसक ॥ ५७

साक्षात्कार (म्याराज) के समय परब्रह्म परमात्माने रसूल मुहम्मदको साङ्केतिक शब्दोंमें अपना जो सन्देश भेजा उन सङ्केतोंका रहस्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज प्रदत्त संशय निवारक तारतम ज्ञानके द्वारा हमने स्पष्ट किया.

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर ।
तिन किनारें दरखत, जित बैठा जानवर ॥ ५८

रसूल मुहम्मदने साक्षात्कार (म्याराज) के वर्णनमें मीठे पानीके एक उज्ज्वल समुद्रका उल्लेख किया है. जिसके तट पर स्थित एक वृक्ष पर एक पक्षी (मुर्ग) बैठा है. [श्री प्राणनाथजीके अनुसार परब्रह्म परमात्माकी कृपाका ही वह मधुर जलका समुद्र है. उसके तट पर आज्ञारूपी वृक्ष पर श्यामाजीकी आत्मारूप पक्षी विराजमान है. उसके चोंचमें चुटकी भर खाक है अर्थात् माया जन्य खेल देखनेकी तुच्छ इच्छा लेकर श्यामाजी श्रीराजजीके आदेशके अधीन बैठी हुई है. रसूलने कहा है, वह पक्षी यह कहता था कि यदि मैं अपनी चोंचसे खाक छोड दूँ तो यह उज्ज्वल सागर अन्धेरा हो जाएगा. तात्पर्य यह है कि यदि श्यामाजी खेल देखनेकी इच्छा छोड दें तो उनकी अङ्गरूपा आत्माएँ भी अपनी माँग छोड़ देंगी फिर संसारके नश्वर सुख-दुःख देखे बिना उन्हें धामधनीकी कृपाका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होगा. इसीको सागरमें अन्धेरा छा जाना कहा है.]

अंदर मुरग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत ।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोलें मारफत ॥ ५९

रसूलने परमधाममें जिस पक्षी (मुर्ग) की बात की है वह परमात्माके आदेश

(हुक्म) रूप वृक्ष पर बैठा हुआ है. वहाँ पर इतना महान जिब्रील फरिश्ता भी पहुँच नहीं सका. इस प्रसङ्गकी यथार्थता ब्रह्मात्माएँ ही स्पष्ट कर सकतीं हैं.

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर ।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवें एह खबर ॥ ६०

वह पक्षी अपनी चोंचमें चुटकी भर खाक लेकर वृक्ष पर बैठा है. उस पक्षीके पङ्ख वहाँ पर नहीं जल रहे हैं ? (जबकि जिब्रील फरिश्ताके पङ्ख जलने लगे थे और वह आगे नहीं बढ़ सका था). कोई विवेकी जन इसको स्पष्ट करें.

हादिएं पूछ्या हक से, क्यों खाक धरी चोंच में ।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे ॥ ६१

साक्षात्कारके समय (यह दृश्य देखकर) रसूल मुहम्मदने परमात्मासे पूछा कि इस पक्षीने अपनी चोंचमें खाक क्यों रखी है ? तब परमात्माने उन्हें कहा कि उसकी अङ्गनाओंने खेल देखनेकी माँग की है. यही दोष (अपराध) उसे भी लगा जिसके कारण उसे संसारमें पाञ्चभौतिक शरीर धारण करना पड़ा.

लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी ।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदे म्याराज में साहेदी ॥ ६२

कुरानमें इस प्रकारका भी सङ्केत है कि यह मोहसागर नींदका समुद्र है, जिसे धामधनीने हम ब्रह्मात्माओंको कृपापूर्वक दिखाया है. इसमें भी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने आकर (तारतम ज्ञानके द्वारा) मेरे हृदयसे मोहका आवरण दूर कर दिया है. इस प्रकारकी साक्षी भी रसूल मुहम्मदने म्याराजके प्रसङ्गमें दी है.

ए जो मुरग म्याराज में अंदर, हर साइत यों कहेता था ।
जो छोडूं खाक चोंचसे, तो दरिया होए जाए अंधेरा ॥ ६३

साक्षात्कार (म्याराज) के समय रसूलने देखा कि परमधामके अन्दर यह पक्षी

हर घड़ी इस प्रकार कहता था, यदि मैं अपनी चोंचसे खाक छोड दूँ तो यह समुद्र अन्धेरा हो जाएगा.

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिसरी ।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी ॥ ६४

इस प्रसङ्गसे यह सङ्केत दिया है कि यह नींदका मोह सागर भी श्रीराजजीकी कृपासे बना हुआ होने से (तारतम ज्ञानके द्वारा) दूधके समान उज्ज्वल और मिश्रीके समान मीठा है. इसलिए यह सागर कभी भी अन्धेरा नहीं होगा. क्योंकि धामधनीने अपनी आत्माओं पर कृपा कर इसकी रचना करवाई है.

कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर ।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चलें ना होए क्यों कर ॥ ६५

'पक्षीके चोंचमें खाक है' कहकर यह सङ्केत किया जा रहा है कि श्यामाजी भी संसारमें नश्वर शरीर धारण कर सद्गुरुके रूपमें आई हैं. यह अन्धकारमय संसार ही सागर है (ब्रह्मात्माओंकी खेल देखनेकी इच्छा पूर्ण हुए बिना ब्रह्मात्माको छोड़कर) इस मोहसागरसे श्यामाजी (सद्गुरु) का जाना (चलना) कैसे सम्भव होगा ?

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्योंए ना होए ।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए ॥ ६६

परमात्माने अपने आत्माओंको कृपापूर्वक यह मोह सागर दिखाया है. वह कैसे अन्धकार मय रह जाएगा ? (वह तो तारतम ज्ञानसे प्रकाशित हो जाएगा.) श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु और ब्रह्मात्माओंमें इतनी क्षमता है कि वे चौदह लोकोंको भी अखण्ड कर देंगे.

नूर तजल्ला बीचमें, हक हादी रूहों खिलवत ।
हक से हादी रूहें नूरमें, अरस असल वाहेदत ॥ ६७

वस्तुतः तेजोमय अद्वैत परमधाममें धामधनी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ मूलमिलावामें बैठे हुए हैं. परमधाममें स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मासे अङ्गरूपा श्यामाजी एवं श्यामाजीसे उनकी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माएँ (व्यक्त होकर लीला करती) हैं, तथापि परमधाम सहित ये सभी अद्वैत स्वरूप हैं.

नूर तजल्ला बीचमें, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन ।
जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमिनों तन ॥ ६८

साक्षात्कार (म्याराज) के प्रसङ्गमें यह भी लिखा है कि तेजोमय परमधाममें ब्रह्मात्माओं तक दोष पहुँचा. जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता भी नहीं पहुँच सकता. वहाँ तो ब्रह्मात्माओंके चिन्मय शरीर हैं. (फिर वह दोष वहाँ कैसे पहुँचा ? वस्तुतः वह कोई अपराध नहीं था अपितु नश्वर खेल देखनेकी माँग मात्र थी.)

लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हांसी करत ।
हक हादी रूहें रूहअल्ला, होसी हांसी इन खिलवत ॥ ६९

इसलिए धनीजीने सभी ब्रह्मात्माओंका लेखा (हिसाब) अपने हाथमें रखा है क्योंकि वे अपनी आत्माओंके साथ हँसी कर रहे हैं. परमधाम मूलमिलावामें धामधनीके समक्ष श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी हँसी होगी.

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या माहें फुरमान ।
इन गुन्हेगारों के दिलको, अपना अरस कर बैठे मेहेरबान ॥ ७०

कुरानमें यह भी लिखा है कि म्याराजके समय रसूलने मोतियोंके मुख पर ताला (कुल्फ) लगा हुआ देखा अर्थात् ब्रह्मात्माएँ मौन (बेसुध) बैठी हुई थी. (अखण्ड परमधाममें रहकर भी नश्वर खेल देखनेकी इच्छा करने वाली) इन दोषी आत्माओंके हृदयको (इस संसारमें भी) धामधनी अपना आसन बनाकर बैठ गए (ब्रह्मात्माओंके नश्वर शरीरको भी इतना महत्त्व दिया.)

सो कुलफ कह्या फरामोस का, कह्या गुनाह रूहों का दिल ।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल ॥ ७१

वस्तुतः वह ताला अज्ञान अथवा मायाका था. सभी ब्रह्मात्माओंने मिलकर एकसाथ मायाका खेल देखनेकी इच्छा की थी. वही इच्छा ब्रह्मात्माओंके लिए अपराध सिद्ध हुआ.

फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल ।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल ॥ ७२

माया (अज्ञान) की नींदमें भूल जाना ही ब्रह्मात्माओंके हृदय पर दोष (अपराध)

सिद्ध हुआ. वही दोष (भूल) इनके हृदय पर तालेंके समान (कठोर आवरण) बन गया. इस भूल (विस्मृति) रूपी तालेकी कुञ्जी (चाबी) श्यामाजी (मुहम्मद) के हृदयका तारतम ज्ञान है. श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु ब्रह्मात्माओंको यही तारतम ज्ञान (जागृतबुद्धि) प्रदान कर उनकी अज्ञानता (विस्मृति-भूल) की निद्राको मिटा रहे हैं.

कहे महंमद सुनो मोमिनों, ए उमी मेरे यार ।
छोड दुनी ल्यो अरस को, जो अपना वतन नूर पार ॥ ७३

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, श्यामाजी (सद्गुरु) ने भी यही कहा है कि ये अनपढ़ (उभी-चातुर्यपूर्ण लौकिक ज्ञानसे अनभिज्ञ)) आत्माएँ ही मेरे श्रेष्ठ मित्र हैं. इसलिए नश्वर संसारको छोड़कर अखण्ड धामका मार्ग ग्रहण करो, अक्षरसे भी परे हमारा अक्षरातीत परमधाम है.

हम बंदे रूहें इन दरगाह के, कह्या दिल अरस मोमन ।
यारों बुलावें महंमद, करो सेजदा हजूर अरस तन ॥ ७४

हम आत्माएँ इसी परमधामके वासी हैं और हम ब्रह्मात्माओंको धामहृदया भी कहा गया है. श्यामाजी अपने आत्माओंको बुलाकर कह रही हैं कि परमधामके अपने चिन्मय शरीरके द्वारा धामधनीके चरणोंमें प्रणाम करो.

प्रकरण ३ चौपाई २६४

खुलासा इसलामका (धर्मका स्पष्टीकरण)

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन ।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखर सुख सबन ॥ १

सत्य धर्म (इस्लाम) का स्पष्टीकरण तारतम ज्ञानसे ही होता है. यही ज्ञान सभी (धर्मावलम्बियों) के मार्गको प्रकाशित कर देता है. (तारतम ज्ञानमें यह सामर्थ्य है कि) यह ज्ञान अखण्ड परमधामको इस नश्वर संसारसे भिन्न बतलाकर सत्य और असत्यका निरूपण करते हुए अन्तमें सभीको सुख पहुँचाता है.

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमन ।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन ॥ २

तारतम ज्ञानके कारण ब्रह्मात्माएँ कुरान एवं हदीसोंके गूढ़ रहस्योंमें भी सद्गुरु

श्री देवचन्द्रजी द्वारा प्रदत्त निर्देशन ही देख रही हैं. इस प्रकार तारतम ज्ञानके द्वारा प्राप्त सत्यधर्म (इस्लाम) के नियमोंका स्पष्टीकरण सभीको अखण्ड परमधामका मार्ग प्रशस्त करता है.

बका फना का बेवरा, पाया मगज सब का ए ।
हादी रूहें अरस से इजने, लैलत कदरमें उतरे ॥ ३

तारतम ज्ञानके द्वारा अखण्ड परमधाम तथा नश्वर संसारका विवरण एवं समस्त धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट हो गया. यह भी ज्ञात हुआ कि श्रीराजजीकी आज्ञासे श्यामाजी एवं उनकी अङ्ग रूपा आत्माएँ अखण्ड परमधामसे महिमामयी रात्रि (ब्रह्मरात्रि) में उतरी हैं.

हकें कह्या अलस्तो बे रब कुंम, कालू बले कह्या रूहन ।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन ॥ ४

कुरानमें यह उल्लेख है कि खेलकी रचनासे पूर्व परमधाम मूलमिलावामें परब्रह्म परमात्माने अपनी आत्माओंको कहा–''क्या मैं तुम्हारा स्वामी (धनी) नहीं हूँ ?'' तब आत्माओंने कहा –''निःसन्देह आप ही हमारे स्वामी हैं.'' तब परमात्माने कहा तुम मायाका खेल देखकर मुझसे विमुख हो जाओगी और मेरे सन्देशवाहक (रसूल) के वचनोंको भी नहीं मानोगी.

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फिरस्ते ।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के ॥ ५

धामधनीने श्यामाजीसे यह भी कहा कि तुम मायामें नितान्त भूल जाओगी. जिब्रील, इस्त्राफील आदि फरिश्ते तथा ब्रह्मात्माएँ इस बातकी साक्षी होंगी. उस समय मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा. तब तुम स्वयं जागृत होकर अपने समुदाय (ब्रह्मात्माओं) की साक्षी बन जाना.

चौथे आसमान लाहूतमें, रूहें बैठी बारे हजार ।
इन तसबी से पैदा होत हैं, फिरस्तों का सिरदार ॥ ६

कुरानमें कहा है, चौथे आसमान परमधाममें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं. उनकी वारंवार खेल देखनेकी रटनासे अक्षरब्रह्मकी बुद्धि (इस्त्राफील

फरिश्ता) का अवतरण इस संसारमें हुआ. [कतेब ग्रन्थोंके अनुसार अक्षरब्रह्मकी बुद्धिसे इस्त्राफील, जिब्रील तथा अजाजील आदि फरिश्ते प्रकट होते हैं, उनमें शिरोमणि इस्त्राफील कहलाते हैं.]

रूहें रहें दरगाह बीचमें, प्यारी परवरदिगार ।
खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार ॥ ७

परब्रह्म परमात्माकी प्यारी ब्रह्मात्माएँ सर्वोच्च धाम परमधाममें रहती हैं. इनको ही सर्वश्रेष्ठ (खासल खास) कहा है. इनकी प्रशंसाका कोई पारावार नहीं है.

उमत मेला महंमद का, इनकी काहूं ना पेहेचान ।
ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान ॥ ८

श्यामाजी स्वरूप सद्गुरुको इस संसारमें जो ब्रह्मात्माएँ मिलीं उनकी पहचान किसीको नहीं है. तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हुए बिना परब्रह्म परमात्मा तथा उनकी अङ्गरूपा इन आत्माओंकी पहचान नहीं हो सकती.

ए बात नहीं अटकलकी, होए साबित खुलें हकीकत ।
बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत ॥ ९

यह कोई अनुमानित कथन नहीं है. गूढ़ रहस्य यथार्थ रूपसे स्पष्ट होने पर ही यह कथन सत्य सिद्ध होगा. अन्तिम समयके सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी निर्दिष्ट सत्यधर्मके द्वारा ही परब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके अद्वैत सम्बन्धको समझा जा सकेगा.

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें ।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांएं ॥ १०

इन सद्गुरु (श्री देवचन्द्रजी) द्वारा निर्दिष्ट धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) में सन्देहका लेशमात्र भी स्थान नहीं है. स्वयं परब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर उन्हें तारतम ज्ञान दिया है, जिसकी प्रशंसा इस जिह्वासे नहीं हो सकती.

मासूक महंमद तो कह्या, बहस हुआ वास्ते इसक ।
और कलाम अल्लाह में कह्या, आसक नाम है हक ॥ ११

धामधनीने इस खेलमें श्रीश्यामाजी (श्रीदेवचन्द्रजी–रूहअल्ला–मुहम्मद) को इसलिए अपनी प्रियतमा (माशूका) कहा है कि परमधाममें उनके साथ प्रेमके विषयमें ही सम्वाद हुआ था. कुरानमें कहा गया है कि इसीलिए खेलमें परमात्मा स्वयं आशिक बने हैं.

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें ।
ए जाने हक हादी रूहें, अरस बका के माहें ॥ १२

दिव्य परमधामकी बैठक मूलमिलावामें श्रीराजजीके साथ श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी हुई इस वार्ताका रहस्य अन्य कोई भी व्यक्ति जान नहीं सकता. इस रहस्यको तो परमधामके रहनेवाले परमात्मा स्वयं श्री राजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही जान सकती हैं.

सुंनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत ।
महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत ॥ १३

परमधामसे अवतरित इन आत्माओंके समुदायको सुनते ही विश्वास करनेवाला संयमी तथा सत्यधर्मपर चलनेवाला समुदाय कहा है. श्यामास्वरूप निजानन्द स्वामीके इस ब्राह्मी समुदाय (ब्रह्मसृष्टियों) में लेशमात्र भी सन्देहका स्थान नहीं रहता.

सक सुभे सब सरियतों, यों कहे हदीस फुरमान ।
कोई जाने ना हक तरफको, ए अरस रूहें पेहेचान ॥ १४

सभी कर्मकाण्डी (बाह्यज्ञान–शराअके ज्ञाता) लोगोंके मनमें ही सन्देह बना रहता है. कुरान अथवा हदीसोंमें इस प्रकार कहा गया है कि ऐसे लोग परमात्माके मार्गको नहीं जानते. वस्तुतः आध्यात्मिक मार्गको तो परमधामकी आत्माएँ ही जानती हैं.

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए ।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए ॥ १५

ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी अद्वैत धामके निकट नहीं आ सकता. जब जिब्रील जैसे महान दूत (फरिश्ता) के पङ्ख भी जलने लगते हैं तो सामान्य जीव उस अखण्ड भूमिकाके दर्शन (अनुभव) कैसे कर पाएँगे.

जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन ।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन ॥ १६

जिस परमधामके दर्शन स्वयं जोशका फरिश्ता जिब्रील भी नहीं कर सका तो अन्य लोगोंकी तो बात ही क्या करें ? वस्तुतः परमधाम मूलमिलावाका रहस्य स्वयं श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही जानती हैं.

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन ।
रूह अल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमन ॥ १७

इस खेलकी रचना श्यामाजी तथा उनके अङ्गभूता ब्रह्मात्माओंके लिए हुई है और स्वयं श्यामाजी ब्रह्मात्माओंके लिए ही संसारमें आईं हैं. वे स्वयं सद्गुरु बनकर ब्रह्मात्माओंके लिए तारतम ज्ञान लेकर आईं. वस्तुतः यह सम्पूर्ण कार्य ब्रह्मात्माओंके लिए ही हुआ है.

इनों तन असल अरस में, तीन बेर उतरे माहें लैल ।
ए जाहेर लिख्या फुरमानमें, ए हकें देखाया खेल ॥ १८

इन ब्रह्मात्माओंका चिन्मय शरीर (पर-आत्मा) परमधाममें है. ये आत्माएँ इस महिमामयी रात्रिके तीन खण्डों (व्रज, रास और जागनी) में तीन बार खेल देखनेके लिए सुरता रूपमें अवतरित हुईं हैं. कुरानमें स्पष्ट लिखा है कि स्वयं परमात्माने इन आत्माओंको इस प्रकार (सुरताके द्वारा) यह खेल दिखाया है.

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेहेदी देखावन ।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवे वतन ॥ १९

ब्रह्मात्माएँ खेल देखनेके लिए आईं हैं और श्यामाजी उन्हें खेल दिखानेके

लिए सद्गुरु (महदी) के रूपमें अवतरित हुई हैं. इस प्रकार श्रीश्यामाजी तीन प्रकारके खेल (व्रज, रास और जागनी) दिखाकर आत्माओं तथा ईश्वरीसृष्टियोंको अखण्ड धाम (अपने-अपने धाम) ले जाएँगीं. [यहाँ पर तीन हादी मानने पर बशरी, मलकी और हकी स्वरूप अभिष्ट हैं.]

रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन ।
द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन ॥ २०

परमधामकी ब्रह्मात्माओंने नश्वर संसारका खेल देखा है इसलिए उनके प्रतापसे ही सभी जीवोंको भी अखण्ड मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) में स्थान प्राप्त हुआ. ये ही ब्रह्मात्माएँ तारतम ज्ञानके द्वारा अखण्ड परमधामके द्वार खोलकर स्पष्ट करेंगी कि अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्मकी पहचान कराने वाले तारतम ज्ञानका सूर्योदय (दिन) हो गया है.

रूहें उतरी नूर बिलंदसे, खलक पैदा जुलमत ।
दुनी दिल इबलीस कह्या, दिल मोमिन हक वाहेदत ॥ २१

ब्रह्मात्माएँ सर्वोच्च दिव्य परमधामसे अवतरित हुई हैं तथा जगतके अन्य जीव निराकार (अन्धकार) से उत्पन्न हुए हैं. इसीलिए संसारके जीवोंके हृदयमें दुष्ट शैतान (इबलीस, द्वैतभाव) का वास तथा ब्रह्मात्माओंके हृदयको परब्रह्मका अद्वैत धाम कहा गया है.

दिल मजाजी दुनीका, मोमिन हकीकी दिल ।
हक हादी रूहें निसबत, कही इबलीस दुनी नसल ॥ २२

संसारके जीवोंका हृदय मोहग्रस्त तथा ब्रह्मात्माओंका हृदय ब्रह्ममय (परमधाममें तल्लीन) कहा गया है. क्योंकि ब्रह्मात्माएँ श्यामाजी तथा धामधनीसे अभिन्न हैं किन्तु जगतके जीव अजाजील फरिश्ताके मनरूप इबलीसकी सन्तानें हैं.

तीन जिनसें पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन ।
करे तीनों की हिदायत, याको बूझसी महंमद दीन ॥ २३

इस जगतमें तीन प्रकारकी सृष्टि कही गई है तथा उनके मूल स्थान भी

अलग-अलग (तीन प्रकारके) कहे गए हैं. श्रीश्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर तीनोंको निर्देशन दिया है किन्तु सत्य धर्मको ग्रहण करनेवाली ब्रह्मात्माएँ ही उनके निर्देशनको समझ सकतीं हैं.

ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम ।
ए मेहेर मुतलक हकसे, करत जाहिर अल्ला कलाम ॥ २४

ब्रह्मात्माएँ ही उक्त स्पष्टीकरण समझकर सत्यधर्मके मार्गका अनुसरण कर पाएँगी. वस्तुतः श्रीराजजीकी असीम कृपासे ही वे कुरानके गूढ़ रहस्योंका स्पष्टीकरण करती हैं.

बिने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान ।
दीजे साहेदी मुसाफकी, ज्यों होए ना सके मुनकर जहान ॥ २५

इसलिए तीनों सृष्टियोंके नियम, आचरण स्पष्ट कर देने चाहिए जिससे सभीको तीनोंकी पहचान हो सके. साथ ही कुरानकी साक्षी भी दे देनी चाहिए जिससे सामान्य जन भी धर्ममार्गसे विमुख न हों.

जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल ।
हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल बिचल ॥ २६

जो सृष्टि जिस स्थानसे अवतरित हुई है उसे अपने मूलस्थानकी भलीभाँति पहचान करवा देनी चाहिए. जिन ब्रह्मात्माओं पर स्वयं परमात्माका आदेश कार्य कर रहा होता है उनके कार्यमें कोई भी परिवर्तन नहीं होता.

पांच बिने कही मुसलिम की, जिन लई सरीयत ।
कलमा निमाज रोजा कह्या, और जगात हज जारत ॥ २७

कर्मकाण्डका अनुसरण करनेवाले मुस्लिमोंके लिए कुरानमें पाँच नियम बताए गए हैं. वे इस प्रकार हैं-कलमा (मन्त्रपाठ), नमाज (नमन करना), रोजा (व्रत-उपवास रखना), जगात (दान देना) तथा हज्ज जियारत (तीर्थयात्रा करना).

जुबां से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज ।
जगात हिसा चालीसमा, कर सके न हज इलाज ॥ २८

शराअके लोग अपनी जिह्वासे कलमा पढ़ते हैं, अपने कर्तव्य पालनके लिए

नमाज तथा रोजा रखते हैं, अपनी आयके चालीसवाँ भागका दान करते हैं तथा यथाशक्ति तीर्थयात्रा करते हैं परन्तु इतने कर्तव्य पालन मात्रसे आत्म-कल्याण नहीं हो सकता (यह सब तो बाह्य आचरण मात्र हैं).

परहेज करे बदफैल से, बिने पांचोंसे पाक होए ।
सो आग न जले दोजखकी, पावे भिस्त तीसरी सोए ॥ २९

जो लोग दुष्कर्म करनेसे बचते हैं तथा पाँचों नियमोंके पालन करनेसे स्वयंको पवित्र मानते हैं, वे नरकाग्निमें नहीं जलेंगे, उन्हें तृतीय मुक्तिस्थलमें स्थान प्राप्त होगा.

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान लग आखर ।
पर अरस बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर ॥ ३०

कोई इन पाँच नियमोंके स्थान पर धर्मके दस नियमोंका पालन अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी) तक क्यों न करे किन्तु ब्रह्मात्माओंके हृदयके अतिरिक्त अन्य किसी भी जीवका हृदय परमात्माका धाम नहीं बन सकता.

जो पांच बिने ना करे, सो नाहीं मुसलमान ।
इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें कुरान ॥ ३१

जो इन पाँच नियमोंका पालन नहीं करता है उसे शराअके लोग मुसलमान नहीं मानते किन्तु कुरानमें इस प्रकार कहा गया है कि इनके ये नियम तो मात्र संसारका ही आचरण है.

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत ।
एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित ॥ ३२

कुरानमें यह भी कहा है कि कुरानके चामत्कारिक रहस्योंका स्पष्टीकरण तथा रसूल मुहम्मदका महत्त्व (पैगम्बरकी पैगम्बरी) एक धर्मकी स्थापना होने पर ही सत्य सिद्ध होंगे.

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड जुदे जात ।
सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोडे ना पुल सरात ॥ ३३

उनके मार्गदर्शक (हादी) रसूलने तो सभी मत मतान्तरके लोगोंको एक ही

धर्म पर लानेके लिए प्रयत्न किया किन्तु मोहग्रस्त जीव उनके वचनोंका उल्लंघन कर भिन्न-भिन्न मार्ग पर चलने लगे. ऐसे लोग नरकाग्निसे कैसे बच सकते जिनके भाग्यमें ही पुलेसिरात (तलवारके धारके समान तीक्ष्ण कर्ममार्ग) पर कटना लिखा है.

कहे महंमद मिस्कातमें, दुनी दिल पर सैतान ।
वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान ॥ ३४

मिस्कात नामक ग्रन्थमें रसूल मुहम्मदने कहा है कि सांसारिक जीवोंके हृदय पर शैतानका वास है. वे शरीर मात्रसे मनुष्य होंगे किन्तु उनका विश्वास विभिन्न पन्थोंमें बँटा हुआ होगा.

पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत ।
करसी लडाई आपमें, छूटे ना लग कयामत ॥ ३५

उन्होंने यह भी कहा है, मैं उन तथाकथित धर्मगुरुओं (स्वयंभू इमाम) से डरता हूँ क्योंकि वे ऐसे (विभक्त श्रद्धावाले) लोगोंको पथभ्रष्ट करेंगे. इसके कारण वे परस्पर कलह करते रहेंगे जो अन्त समय तक नहीं छूटेगा.

तो भए तिहतर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक ।
और बहतर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक ॥ ३६

इस प्रकार रसूल मुहम्मदके अनुयायी तिहत्तर पन्थोंमें बँट गए. उनमें-से एक नाजी फिरकाको ही श्रेष्ठ कहा गया है तथा शेष बहत्तर फिरकाओंमें बँटे लोगोंको नारकीय कहा है. इस प्रकार कुरानमें विश्वासी तथा अविश्वासी लोगोंका विवेकपूर्ण विवेचन किया गया है.

करी हकें हिदायत नाजीको, ए लिख्या माहें फुरमान ।
इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान ॥ ३७

कुरानमें इस प्रकार लिखा है कि परमात्माने इन नाजी समुदायके लोगोंको ही उद्दिष्ट कर उपदेश दिया है, जब सभी समुदायके लोग (तारतम ज्ञान प्राप्तकर) ब्रह्मसृष्टिके इस समुदायमें सम्मिलित होंगे तब संसारमें एक धर्मकी स्थापना होगी.

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत ।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ ना सकत ॥ ३८

कर्मकाण्डी(शराअके) लोगोंकी महत्ता मात्र नश्वर संसारमें होती है. शराअके पाँच नियम शरीरकी शुद्धिके लिए हैं. यह स्पष्ट है कि इस प्रकार कर्मकाण्डके इन पाँच नियमोंके अनुसार मात्र बाह्य आचरण करने वाले लोग इस क्षर जगतसे परे अखण्ड भूमिकाके मार्ग पर चढ़ नहीं सकते.

छोड सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत ।
फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत ॥ ३९

कर्मकाण्ड (शराअ) को छोड़कर उपासना (तरीकत) का मार्ग ग्रहण करने वाले लोग नश्वर जगतको पीठ देकर आगे बढ़ते हैं. इस प्रकार उपासनाका मार्ग ग्रहण करने पर भी लोग वैकुण्ठ पर्यन्त ही पहुँच सकते हैं.

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिलसों रोजा रमजान ।
दे जगात हिसा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान ॥ ४०

ऐसे लोग कलमा, नमाज तथा रमजान महीनेमें व्रत रखना आदि कार्य हृदयपूर्वक करते हैं और अपनी आयका उनतालीसवाँ भाग दानमें देकर मक्का (रसूलके घर) की यात्रा करते हैं.

कह्या दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन ।
सो छोड ना सके मलकूतको, आडी जुलमत हवा ला सुंन ॥ ४१

परमात्माके द्वारा 'होजा' (कुन) कहने मात्रसे पैदा हुए जगतके जीवोंका हृदय भी झूठा (मायावी) ही होता है. ऐसे लोग वैकुण्ठको छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि शून्य निराकार आदि उनके मार्गमें व्यवधान स्वरूप बन जाते हैं.

दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकडा गोस्त का ।
इबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह ॥ ४२

सांसारिक जीवोंका हृदय मायावी (अनित्य) अथवा मात्र मांसपिण्ड कहा गया है. इन जीवोंको 'इबलीस' के वंशज बताया गया है, वही उनके हृदय पर सम्राट बना हुआ है.

आदम औलाद दिल इबलीस, बैठा पातसाह दुसमन होए ।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए ॥ ४३

आदमके वंशज मनुष्यके हृदय पर यह इबलीस(मन) शत्रुके रूपमें सम्राट बन कर बैठा हुआ है. इसी इबलीसके कारण शून्य निराकारको ब्रह्म मानकर चलने वाले ये लोग शून्यको लाँघकर आगे कैसे जा सकते हैं ?

जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड न सक्या असल ।
तो दुनियां जो तिलसम की, सो क्यों सके आगे चल ॥ ४४

जिब्रील फरिश्ता रसूल मुहम्मदका निर्देशन प्राप्त करने पर भी जब अपने मूल अक्षरधामको छोड़कर आगे परमधामकी ओर नहीं बढ़ सका तो ये क्षणभङ्गुर संसारके जीव अपने मूल (शून्य-निराकार) को पार कर आगे कैसे जा सकते हैं ?

जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत ।
सो क्यों छोडे ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत ॥ ४५

परमात्माके द्वारा मात्र 'होजा' (कुन) कहनेसे उत्पन्न हुए जितने भी जीव हैं उनसे कभी भी शून्य-निराकार छूट नहीं सकता. वे अपने स्थानको कैसे छोड़ सकते हैं, जिनका मूल ही शून्य-निराकार है.

जो उतरे मलायक लैलमें, ताको असल नूर मकान ।
सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान ॥ ४६

जो ईश्वरीसृष्टि इस नश्वर जगतमें अवतरित हुई हैं उनका मूल स्थान अक्षरधाम है. वे यथार्थ ज्ञानका मार्ग ग्रहण किए बिना निश्चय ही अक्षरधाम नहीं पहुँच पाएँगी.

कलमा निमाज रोजा हकीकी, करे दिलसों रूह पेहेचान ।
हुआ बंदा बूझ जगातमें, दिल दीदार नूर सुभान ॥ ४७

जो परमात्माको प्रत्यक्ष समझकर हृदयपूर्वक मन्त्रजाप (कलमा), नमन (नमाज), व्रत (रोजा) आदि करता है तथा जिसको आत्माकी पहचान है एवं स्वयंको परमात्माके चरणोंमें समर्पित कर देता है वही अपने हृदयमें प्रियतम परमात्माका साक्षात्कार कर लेता है.

मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर ।
बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर ॥ ४८

वैकुण्ठ (मलकूत), शून्य (हवा), निराकार (जुल्मत) आदिको पार कर ही आगे जाया जाता है. परन्तु सद्गुरुके मार्गदर्शन बिना उस अखण्ड घरको कैसे पाया जा सकता है ?

जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोडे हवा मलकूत ।
दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत ॥ ४९

जिन आत्माओंको परमात्मा यथार्थ ज्ञान दिलाते हैं वे ही वैकुण्ठ तथा शून्यको पार कर सकती हैं. पवित्र हृदयसे किया गया आत्मिक स्मरण ही अक्षर धाम तक पहुँचा देता है.

जो फिरस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत ।
मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत ॥ ५०

अक्षरधामकी आत्माएँ ईश्वरीसृष्टि (फरिश्ते) वैकुण्ठमें नहीं रह सकतीं. क्योंकि वैकुण्ठ क्षर ब्रह्माण्डके अन्तर्गत है जबकि अक्षरब्रह्मका घर अक्षरधाम अखण्ड अविनाशी है.

बडा फिरस्ता नजीकी, जाको रूहअलअमीन नाम ।
जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम ॥ ५१

अक्षरब्रह्मके शक्तिशाली फरिश्तोंमें-से जिब्रील निकटतम है. उसे सत्यनिष्ठ (रूहलअमीन) कहा गया है. तभी उसने शून्य-निराकारको पार किया है. उसका मूलस्थान ही अक्षरधाम है.

पाई बडाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन ।
सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमन ॥ ५२

सभी पैगम्बरोंने इसी जिब्रील फरिश्ताके कारण ही महत्ता प्राप्त की है. ऐसा महान् जिब्रील फरिश्ता भी श्यामा तथा ब्रह्मात्माओंके मूलघर परमधाम तक नहीं पहुँच सका.

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्योंए कर ।
हिमायत लै महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर ॥ ५३

जिब्रील फरिश्ता किसी भी प्रकार अक्षरधामसे आगे परमधाम नहीं जा सका. रसूल मुहम्मदकी सहायता प्राप्त करने पर भी वह कहता है कि आगे जाते हुए मेरे पङ्ख जलने लगते हैं.

तन मोमन असल अरसमें, जो अरस अजीम बका हक ।
जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूं औरों खलक ॥ ५४

ब्रह्मात्माओंके चिन्मय शरीर (परात्मा) परमधाममें हैं जो परब्रह्म परमात्माका सर्वोच्च अखण्ड धाम है. जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता भी नहीं पहुँच सका, वहाँके लिए सांसारिक जीवोंकी बात ही क्या की जाए ?

हक हादी रूहें लाहूतमें, ए महंमद रूहों वतन ।
इसक हकीकत मारफत, तो हक अरस दिल मोमन ॥ ५५

परब्रह्म परमात्मा श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ इसी परमधाममें हैं. यही तो ब्रह्मात्मा तथा श्यामाजीका मूल घर है. इन्हीं ब्रह्मात्माओंमें अपने धनीका अखण्ड प्रेम, यथार्थ ज्ञान तथा पूर्ण पहचान है. इसीलिए इनके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है.

मारफत हक हकीकत, अरस रूहों को दई हक ।
जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक ॥ ५६

स्वयं परब्रह्म परमात्माने ही इन आत्माओंको अपनी पहचान तथा यथार्थ ज्ञान दिया है. परमात्माने इन्हें जो तारतम ज्ञान दिया है उसमें लेशमात्र भी सन्देहका स्थान नहीं है.

कही रूहें नूर बिलंद से, माहें उतरीं लैलतकदर ।
कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातर ॥ ५७

कुरानमें कहा गया है कि ब्रह्मात्माएँ सर्वोच्च परमधामसे इस महिमामयी रात्रि

(सांसारिक खेल) में अवतरित हुई हैं. परमात्माने इन्हीं आत्माओंको माया-मोहसे जागृत करनेका वचन दिया था. उन्होंने इनके लिए ही श्यामाजीको माशूक बनाकर सद्गुरुके रूपमें भेज दिया.

ए राह इसलाम मोमिनों, चढ उतर देखाई रसूल ।
आई तीन सूरतें इनों वास्ते, जानें रूहें जावें जिन भूल ॥ ५८

रसूल मुहम्मदने दर्शन (म्याराज) के समय अपनी सुरताको परमधाम पहुचाकर लौटाया और ब्रह्मात्माओंके लिए धर्मका मार्ग प्रशस्त किया. मुहम्मदकी तीनों सूरत (बशरी, मलकी, हकी) भी इसीलिए अवतरित हुईं कि ब्रह्मात्माएँ माया-मोहमें भूल न जाए.

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अरस कुंजी हाथ दे ।
दे खिताब इमाम को, अरस पट खोले इन वास्ते ॥ ५९

परब्रह्म परमात्माने इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए अपनी अङ्गना श्यामाजीको परमधामकी कुञ्जी (तारतम ज्ञान) देकर भेजा और उन्हें सद्गुरुकी उपाधि प्रदान की. इस प्रकार सद्गुरुने संसारमें आकर इन्हीं आत्माओंके लिए परमधामके द्वार खोल दिए.

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर ।
निगेहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदो पर ॥ ६०

परमात्माने इस्त्राफील और जिब्रील फरिश्तोंको भी अपना आदेश देकर भेजा और कहा कि मेरी इन विशेष आत्माओंका संरक्षण करना.

इलम लुदंनी भेजिया, सब करने बका पेहेचान ।
आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान ॥ ६१

धामधनीने सभी आत्माओंको परमधामकी पहचान दिलानेके लिए तारतम ज्ञान भेजा. वे स्वयं भी इनके लिए ही न्यायाधीश बन गए और उन्होंने ही अपने एकान्त स्थल (मूलमिलावा) की अन्तरङ्ग लीलाओंको प्रकट किया.

हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए तले ।
कोई और न बूझे इन को, मेरी वाहेदत के हैं ए ॥ ६२

धामधनीने स्वयं कहा है कि मैंने अपनी आत्माओंको अपने संरक्षणमें रखा है. संसारके जीव इन्हें पहचान नहीं पाएँगे क्योंकि ये तो मुझसे अभिन्न हैं.

मेरी कदीम दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन ।
ए इलम लुदंनी से माएने, करे हादी बीच रूहन ॥ ६३

इनसे मेरी अनादि मित्रता है. मायामें आकर जागृत होने पर ही इन्हें इस मित्रताका अनुभव हुआ है. ब्रह्मात्माओंके साथ इस प्रकारकी सभी चर्चाएँ सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजी तारतम ज्ञान के द्वारा किया करते थे.

अरस दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल ।
एती बडाई इनको दै, जो वाहेदत इनों असल ॥ ६४

इन्हीं आत्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है. ये ही आत्माएँ सत्यहृदया कही गईं हैं. इनको इतनी महत्ता इसीलिए दी गई है कि ये स्वयं परब्रह्मसे अभिन्न तथा अद्वैत हैं.

ए अरस बडा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर ।
जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर ॥ ६५

यह महान परमधाम ब्रह्मात्माओंका है. इसे तेजोमय ब्रह्मधाम कहा गया है. जिब्रील फरिश्ता भी यहाँ तक पहुँच नहीं पाया. यहाँ पर रसूलकी सुरता पहुँची और उन्होंने परब्रह्मसे परिसम्वाद किया.

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए ।
सो वास्ते रूहों दाखले, अब हादी देत मिलाए ॥ ६६

इस परिसम्वादके कितने शब्द प्रकट करवाए तथा कितने शब्दोंको गुप्त रखनेका आदेश दिया. ब्रह्मात्माओंको उदाहरण देनेके लिए ही ऐसा किया गया है. अब मेरे हृदयमें विराजमान सद्‌गुरु इन वचनोंको स्पष्ट कर रहे हैं.

कही पांच बिने मुसलिमकी, सोई पांच बिने मोमन ।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन ॥ ६७

मुस्लिमोंके लिए जो पाँच नियम बताए गए हैं वे ही पाँच नियम ब्रह्मात्माओंके लिए भी हैं. किन्तु शराएके लोग नश्वर संसारमें (सांसारिक भावसे) इन नियमोंका पालन करते हैं जबकि ब्रह्मात्माएँ परमधामका हार्दिक चिन्तन करतीं हैं.

अरस रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इसक ।
हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान मेहेर हक ॥ ६८

परमधामकी आत्माएँ सदैव धामधनीकी सेवामें हैं. इनके लिए सभी नियम प्रेमसे परिपूर्ण हैं. वस्तुतः इनमें ही परमात्माका यथार्थ ज्ञान एवं पूर्ण पहचान है तथा परमात्माकी कृपाकी पहचान भी इनको ही है.

चौदे तबक की जहानमें, किन तरफ न पाई अरस हक ।
सो किया अरस दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक ॥ ६९

चौदह लोकोंकी सृष्टिमें किसी भी जीवको परमधाम तथा परमात्मा (परब्रह्म) का मार्ग प्राप्त नहीं हुआ. जबकि परमात्माने ब्रह्मात्माओंके हृदयको अपना परमधाम बनाया. वस्तुतः अद्वैत सम्बन्धके कारण ही उन पर यह विशेष कृपा हुई है.

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर ।
ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर ॥ ७०

श्यामाजीकी आत्मा वस्तुतः धामधनीका ही तेज है तथा ब्रह्मात्माएँ श्यामाजीके ही अङ्गकी तेजस्वरूपा हैं. ये सभी ब्रह्मात्माएँ अद्वैत परमधाममें रहतीं हैं. इसीलिए इन सभीके मुखसे धामधनीकी ही चर्चा होती रहती है.

मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अरस में इनों असल ।
हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत माहें नकल ॥ ७१

अद्वैत धामसे ही ब्रह्मात्माएँ सुरता रूपसे इस नश्वर संसारमें आईं हैं. इनका मूल (चिन्मयस्वरूप) परमधाममें ही है. इसलिए धामधनी अपने चरणोंमें बैठी ब्रह्मात्माओंको जैसा आदेश देते हैं उसीके अनुरूप ही संसारमें इनके प्रतिबिम्ब स्वरूपोंमें व्यवहार होता है.

जो मोमन बिने पांच अरसमें, सो होत बंदगी बातन ।
जिन विध होत हजूर, सो करत अरस दिल मोमन ॥ ७२

ब्रह्मात्माओंके लिए कहे गए धर्मके पाँच नियम तो वस्तुतः परमधाममें ही अध्यात्मिक रूपसे सम्पन्न होते हैं. धामधनीके सान्निध्यमें जैसी उनकी

दिनचर्या होती है उसीके अनुरूप धामहृदया आत्माएँ नश्वर संसारमें भी आचरण करती हैं.

दिल अरस हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन ।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन ॥ ७३

ब्रह्मात्माओंको इसीलिए धामहृदया कहा है कि उनकी परआत्मा परमधाममें धामधनीके चरणोंमें है. रसूलने वारंवार इनको ब्राह्मी समुदाय इसीलिए कहा कि ये आत्माएँ परमधाम मूलमिलावामें धामधनीके चरणोंमें ही हैं.

महामत कहें ऐ मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर ।
भुलाए तुमें हांसीय को, वास्ते इसक खातर ॥ ७४

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने तुम पर अति कृपा की है. परमधाममें तुम्हारी हँसी करनेके लिए तथा अपने प्रेमका महत्त्व दर्शानेके लिए ही तुम्हें यह विस्मृति दी है.

भिस्त सिफायतका बेवरा (मुक्तिधामोंकी विशेषताओंका विवरण)

मोमिन आए अरस अजीम से, हमारी हकसों निसबत ।
दिया इलम लुदंनी हकने, आई हक बका न्यामत ॥ १

हम ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसारमें आईं हैं तथा पूर्णब्रह्म परमात्माके साथ हमारा शाश्वत सम्बन्ध है. उन्होंने ही प्रकट होकर हमें तारतम ज्ञान दिया है. यह तारतम ज्ञानरूपी सम्पदा अखण्ड परमधामसे ही आई है.

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहे ना ताए ।
अरस बका रूहें फिरस्ते, सब हदां देवें बताए ॥ २

ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) की यही पहचान है कि उससे कोई भी रहस्य छिपे नहीं रहते (सभी स्पष्ट हो जाते हैं). इतना ही नहीं यह तो अखण्ड परमधाम, ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टिकी पहचान एवं सभी नाशवान तत्त्वोंकी सीमा भी निर्धारित कर देता है.

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान ।
रूह अल्ला महंमद मेहेरथें, कहूं ले माएने फुरमान ॥ ३

अब मैं संसारमें उत्पन्न हुए जीवोंका थोड़ा-सा विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जिनकी पहचान स्वयं धामधनीने करवाई है. श्यामाजी स्वरूप सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीकी अपार कृपासे मैं कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करता हूँ.

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत ।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत ॥ ४

कुरानके अनुसार परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न जीवोंने कर्मकाण्ड (शराअ) को अनिवार्य रूपसे शिरोधार्य किया है. इस प्रकार कर्मके नियम अनुसार उपासना करनेवाले जीव वैकुण्ठ तथा शून्य-निराकार पर्यन्त पहुँच सकते हैं.

जो लगा वजूद को, ताए छूटे ना जिमी नासूत ।
पुल सरात को छोड के, क्यों पोहोंचे मलकूत ॥ ५

जो शारीरिक सुखोपभोगमें मग्न बने हैं, उनसे मृत्युलोकके बन्धन ही नहीं छूट सकते. ऐसे लोग तलवारके धारके समान कर्ममार्गको पार कर वैकुण्ठ तक कैसे पहुँच सकते ?

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन ।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन ॥ ६

चाहे सर्वसाधारण मनुष्य अथवा देवता तथा फरिश्ते (जिन) क्यों न हों किन्तु जो शारीरिक (कर्म) मार्गका अनुसरण करते हैं वे गूढ़ रहस्यको समझ नहीं पाते.

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन ।
सो क्यों पकडे वजूद को, पोहोंचे ना हकीकत बिन ॥ ७

जो अक्षरधामकी आत्माएँ है उनका मूलघर ही अखण्ड है. ऐसी आत्माएँ शारीरिक कर्मको क्यों ग्रहण करेंगी ? उनको ज्ञात ही है कि यथार्थ ज्ञानके बिना अपने घर पहुँचा नहीं जा सकता.

जो होवे अरस अजीम की, सो ले हकीकत मारफत ।
इनको इसक मुतलक, जिन रूह हक निसबत ॥ ८

परन्तु जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे यथार्थ ज्ञान तथा पूर्ण पहचानके आधार पर ही चलेंगी. ये तो निश्चय ही प्रेमकी प्रतिमूर्ति हैं तथा धामधनीके साथ ही इनका सम्बन्ध है.

रूहें फिरस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान ।
एक इसक दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान ॥ ९

ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि ये दो समुदाय हैं. इन दोनोंके अपने-अपने अखण्ड स्थान हैं. इनमें-से एक प्रेममें ओत-प्रोत हैं तो दूसरी उपासना व सेवामें संलग्न हैं. ये दोनों ही अपनी-अपनी पहचानके अनुरूप अपना मार्ग ग्रहण करेंगी.

उतरीं रूहें फिरस्ते लैल में, अपने रब के इजन ।
दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन ॥ १०

ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि अपने धनीकी आज्ञासे ही अपने-अपने धामसे इस संसारमें अवतरित हुई हैं. वे धनीजीकी आज्ञासे ही सभी जीवोंको संरक्षण देकर स्वयं तारतम ज्ञानके प्रभातमें अपने घर पहुँचेंगी.

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखर ।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर ॥ ११

कुरानमें कहा गया है कि अभी चार मुक्तिस्थल (वर्णित) हैं. भविष्य (आत्म-जागृतिके समय) में इनकी संख्या आठ हो जाएगी. हे ब्रह्मात्माओ ! इनका विवरण सुनो और विचारपूर्वक देखो.

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त ।
दो भिस्त अव्वल लैलमें, चौथी महंमद आए जित ॥ १२

कुरानमें वर्णित चार मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) का वर्णन इस प्रकार है- उनमें-से एक अव्याकृतके महाकारणमें स्थित नित्य वैकुण्ठ (मलकूती) मुक्तिस्थान है. व्रज तथा रास रात्रिके दो मुक्ति स्थान सबलिकके कारण और महाकारणमें हैं. चतुर्थ मुक्तिस्थान सबलिकके निर्मल चैतन्यमें है जहाँ ब्रह्मात्माओंको परमधामका सन्देश देकर रसूल मुहम्मद स्वयं पहुँचे हैं.

आखर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार ।
जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार ॥ १३

अन्तिम समयमें स्पष्ट होने वाले मुक्तिस्थलोंका विवरण इस प्रकार है जो आत्मजागृतिकी घडी (कयामतकी वेला) में स्थापित होंगे. अब उनका निरूपण करते हैं.

भिस्त अवल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई ।
भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही ॥ १४

इन नूतन वर्णित मुक्तिस्थलोंमें प्रथम वह (सत्स्वरूपका निर्मल चैतन्य) है जो ब्रह्मात्माओंकी सुरता (प्रतिबिम्ब) को धारण करने वाले उत्तम जीवोंका मुक्तिस्थल कहलाता है. दूसरा मुक्तिस्थल वह (सत्स्वरूपका महाकारण) है जो अक्षरधामसे अवतरित हुई ईश्वरीसृष्टिकी सुरताको धारण करने वाले जीवोंके लिए कहा गया है.

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम ।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम ॥ १५

तीसरा मुक्तिस्थल (जो अव्याकृतके कारण शरीरमें माना गया है) उन पैगम्बरोंके लिए है जिन्होंने संसारमें परमात्माका सन्देश फैलाया. इसी प्रकार चतुर्थ मुक्तिस्थल संसारके समस्त जीवोंका माना गया है (जो ब्रह्मात्माओंके प्रतापसे अखण्ड होंगे).

जिन किन राह हककी, लई सांच से सरियत ।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सांचे ना जलें कयामत ॥ १६

जिन जीवोंने प्रेममार्गका अनुसरण कर पवित्र (सत्य) हृदयसे कर्मके नियमोंका पालन किया है उनको भी तृतीय मुक्तिस्थलमें स्थान प्राप्त होगा. इस प्रकार सत्यका अनुसरण करनेवाले जीवोंको अन्तिम (कयामतके) समयमें नरकाग्निमें जलना नहीं पड़ेगा.

जो सरीयत पकड के, चल्या नहीं सांच ले ।
सो आखर दोजख जलके, भिस्त चौथी पावे ए ॥ १७

जो जीव कर्ममार्गका अनुसरण करते हुए भी सत्यनिष्ठ नहीं रह सके वे

नरकाग्निमें जलकर शुद्ध होंगे, उन्हें चतुर्थमुक्ति स्थलमें स्थान प्राप्त होगा.

रूहों अकस कहे नई भिस्तमें, ताए असल रूहों के तन ।
सो अरवा अरस अजीममें, उठें अपने बका वतन ॥ १८

सत्स्वरूपके निर्मल चैतन्यमें स्थित नूतन (वर्णित) प्रथम मुक्तिस्थानमें ब्रह्मात्माओंका प्रतिबिम्ब कहा गया है. वस्तुतः वह ब्रह्मात्माओंने मायाजन्य खेलमें धारण किए हुए शरीर का ही प्रतिबिम्ब (आकृति) है. परमधामसे अवतरित ब्रह्मात्माओंकी सुरता तो अखण्ड परमधाममें (अपने पर-आत्मामें) ही जाग ऊठेगी.

जोलों अपनी राह पावें नहीं, तो लों पोहोंचे ना अपने मकान ।
हादी हदों हिदायत करके, आखर पोहोंचावें निदान ॥ १९

आत्माएँ इस खेलमें आकर जब तक तारतम ज्ञानके द्वारा अपना मार्ग प्राप्त नहीं करेंगी तब तक अपने-अपने धाममें जागृत नहीं होंगी. सद्गुरु सभीको नश्वरताकी सीमाका निर्देशन देकर अन्तमें अपने स्थानमें पहुँचा देते हैं.

अब कहूं सिफात की, जो आखर महंमद की चाहे ।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊं रूहों को बताए ॥ २०

अब मैं रसूल मुहम्मद द्वारा जिन जीवोंकी अनुशंसा (सिफारिश) की गई है उनकी बात करता हूँ जो अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मदके चाहक हैं. उनका संक्षिप्त विवरण सुनो, मैं अपनी आत्माओंको यह विवरण दे रहा हूँ.

जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे ।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखर तीसरी हकी जे ॥ २१

जिनको रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा पहुँची है वे आत्माएँ तत्काल संसारसे विमुख होकर मुहम्मदके तृतीय स्वरूपकी शरणमें पहुँच गई हैं.

जिन छोड दुनी को ना लई, हकीकत मारफत ।
सो अरस बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत ॥ २२

जिन आत्माओंने सांसारिक माया मोहको छोड़कर यथार्थ ज्ञान तथा पूर्ण पहचानका मार्ग ग्रहण नहीं किया वे परमधाममें नहीं पहुँच सकीं. उन्हें रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा (सिफारिश) भी प्राप्त नहीं हुई.

जो दुनी को लग रहे, ताए अरस बका सुध नाहें ।
महंमद सिफायत लै मोमिनों, जाकी रूह बका अरस माहें ॥ २३

जो आत्माएँ सांसारिक माया मोहमें ही संलग्न रही हैं उन्हें अखण्ड परमधामकी सुधि नहीं है. वस्तुतः ब्रह्मात्माओंने ही रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा स्वीकारी है क्योंकि उनकी पर -आत्मा अखण्ड परमधाममें है.

अरस ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठोर ।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर ॥ २४

परमधामका मार्ग ग्रहण करो या सांसारिक सुख वैभवमें लगे रहो, दोनों एक ही स्थान पर (एकसाथ) प्राप्त नहीं होंगे. जिन्होंने नश्वर सुखोंके लिए सत्य मार्गको छोड़ दिया है उन्होंने ही अन्तिम मुहम्मदके पुकारको नहीं सुना.

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए ।
फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए ॥ २५

संसारके जीव अपने बुद्धिचातुर्यसे लौकिक ऐश्वर्य एवं परमधामका सुख दोनों एक साथ प्राप्त करना चाहते हैं तथा परमात्माको धोखा देना चाहते हैं, वे जीवनके अमूल्य अवसरको व्यर्थ ही गँवाकर चले जाते हैं.

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत ।
छोड दुनीको ना ले सक्या, हक बका मारफत ॥ २६

उन्हें कैसे ब्रह्मात्मा कहा जाए जिन्होंने यथार्थ ज्ञानको ग्रहण ही नहीं किया. वे तो सांसारिक सुखोंको छोड़कर अखण्ड परमधामकी पूर्ण पहचानका अनुभव भी प्राप्त नहीं कर सके.

चौदे तबक नबीके नूर से, सो सब कहे हम मोमन ।
सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अरस रोसन ॥ २७

ये चौदह लोक नबी पैगम्बरके तेजसे बने हैं, ऐसा मानकर सभी मुसलमान स्वयंको मोमिन (श्रेष्ठ आत्मा) कहते हैं. परन्तु ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) वही हैं जिनके हृदयमें अखण्ड परमधामके दिव्य ज्ञान (तारतम ज्ञान) का प्रकाश है तथा जिनके सभी सन्देह दूर हो गए हैं.

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खडे हम तले कदम ।
ले हकीकत पोहोंचे अरसमें, जिन सिर लिया महंमद हुकम ॥ २८

सभी समुदायके लोग अपने-अपने धर्मग्रन्थोंके आधार पर परमात्माकी खोज करते हैं और कहते हैं कि हम ही परमात्माके चरणोंमें बैठे हुए हैं. परन्तु वे लोग ही यथार्थ ज्ञान ग्रहण कर परमधाममें पहुँचे हैं जिन्होंने अन्तिम मुहम्मदके आदेशको शिरोधार्य किया है.

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोडी दुनियां मुतलक ।
कदम पर कदम धरे, पोहोच्या बका अरस हक ॥ २९

जिन ब्रह्मात्माओंको रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा प्राप्त हुई है उन्होंने निश्चय ही सांसारिक वस्तुओंको तुच्छ मानकर छोड़ दिया है. वे सद्गुरुके पदचिह्नों पर चलकर अखण्ड परमधाम पहुँच गई हैं.

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक ।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक ॥ ३०

परमात्मा सम्बन्धी यथार्थ ज्ञान तथा पूर्ण पहचानकी बातें अति सूक्ष्म हैं. जिनको रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा प्राप्त नहीं हुई है वे तो रूढ़िवादी परम्पराको ग्रहण करते हुए लकीरके फकीर बन कर परस्पर झगड़ रहे हैं.

तरक करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन ।
वजूद को भी मह करे, ए महंमद सिफायत मोमिन ॥ ३१

जो आत्माएँ संसारको त्याज्य समझकर सत्य परमात्माके अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण नहीं करतीं तथा जिन्होंने अपने शरीरको भी परमात्माके प्रति समर्पित कर दिया है, ऐसी ही ब्रह्मात्माओंकी अनुशंसा रसूल मुहम्मदने की है.

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई ।
धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी में रोसनाई ॥ ३२

रसूल मुहम्मदने इस प्रकार कहा है कि जो ज्ञान मुझे परमात्मासे प्राप्त हुआ है वही ज्ञान मेरे भाइयों (ब्रह्मसृष्टियों) को प्राप्त हुआ है. वे ही मेरे पदचिह्नों पर चलकर आएँगे और उनके मस्तक पर दिव्य ज्ञानका तेज होगा.

महंमद एही सिफायत, अरस बका हक रोसन ।
जो अरस अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमन ॥ ३३

रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा (सिफारिश) यही है कि ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्म परमात्माके दिव्य ज्ञानका प्रकाश है. यदि परमधामकी आत्माओंको भी कोई संदेह रह जाए तो वे कैसे ब्रह्मात्मा कहलाएँगी ?

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात ।
देखो अरस अरवाहों में, ए महंमद की सिफात ॥ ३४

ब्रह्मात्माओंके पास जाकर उन्हें पूछकर तो देखो, उन्हें परमधामके कण-कणका ज्ञान है. इस प्रकार ब्रह्मात्माओंकी विशेषता देखो, यही मुहम्मदकी अनुशंसा (सिफारिश) है.

किन विध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फिरस्ते ।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए ॥ ३५

परमधामकी ब्रह्मात्माओंके लक्षण क्या हैं ? अक्षरधामकी ईश्वरीसृष्टिके लक्षण क्या हैं ? ये सभी बातें वे आत्माएँ बताएँगी जिनको मुहम्मदकी अनुशंसा (सिफारिश) प्राप्त है.

इलम खुदाई लुदंनी, सब अरसों की सुध तिन ।
एक जरेकी सक नहीं, लै सिफायत हादी जिन ॥ ३६

ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) में सभी धामों (वैकुण्ठसे लेकर परमधाम पर्यन्त) की सुधि है. जिन्होंने निजानन्द स्वामी प्रदत्त यह तारतम ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें लेशमात्रका भी सन्देह नहीं है.

अरस रूहें सब विध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर ।
महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर ॥ ३७

परमधामकी आत्माएँ वहाँकी सभी सम्पदा-हौजकौसर ताल, यमुनाजी, भूमि, पशु-पक्षी आदिको सर्व प्रकार जानती हैं. श्यामावतार श्री देवचन्द्रजीके प्रतापसे ब्रह्मात्माओंको सभी जानकारी है.

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली ।
अरस आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली ॥ ३८

परमधाममें यमुनाजी कहाँसे प्रकट हुई है, किस प्रकार आगे बढ़ी है तथा रङ्ग महलके आगे कितनी दूर तक बह रही है और कहाँ जाकर समा जाती है ? यह सब ब्रह्मात्माओंको ज्ञात है.

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए ।
किन विध टापू बीचमें, ए सब सुध मोमिन देवें बताए ॥ ३९

हौज कौसर तालकी स्थिति क्या है, उसके चारों ओर बने पाल तथा घाटोंकी शोभा कैसी है, किस प्रकार बीचमें टापू महल है ? ये सभी सुधि ब्रह्मात्माएँ दे सकतीं हैं.

जोए अरस के किस तरफ है, किस तरफ हौज अरस के ।
नूर अरस की गलियां, अरस अरवा जानें ए ॥ ४०

श्री यमुनाजी, रङ्गमहलके किस ओर है तथा हौज कौसर ताल किस ओर है ? परमधामकी तेजोमयी गलियाँ कैसी हैं ? यह सभी ब्रह्मात्माएँ ही जानती हैं.

बारीक गलियां अरस की, मोमिन भूलें ना इत ।
अरवा अरसकी रात दिन, याही में खेलत ॥ ४१

परमधामकी सूक्ष्म गलियोंकी शोभा ब्रह्मात्माएँ संसारमें आकर भी नहीं भूलती, क्योंकि परमधामकी ये आत्माएँ रात-दिन वहीं तो खेला करतीं हैं.

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान ।
जोए हौज अरस जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान ॥ ४२

जिनके लिए हजरत मुहम्मदने अनुशंसा की है उन ब्रह्मात्माओंकी पहचानके ये लक्षण हैं कि यमुनाजी, हौजकौसर ताल तथा परमधामकी भूमिके कण-कणकी पहचान इनको है.

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर ।
महंमद सिफायत जिन को, तिन से छिपी रहे क्यों कर ॥ ४३

श्रीराजजीके तेजोमय स्वरूपके प्रकाशसे प्रकाशित परमधामकी भूमि, वन,

उपवन, पशु, पक्षी वे सब उन आत्माओंसे कैसे छीपे रहेंगे ? जिनके लिए रसूलने अनुशंसा की है.

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर ।
सो देखो अरस अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद का जहूर ॥ ४४

श्रीराजजीके तेज (नूर) से श्री श्यामाजी तथा श्रीश्यामाजीकी तेज (अङ्ग) स्वरूपा ब्रह्मात्माएँ हैं. देखो, इस संसारमें भी परमधामकी आत्माओंमें श्यामाजीके द्वारा दिए गए तारतम ज्ञानका प्रकाश पहुँचा हुआ है.

हक हादी रूहनसों, इत खेलें माहें मोहोलन ।
ए रहें हमेसा अरस में, हौज जोए बागन ॥ ४५

परमधाममें धामधनी श्री राजजी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ विभिन्न भवनोंमें लीला विहार करते हैं. ये ब्रह्मात्माएँ सदैव परमधाममें ही रहती हैं और हौजकौसर ताल, यमुनाजी तथा वन-उपवनोंमें क्रीड़ा करती हैं.

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात ।
तित रह्या तैसाही बन्या, ए बका बागोंकी बात ॥ ४६

परमधामके वन-उपवनकी यह विशेषता है कि वहाँसे मेवा, फल, फूल, मूल, पात इत्यादि इच्छित वस्तुएँ प्राप्त करने पर भी वे मूलरूपमें वैसी ही बनी रहती हैं (तोड़ लेने पर भी मूलमें कोई न्यूनता नहीं होती.)

एक बाल न खिरे पसुअन का, ना गिरे पंखी का पर ।
कोई मोहोल ना कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर ॥ ४७

परमधाममें पशुओंका एक बाल भी नहीं गिरता और पक्षियोंका पङ्ख भी नहीं गिरता. वहाँके भवन आदि भी कभी पुराने नहीं होते. दिन-प्रतिदिन उनकी शोभा बढ़ती ही जाती है.

इत नया ना पुराना, ना कम ज्यादा होए ।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए ॥ ४८

परमधाममें कोई वस्तु नयी या पुरानी नहीं होती और न ही कम या अधिक ही होती है. इस अद्वैत धाममें कभी भी द्वैत भावनाकी आशङ्का नहीं रखनी चाहिए.

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार ।
हक बका अरस सब का, तिन इतहीं पाया दीदार ॥ ४९

महामति कहते हैं जिन आत्माओंने यहाँ अनुशंसा प्राप्त की है वे सभी सावचेत हो गईं हैं. उन्होंने इस संसारमें बैठे-बैठे ही धामधनी तथा अखण्ड परमधामका साक्षात्कार कर लिया है.

प्रकरण ५ चौपाई ३८७

इलम का बेवरा नाजी फिरका (तारतमज्ञान एवं ब्रह्मात्माओंका विवरण)

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद ।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अरस सबद ॥ १

अब मैं रसूल मुहम्मद पर अवतरित कुरान तथा हदीसकी बात कहता हूँ. जो ब्रह्मात्माएँ होंगी वे इनमें-से परमधामकी बात ग्रहण करेंगी.

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन ।
तिनको सारों ढूंढिया, सो एक न पाया किन ॥ २

वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें कहा है कि परमात्मा एक है और वह सबसे भिन्न (विशेष) है. उसी एक परमात्माको सभीने ढूँढ़ा परन्तु किसीने भी प्राप्त नहीं किया.

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर ।
सब कहे हमों न पाइया, कर कर थके दौर ॥ ३

सभी कहते हैं कि परमात्मा एक है परन्तु उस अविनाशी परमात्माका धाम निश्चित रूपसे कोई नहीं कह सका. सबका कहना है कि हम उसे प्राप्त नहीं कर सके यद्यपि वे साधनाएँ (दौड़) करते हुए थक गए.

सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक ।
सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक ॥ ४

सभी धर्मग्रन्थोंमें उल्लेख है कि एक ही परमात्मासे इस नाना रूप संसारका विस्तार हुआ है. किन्तु कोई भी यह बात नहीं कह सकता कि वह अद्वैत (एक) परमात्मा इस ओर है.

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत ।
ढूंढ ढूंढ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित ॥ ५

उस परमात्माको किसीने भी प्राप्त नहीं किया जिसके विषयमें रसूल मुहम्मदने भी कहा था कि वह एक है. उसीको ढूँढते हुए उनके अनुयायी भी विभिन्न समुदायोंमें बँट गए परन्तु किसीने कहीं भी परमात्माको नहीं पाया.

ना कछू पाया एक को, ना उमत अरस ठौर ।
ना पाया अरस हौज जोए को, जाए लगे बातों और ॥ ६

न वे लोग एक अद्वैत परमात्माको ही पा सके और न ही उनकी अङ्गना ब्रह्मात्माओं तथा उनके धाम परमधामको पा सके. परमधामके ताल तथा यमुनाजीकी भी सुधि उन्हें नहीं हुई. इसीलिए वे बाह्यदृष्टिसे संसारके कर्मकाण्डकी बातें करने लगे.

नबे बरस हजार पर, पढते गुजरे दिन ।
लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन ॥ ७

रसूल मुहम्मदके पश्चात् एक हजार नब्बे वर्ष व्यतीत होने पर कयामत होनेकी बात कुरानमें लिखी है. कई लोगोंने इतने दिन कुरान पढते हुए व्यतीत किए किन्तु किसीने भी कयामतके उस दिनको नहीं समझा.

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब ।
किन एक न बका पाइया, दौड दौड थके सब ॥ ८

मृत्यु लोकके मानवोंसे लेकर स्वर्गके देवताओंने भी ब्रह्म ज्ञान प्राप्तिके लिए कई साधनाएँ कीं. वे सभी साधना पथमें दौड़ते हुए थक गए परन्तु किसीने भी अखण्ड धामकी प्राप्ति नहीं की.

यों गोते खाए बीच फना के, ला सुंन ना उलंघी किन ।
ढूंढ ढूंढ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन ॥ ९

इस प्रकार विभिन्न प्रकारकी साधना करने पर भी सभी साधक नश्वर ब्रह्माण्ड अर्थात् भवसागरमें ही गोते खाते रहे. कोई भी शून्य-निराकारको पार नहीं कर सके. सभी साधक खोज करते हुए थक गए परन्तु कोई भी अखण्ड धाम तक पहुँच नहीं सका.

लुदंनी से पाइए, जो है इलम खुदाए ।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इब्तदाए ॥ १०

तारतमज्ञानके द्वारा ही अखण्ड धामकी प्राप्ति हो सकती है. यही ज्ञान ब्रह्मज्ञान कहलाता है. इसके बिना आदि कालसे लेकर आज पर्यन्त सभी साधक हार कर रह गए.

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर ।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर ॥ ११

कतेब ग्रन्थोंमें जिस प्रकार लिखा है मैं उसीकी चर्चा यहाँ पर कर रहा हूँ. वहाँ यही लिखा है कि एक (ब्रह्मात्माओंका) समुदाय ही परमतत्त्वको प्राप्त कर सकेगा. उसीके पास अद्वैत परमात्माके दिव्य ज्ञानका प्रकाश होगा.

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक ।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक ॥ १२

कुरानमें लिखा है कि परमात्मा एक हैं तथा रसूल मुहम्मद भी सत्य हैं. उन लोगोंको अविश्वासी (काफिर) समझना चाहिए जो इस तथ्य पर सन्देह रखते हैं.

एक खुदा हक महंमद, अरस बका हौज जोए ।
उतरी अरवाहें अरस की, चीन्हो गिरो नाजी सोए ॥ १३

कुरानमें यह भी लिखा है कि परमात्मा एक हैं उनके अंशस्वरूप मुहम्मद भी सत्य हैं अखण्ड परमधाममें हौज कौसर ताल तथा यमुनाजी हैं. उसी परमधामसे ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें अवतरित हुई हैं, इस नाजी समुदाय(मुक्तात्माओं)की पहचान करो.

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए ।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के ॥ १४

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख किया है कि सारे संसारका ज्ञान इस्राईलके वंशज मूसा पैगम्बरके ज्ञान तक नहीं पहुँच पाता.

कहे फुरमान इलम मूसे का, और बडा इलम खिजर ।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर ॥ १५

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि मूसा पैगम्बरके ज्ञानसे ऊँचा ज्ञान खिजर पैगम्बरका है. इन सब ज्ञानको एकत्र करने पर भी सागररूप ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान-खुदाई इल्म) की एक बूँदके समान नहीं हो सकता.

फिरके इकहतर मूसा के, हुए ईसा के बहतर ।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर ॥ १६

मूसा पैगम्बरके अनुयायी इकहत्तर समुदायोंमें बँट गए. इसी प्रकार ईसा पैगम्बरके अनुयायी बहत्तर समुदायोंमें बँट गए. रसूल पैगम्बरने कहा कि उनमें-से एक समुदायको ही परमात्माका निर्देशन प्राप्त हुआ है.

महंमद के तिहतर हुए, तिनको हुआ हुकम ।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम ॥ १७

रसूल मुहम्मदके अनुयायी भी तिहत्तर समुदायोंमें बँट गए थे. उन सबको उन्होंने आदेश दिया कि जिस समुदायको परमात्माका निर्देशन प्राप्त है तुम सभी उसी समुदायमें सम्मिलित हो जाओ.

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखर ।
और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहतर ॥ १८

जिस समुदायने परब्रह्म परमात्माके मार्गको ग्रहण किया है वही अन्त समय (कयामतके दिन) ब्रह्मसृष्टियोंका समुदाय (नाजी गिरोह) है. शेष सभी समुदाय नरकगामी होंगे जो एक परमात्माको न मानकर बहत्तर समुदायोंमें बँट गए हैं.

दुनियां चौदे तबकमें, सोई नाजी गिरो है एक ।
आखर जाहेर होएसी, पर पहेले लेसी सोई नेक ॥ १९

इस नश्वर जगतके चौदह लोकोंमें एक ही समुदाय ब्रह्मसृष्टियोंका समुदाय है (जो एक परमात्माके प्रति विश्वास रखनेसे नाजी कहलाता है), वह अन्तिम समय (कयामतके दिनों) में प्रकट होगा. जो सर्वप्रथम इस

समुदायको पहचानकर उसमें सम्मिलित होगा, उसीकी महिमा बढ़ेगी.

महामत कहें ऐ मोमिनो, ल्यो हकीकत कुरान ।
ढूंढो फिरके नाजीको, जो हैं साहेब ईमान ॥ २०

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! कुरानकी इस यथार्थताको तुम पहचानो और ब्रह्मसृष्टिके (नाजी) समुदायको ढूँढो जिनका परब्रह्म परमात्माके प्रति पूर्ण विश्वास है.

प्रकरण ६ चौपाई ४०७

हककी सूरत (परब्रह्म परमात्माका स्वरूप)

हाए हाए देखो मुसलिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत ।
हक सूरत अरस माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत ॥ १

बड़े खेदकी बात है, तुम उन बाह्य आचरणवाले मुसलमानोंको तो देखो ! जिन्होंने कुरानका यथार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं किया है. वे लोग परमात्माके स्वरूप तथा परमधामको ही नहीं मानते हैं, जिस परमात्माने रसूल मुहम्मदको अखण्ड निधि प्रदान की है (उनको वे निराकार मानते हैं.)

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबोंने दौर ।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अरस बका ठौर ॥ २

मृत्युलोकसे लेकर स्वर्गादिके सभी जीवोंने अपनी-अपनी साधनाएँ कीं, परन्तु किसीने भी परमात्माके स्वरूप तथा उनके अखण्डधामके दर्शन नहीं किए.

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक ।
खोज खोज सुंन में गए, कोई आगूं न हुए बेसक ॥ ३

जगतके सभी प्राणियोंने खोज की परन्तु किसीने भी परमात्माके स्वरूपकी जानकारी नहीं पाई. सभी जीव खोज करते हुए शून्यमें समा गए. उससे आगे सत्य ज्ञानको प्राप्त कर कोई भी निश्शङ्क नहीं हुए.

दौड थके सब सुंन लों, किन ला हवा को न पायो पार ।
तब खुदा याही को जानिया कहे निरंजन निराकार ॥ ४

सभी साधक शून्य मण्डलमें ही थक गए, किसीने भी शून्य-निराकारको पार

नहीं किया. इसीलिए उन्होंने शून्यको ही परमात्मा माना और उसे निराकार तथा निरञ्जन कह दिया.

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत ।
बोहोत करी रद बदलें, वास्ते सब उमत ॥ ५

सभी पैगम्बरोंके अन्तमें रसूल पैगम्बर आए और उन्होंने कहा कि मैंने परमात्माके स्वरूपको पाया है. मैंने ब्रह्मात्माओंके लिए उनसे बहुत परिचर्चा भी की है.

अरस बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर ।
और देखी अरवाहें अरस की, कहे मैं हकका पैगंमर ॥ ६

रसूल मुहम्मदने कहा कि मैंने अखण्ड परमधाममें हौजकौसर ताल, यमुनाजी, यमुनाजीका जल, वन-उपवन, चिन्मय भूमि, पशु-पक्षी तथा परमधामकी आत्माएँ देखी हैं. मैं उसी परमात्माका सन्देशवाहक बनकर आया हूँ.

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हकसों बडी मजकूर ।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर ॥ ७

रसूलने यह भी कहा कि मैंने असंख्य अखण्ड निधियाँ देखी हैं तथा परमात्मासे भी बहुत-सी बातें कीं है. इस प्रकार उन्होंने इस नश्वर संसारमें परमात्माके अखण्ड ज्ञानको फैलाया.

कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखरत ।
हिसाब ले भिस्त देएसी, आखर करसी कयामत ॥ ८

उन्होंने और भी कहा, परमात्माने मुझे वचन दिया है कि वे अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी) में आएँगे. वे सभी जीवोंके कार्योंका लेखा-जोखा लेंगे और उन्हें कर्मानुसार मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) का सुख देंगे तथा अन्तमें कयामत (लय) करेंगे.

वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान ।
सो आखर को आवसी, तब काजी होसी सुभान ॥ ९

रसूलने यह भी कहा, मैं ब्रह्मात्माओं (खास उमत) के लिए परमात्माका

सन्देश (कुरान) लेकर आया हूँ. वे आत्माएँ अन्तिम समयमें आएँगी तब स्वयं परमात्मा न्यायाधीश बन कर प्रकट होंगे और सबको न्याय देंगे.

जो इन पर यकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक ।
जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखर दोजक ॥ १०

उन्होंने और भी कहा, जो लोग उक्त बातों पर विश्वास करेंगे उन्हें निश्चय ही मुक्तिस्थलोंमें स्थान मिलेगा और जो इन बातोंको अस्वीकार करेंगे उन्हें अन्तमें नरककी आगमें जलना पड़ेगा.

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार ।
ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार ॥ ११

उस समय स्वयं परमात्मा न्यायाधीश बनकर बैठेंगे. तारतमज्ञानके प्रकाशमें सभीको उनके दर्शन होंगे. महिमामयी इस रात्रिमें वे सभी जीवोंका लेखा-जोखा लेंगे. इस महिमामयी रात्रिके तीसरे खण्ड (जागनी लीला) में तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलेगा.

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक ।
तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक ॥ १२

उस समय सभी पैगम्बर ब्रह्मात्माओंके साथ आएँगे, तब एक श्रेष्ठ मेला (जागनी रास) होगा. उस समय दुष्कर्म करनेवाले संसारके जीवोंको नरकाग्निमें जलना पड़ेगा.

जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे ।
ताए सब पैगंमर यों कहें, तुम छूट न सको हम से ॥ १३

इस प्रकार नरकाग्निमें सन्तप्त हुई दुनियाँ पैगम्बरोंके पास जाएगी. तब सभी पैगम्बर उनको कहेंगे कि तुम हमारे द्वारा इस सन्तापसे मुक्त नहीं हो पाओगे.

कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हकसों होए न बात ।
तुम जाओ महंमद पें, वे करसी सबों सिफात ॥ १४

उस समय सभी पैगम्बर यह कहेंगे कि हम स्वयं लज्जित हैं, हम परमात्मासे बात नहीं कर सकते. तुम अन्तिम मुहम्मदकी शरणमें जाओ वे ही न्यायाधीश बने हुए परमात्मासे तुम्हारी अनुशंसा (सिफारीश) करेंगे.

ए बात पसरी दुनीयमें, जो कोई ल्याया यकीन ।
सो नाम धराए मुसलिम, माहें आए महंमद दीन ॥ १५

यह बात संसारमें फैल गई. जिस किसीने इस पर विश्वास किया वह धर्मनिष्ठ बनकर अन्तिम मुहम्मदकी शरण (धर्म) में आ गया.

खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनी महंमद के नूर ।
इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर ॥ १६

कुरानमें इस प्रकार कहा है कि परमात्माके तेजसे मुहम्मद हैं एवं यह सृष्टि मुहम्मदके तेजका ही विस्तार है. जो इस बात पर शङ्का करेगा वह धर्मसे दूर रहेगा.

कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक ।
कै जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक ॥ १७

कुछ लोगोंने इस बात पर पूर्ण विश्वास किया तो अनेक लोग बिना विश्वासके ही रह गए. अनेक लोग मुखसे विश्वासकी बात करते हैं परन्तु हृदयमें विश्वास नहीं होता, उनको कुरानमें मिथ्याचारी (मुनाफिक) कहा है.

केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर ।
एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर ॥ १८

कितने लोग स्वयंको मोमिन कहते हैं किन्तु हृदयमें कपटभाव रखते हैं. उनमें-से एक नाजी समुदाय ही विश्वासी रहा, शेष बहत्तर नारकीय बन गए.

कह्या फिरके नाजीय को, होसी हकको हिदायत ।
सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखरत ॥ १९

कुरानमें यह भी कहा है कि एक नाजी(मुक्तात्मा) समुदायको ही परमात्माका निर्देशन प्राप्त होगा. सभी समुदायके लोग इसीमें सम्मिलित होंगे, तब अन्तमें सभीका धर्म एक ही हो जाएगा.

तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत ।
ए कौल तोड जुदे पडत हैं, सो कौल मेहेदी करसी साबित ॥ २०

तब कुरानके चमत्कारपूर्ण अर्थ सत्य सिद्ध होंगे तथा रसूल मुहम्मदकी

पैगम्बरी भी सत्य सिद्ध होगी. कुछ लोग कुरानके उक्त वचनोंको न मानकर अलग होंगे किन्तु इमाम महदी उन वचनोंको सत्य सिद्ध कर देंगे.

कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक ।
तिन को न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक ॥ २१

कुरानमें ऐसा उल्लेख है कि परमात्मा एक हैं तथा उनके साक्षी रसूल मुहम्मद हैं. जो इस तथ्य पर शङ्का करेंगे उन्हें मोमिन (श्रेष्ठ आत्माएँ) नहीं कहा जाए.

जो हक बका सूरत में, मुसलिम ल्यावें सक ।
तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक ॥ २२

परमात्माके अखण्ड स्वरूपके प्रति यदि मुस्लिम सन्देह करेंगे, तो परमात्मा कैसे एक कहलाएँगे तथा मुहम्मद भी कैसे सत्य कहलाएँगे ?

हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हकको निराकार ।
जो जहूदों ने पकड्या, इनों सोई किया करार ॥ २३

बड़े खेदकी बात है कि रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाने वाले मुस्लिम परमात्माको निराकार कहते हैं. यहुदियोंने जिस प्रकार ब्रह्मको निराकार कहा था इन्होंने भी वही सिद्ध कर दिया.

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद ।
खुदा महंमद वाहेदतमें, सो कलाम होत हैं रद ॥ २४

यदि परमात्माको निराकार कहते हो तो फिर रसूल मुहम्मदके वचन कैसे सत्य सिद्ध होंगे ? रसूलने तो कहा है कि मैंने अद्वैत भूमिकामें परमात्मासे परिचर्चा की है, फिर तो वह सारी बातें निरस्त हो जाएँगी.

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान ।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान ॥ २५

अधर्मी लोग तो परमात्माको निराकार कह सकते हैं किन्तु धर्मनिष्ठ मुसलमान ऐसा कैसे कह रहे हैं ? यदि स्वयंको रसूल मुहम्मदके धर्ममें मानते हो तो यहाँ पर रसूलके प्रति तुम्हारा विश्वास कहाँ रहा ?

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर ।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर ॥ २६

परमात्मा एक हैं और रसूल उनके सच्चे दूत हैं. यह बात अधर्मी लोग कैसे स्वीकारेंगे ? रसूलने तो परमात्माके स्वरूपकी साक्षी दी और परमात्माने उन्हें अपना सन्देशवाहक (दूत) माना.

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान ।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान ॥ २७

कुरानमें ऐसा लिखा है, जो खुदाकी साक्षी देगा वह खुदाके समान माना जाएगा. एक परमात्माको छोड़कर अन्य कोई है ही नहीं ऐसा कहने पर ही तो रसूल मुहम्मद श्रेष्ठ (सत्य) कहलाए हैं.

महामत कहें सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर ।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर ॥ २८

महामति कहते हैं, हे श्रेष्ठ आत्माओ ! सत्यधर्मका पालन करनेवाले परमात्माके निकट रहते हैं. जो परमात्माके किशोर स्वरूपको नहीं मानते हैं वे धर्मसे दूर हैं अर्थात् धर्मके अधिकारी नहीं हैं.

रूहोंकी बिने देखियो (ब्रह्मात्माओंके नियम)

जो उमत होवे अरसकी, सो नीके बिचारो दिल ।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल ॥ १

महामति कहते हैं, जो परमधामकी आत्माओंके समूहमें हैं, वे हृदयपूर्वक विचार करें. वे अपने नियमको देखकर अन्य ब्रह्मात्माओंके समान ही आचरण करें.

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन ।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन ॥ २

अपने धामधनी कैसे हैं और अपना धाम परमधाम कैसा है, अपना

वास्तविक चिन्मय स्वरूप (पर आत्मा) कैसा है ? ये सभी बातें ब्रह्मात्माओंको ज्ञात होनी चाहिए.

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर ।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर ॥ ३

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम सभी यह जानते ही हो. तुमको सद्गुरुने सम्पूर्ण बात कही है. तुम्हारी इतनी महिमा है तो फिर तुम क्यों इस प्रकार भूल जाती हो ?

कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे माग्या खेल ए ।
सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे ॥ ४

हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने तुम्हारे हृदयमें कैसी इच्छा उत्पन्न कर दी, जिसके कारण तुमने उनसे यह खेल देखनेकी माँग की. धामधनीने यह कैसा खेल बनाया है जिसे तुम देख रही हो.

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक ।
तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक ॥ ५

धामधनीने चौदह लोकोंकी यह सृष्टि कैसी बनाई है ? यहाँके सभी लोग यही जानते हैं कि किसीने भी परमात्माको प्राप्त नहीं किया है.

खोज खोजके सब थके, कै कहावें फिरके बुजरक ।
पर तिन सारोंने यों कह्या, गई न हमारी सक ॥ ६

इस संसारमें सभी लोग परमात्माकी खोज करते हुए थक गए हैं. यहाँ पर अनेक समुदायके लोग स्वयंको श्रेष्ठ कहते हैं, किन्तु उन सभीने यही कहा कि परमात्माके सम्बन्धमें हमारी शङ्काओंका समाधान नहीं हुआ.

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत ।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित ॥ ७

इतना ही नहीं जिनको संसारके सभी प्राणी पूजते हैं ऐसे संसारके स्वामी

त्रिदेव भी कहते हैं कि हम परमात्माको प्राप्त नहीं कर सके. वे कहाँ हैं, उनका कैसा स्वरूप है ? यह हम नहीं जानते.

हम रूहें भी आइयां खेलमें, सो गैयां माहें भूल ।
सुध ना बिरानी अपनी, भया ऐसा हमारा सूल ॥ ८

हम ब्रह्मात्माएँ इस खेलमें द्रष्टा बनकर आई हैं किन्तु भ्रममें पड़कर स्वयंको भूल गईं. हमारी यह कैसी दशा हो गई है कि हमें अपने या परायाकी सुधि भी नहीं रही.

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप ।
फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप ॥ ९

इस बीच परमात्माके सन्देशवाहक बनकर रसूल मुहम्मद हमें अपनी पहचान करवानेके लिए आए. परन्तु कुरानके उन गूढ़ रहस्योंको कोई भी स्पष्ट नहीं कर सका जिनसे परमात्माका मिलाप हो सकता है.

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत ।
ए खोल सके ना त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत ॥ १०

परमात्माका एक और सन्देश श्रीमद्भागवत लेकर शुकदेव मुनि पहलेसे ही आए थे. त्रिगुणाधिपति भी इसके रहस्यको स्पष्ट नहीं कर सके. इसमें हम ब्रह्मात्माओंकी (व्रज तथा रास) लीलाओंका वृत्तान्त है.

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल ।
ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने ना कोई कल ॥ ११

इन सभी धर्मग्रन्थोंके रहस्योंको स्पष्ट करनेके लिए तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीका अवतरण हुआ, जिसके द्वारा संसारके सभी जीव मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त करेंगे. उन धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको कैसे खोला जाए यह युक्ति अभी तक कोई भी नहीं जान सका.

सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई ।
जिन विध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही ॥ १२

तारतम ज्ञानरूपी वह कुञ्जी सद्गुरु धनीने मेरे हाथोंमें सौप दी और जिस

प्रकार सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो सकते हैं वह सम्पूर्ण यथार्थता भी उन्होंने मुझे समझा दी.

सक परदा कोई ना रह्या, सब विध दई समझाए ।
कहे खोल दे अरस रूहों को, ए मिलसी तुझे आए ॥ १३

अब किसी भी प्रकारका सन्देह या अज्ञानका आवरण कुछ भी शेष नहीं रहा. सद्गुरुने मुझे सभी युक्ति समझा दी और कहा कि ब्रह्मात्माओंके लिए तुम परमधामके द्वार खोल दो. वे सभी तुमसे आकर मिल जाएँगी.

अब देखो दिल बिचारके, कैसी बुजरक बात है तुम ।
कैसा खेल तुम देखिया, कै विध देखाई हुकम ॥ १४

हे ब्रह्मात्माओ ! हृदयपूर्वक विचार कर देखो कि तुम्हारा कितना बड़ा महत्त्व है, तुमने कैसा खेल देखा है ? धामधनीके आदेशने तुम्हें संसारका यह खेल अनेक प्रकारसे दिखाया है.

चीन्हों इन खसम को, चीन्हो बका वतन ।
और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन ॥ १५

तुम ऐसे कृपालु धामधनीको पहचानो और अखण्ड परमधामको भी पहचानो. तुम स्वयंको भी पहचानो कि तुम स्वयं कैसा व्यवहार (आचरण) कर रही हो ?

फुरमान भेज्या किनने, ल्याए ऊपर किन ।
कौन लेके आइया, माहें क्या खजाना धन ॥ १६

विभिन्न धर्मग्रन्थोंके रूपमें किसने यह सन्देश भेजा है और किनके लिए यह आया है, यह सन्देश लेकर कौन आया है और इसके अन्दर कौन-सी सम्पदा भरी हुई है ? इस रहस्यको समझो.

कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार ।
किनने ताला खोलिया, खोल्या कौनसा द्वार ॥ १७

यह भी विचार करो कि तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर कौन आया है, इस

ज्ञानमें कौन-सा रहस्य भरा हुआ है, इसके द्वारा किसने धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए हैं और तुम्हारे लिए कौन-सा द्वार खोल दिया है ?

क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध ।
सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध ॥ १८

अखण्ड परमधाममें किस प्रकारकी अपार सम्पदा हैं, सद्गुरुने तुम्हें कहाँकी सुधि दी है ? तुम परमधामकी अखण्ड सम्पदाको भलीभाँति ग्रहण करो और तारतमज्ञानके द्वारा आत्मबुद्धिसे इस पर विचार करो.

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन ।
कुंजी कुलफ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन ॥ १९

यह संसारका खेल किसने बनाया, तथा तुम आत्माओंको यहाँ पर किसने भेजा ? तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी, धर्मग्रन्थोंका रहस्य (ताला), ब्रह्मात्माओंका समुदाय तथा स्वयंको तारतम ज्ञानके प्रकाशसे देखो और हृदयपूर्वक विचार करो.

एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल ।
जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल ॥ २०

इन सब बातों पर विचार किए बिना ही जो ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें सामान्य जीवोंकी भाँति आचरण करती हैं, तब उनकी क्या स्थिति होगी जब वे जागृत होकर परमधाममें धामधनीके सन्मुख एक साथ मिलेंगी.

फरामोसी तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए ।
इन बातों नींद क्यों रहे, जो होवे अरस अरवाए ॥ २१

हे ब्रह्मात्माओ ! यह विस्मृतिका आवरण (फरामोशी) तुम पर किसने डाला, अब तुम सबको कौन जागृत कर रहा है ? इन बातों पर ध्यान देने पर जो परमधामकी आत्माएँ होंगी उनमें अज्ञानरूपी निद्रा कैसे रह सकेगी !

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत ।
ए चोट काफरों ना लगे, मोमिनों छेद निकसत ॥ २२

संसारमें धर्मनिष्ठ ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) तथा धर्मविमुख (काफिर) जीव इस

प्रकार दो प्रकारके लोग कहे गए हैं. उन दोनोंमें यही अन्तर है कि धर्मविमुख लोगोंके मनमें उपरोक्त बातोंकी चोट नहीं लगती, किन्तु वे बातें ब्रह्मात्माओंके हृदयको बींध देती हैं.

महामत कहे ऐ मोमिनो, क्यों न विचारो तुम ।
कै विध तुम वास्ते करी, क्यो भूलो इन खसम ॥ २३

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम क्यों विचार नहीं कर रही हो ? धामधनीने तुम्हें जागृत करनेके लिए अनेक युक्तियाँ अपनाई हैं, ऐसे धामधनीको तुम क्यों भूल रही हो ?

प्रकरण ८ चौपाई ४५८

नूर नूर तजल्ला की पेहेचान (अक्षर, अक्षातीतकी पहचान)

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए ।
हाए हाए तो भी इसक न आवत, अरवा अरस की जे ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने तुम्हें अपनी अङ्गना जानकर परमधाम बुलाया है. धनीकी इस कृपाको तो देखो. किन्तु खेदकी बात तो यह है कि इतना होने पर भी परमधामकी आत्माओंमें प्रेमभाव जागृत नहीं हो रहा है.

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए ।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए ॥ २

ब्रह्मात्माओं पर धामधनीकी इतनी बड़ी कृपा हुई है किन्तु इसे कोई नहीं समझ पा रहा है. वस्तुतः जिनको धामधनीकी पहचान हुई है वे ही उनकी कृपाको भी समझ सकेंगे.

खावंद अरस अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत ।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत ॥ ३

अखण्ड परमधामके धनी श्री राजजीके विषयमें मैं थोड़ी-सी बात कह रहा हूँ. ऐसे धामधनीसे ब्रह्मात्माएँ कैसा सम्बन्ध रखती हैं ?

बका अव्वल से अबलों, किन किया न जाहेर सुभान ।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान ॥ ४

सृष्टिके आरम्भसे आजतक किसीने भी परब्रह्म परमात्माके स्वरूपको व्यक्त

नहीं किया है. इस सन्दर्भमें मैं थोड़ा-सा विवरण देता हूँ जिससे परमात्माकी पहचान हो सके.

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कै पैदास ।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूर जलाल के पास ॥ ५

पातालसे लेकर वैकुण्ठ पर्यन्तके चौदह लोक वाले ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड पलमात्रमें पैदा हो सकते हैं, ऐसी महान् शक्तिशाली प्रकृति अक्षरब्रह्मके पास है.

ऐसे पलमें पैदा करे, पलमें करे फनाए ।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूर जलाल के ॥ ६

अक्षरब्रह्म चौदह लोक वाले ऐसे असंख्य ब्रह्माण्डको पल मात्रमें उत्पन्न तथा लय करते हैं. अक्षरब्रह्मकी मूल प्रकृतिमें भी इतना बड़ा सामर्थ्य है.

इनमें कोई कायम करे, जो दिल आए चढत ।
सो इंड सारा नूरमें, जो दिल दीदों देखत ॥ ७

ऐसे अनेक ब्रह्माण्डोंमें-से जो कोई उनके दिलमें अङ्कित हो जाता है उसे वे अखण्ड कर लेते हैं. वही ब्रह्माण्ड उनके तेजसे प्रकाशित रहता है, जिसको वे अपनी अन्तर्दृष्टिसे देखते हैं.

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सबद माहें ।
तो रोसनी नूर मकान की, क्यों आवे इन जुबांएं ॥ ८

जो ब्रह्माण्ड अक्षरब्रह्मके हृदयमें अखण्ड होते हैं, उनका वर्णन भी लौकिक शब्दोंमें नहीं हो सकता, तो अक्षरधामके प्रकाशका वर्णन इस नश्वर जिह्वासे कैसे हो सकेगा ?

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल ।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूर जलाल ॥ ९

अक्षरब्रह्म अपनी कल्पना मात्रसे जो ब्रह्माण्ड बनाते हैं, उनका वर्णन करनेमें ही जब यह जिह्वा थक जाती है तो अक्षरब्रह्मके सामर्थ्यकी प्रशंसा यह (जिह्वा) कैसे कर सकेगी ?

ए बल नूल जलाल को, जिन की एह कुदरत ।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत ॥ १०

यह तो अक्षरब्रह्मकी शक्तिकी ही महिमा कही गई है. जिनकी प्रकृतिमें भी इतना सामर्थ्य है तो उनकी शक्ति तथा महिमाका वर्णन इस जिह्वासे नहीं हो सकता.

सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार ।
ए जुबां अरस अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार ॥ ११

ऐसे सामर्थ्यवान् अक्षरब्रह्म भी अक्षरातीतके दर्शनार्थ नित्य-प्रति आया करते हैं. ऐसे अखण्ड परमधामकी महिमा तथा विशेषताओंका वर्णन यह नश्वर जिह्वा कैसे कर सकती है ?

नूर जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत ।
तो नूर जमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित ॥ १२

जब अक्षरब्रह्मकी महिमाका वर्णन करनेमें ही यह जिह्वा असमर्थ है तो इससे अक्षरातीत धामधनीकी महिमाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल ।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूर जमाल ॥ १३

अक्षरब्रह्मके सामर्थ्यकी महिमा ही इतनी अपरम्पार है जिसका वर्णन करनेमें यह जिह्वा थक गई, तो अक्षरसे भी परे अक्षरातीत धनीकी अपरम्पार शक्तिका वर्णन यह (जिह्वा) कैसे कर सकती है ?

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत ।
नूर तजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे न सकत ॥ १४

जिस परमधाममें जिब्रील फरिश्ता भी नहीं जा सका तथा कहने लगा कि आगे जाते हुए मेरे पङ्ख जलते हैं, क्योंकि अक्षरातीत धामधनीके तेजपुञ्जकी ज्योतिको वह सहन नहीं कर सकता.

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत ।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत ॥ १५

अक्षरातीत धनीके तेजपुञ्जके प्रकाशकी जब इतनी महिमा गायी गई है तो

उस तेजपुञ्जके मूल अक्षरातीत धनीका यथार्थ स्वरूप कैसा होगा ?

ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक ।
नामैं आसक इन का, सब पर ए बुजरक ॥ १६

वस्तुतः अक्षरातीत धनीके स्वरूपकी शोभा, सुन्दरता और विशेषता ही ऐसी अद्वितीय है. क्योंकि जिनका नाम ही प्रेमी (आशिक) है, वे तो सर्वाधिक श्रेष्ठ और महान् ही कहलाएँगे.

ए जो सब कहीयत हैं, हक बिना कछुए बात ।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात ॥ १७

अक्षरातीत धनीके अतिरिक्त यह जो कुछ भी कहनेमें आता है, वह सब अक्षर ब्रह्मकी प्रकृतिका ही विस्तार है जिसके द्वारा जगतकी उत्पत्ति और विनाश होता रहता है.

पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कह्या एक ।
खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक ॥ १८

वस्तुतः यह सब उन्हीं अक्षरातीत धनीका सामर्थ्य है, जो यथार्थ रूपसे एक ही है. सभी ब्रह्मात्माएँ भी इन्हींकी अङ्गस्वरूपा हैं. इस तथ्यको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज ही विवेक पूर्वक जानते हैं.

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह ।
खूबी सोभा सब इन की, प्यारा प्रेम सनेह ॥ १९

अक्षरातीत धनी स्वयं प्रेमी भी हैं तथा प्रेमास्पद (प्रेम पात्र) भी हैं. यह सम्पूर्ण शोभा उन्हींकी है. सुमधुर प्रेम तथा स्नेह आदि गुण भी उनके ही हैं.

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन ।
हक बंदगी सिवाए जो कछु कह्या, सो सब तले इजन ॥ २०

परमकृपालु भी वही हैं. उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी अखण्ड आनन्दका दाता नहीं है. उनकी उपासना (सेवा) के अतिरिक्त जो कुछ भी है वह सब उनकी आज्ञाके अधीन है.

अब कहूं इन रूहन को, जो खडियां तले कदम ।
तुम क्यों न बिचारो रूहसें, ऐसा अपना खसम ॥ २१

अब मैं उन ब्रह्मात्माओंको कहता हूँ जो धामधनीके चरणोंमें खड़ी हैं, तुम अपनी अन्तरात्मामें क्यों विचार नहीं करती कि अपने धामधनी इतने बड़े समर्थ हैं.

इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर ।
फिराक न आवत हम को, याद कर ऐसा घर ॥ २२

ऐसे धामधनीका वियोग सुनकर हम इस संसारमें कैसे रह रही हैं. ऐसे अखण्ड परमधामका स्मरण आ जाने पर भी हमें अन्तर्विरह उत्पन्न नहीं हो रहा है.

आराम इसक इन वतन का, हक का सुन्या आपन ।
अजहूं न विरहा आवत, सुन के एह वचन ॥ २३

परमधामका अखण्ड आनन्द तथा धामधनीका प्रेम हमने सद्गुरुके मुखारविन्दसे सुना है. ऐसे वचनोंको सुनकर भी हमारे मनमें अभी तक उनके लिए विरह उत्पन्न नहीं हुआ.

ऐसा कदीमी वतन, ऐसा इसक आराम ।
ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम ॥ २४

ऐसा अनादि परमधाम है जहाँ पर प्रेम और अखण्ड आनन्दकी वर्षा होती रहती है. अपनी अङ्गनाओंके प्रति धामधनीकी इतनी बड़ी कृपा है कि वे उन्हें आठों प्रहर अखण्ड सुख प्रदान करते हैं.

ऐसा हक जो कादर, सब विध काम पूरन ।
ए सुन इसक न आवत, तो कैसे हम मोमन ॥ २५

धामधनी ऐसे समर्थ हैं कि वे ब्रह्मात्माओंकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं. धामधनीकी ऐसी महिमाको सुनकर भी यदि प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ तो हम कैसी ब्रह्मात्माएँ हैं ?

ए जो सुकन हकके मैं कहे, तामें जरा न रही सक ।
ए सुन के बिरहा न आवत, सो ना इन घर माफक ॥ २६

धामधनीके विषयमें मैंने जो भी बातें कहीं है, उनमें लेशमात्र भी शङ्काका स्थान नहीं है. इतना सब सुन लेने पर भी जिनके मनमें विरह उत्पन्न नहीं होता, वह आत्मा परमधामकी कहने योग्य नहीं है.

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पीउ ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जीउ ॥ २७

ब्रह्मात्माओंको तो ऐसा होना चाहिए कि धामधनीका वियोग सुनते ही, उनको याद करते हुए तत्काल प्राण निकल जाएँ.

फिराक सुनते हक की, वजूद पकडे क्यों इत ।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत ॥ २८

धामधनीके वियोगका सन्देश सुनते ही ब्रह्मात्माएँ इस नश्वर शरीरको कैसे धारण कर रह सकती हैं ? अखण्ड परमधामकी आत्माओंकी यह शोभा नहीं है कि वे धामधनीका विरह सुन सके.

खूबी खुलासी बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान ।
इसक प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान ॥ २९

ब्रह्मात्माओंकी कुशलता, प्रसन्नता, श्रेष्ठता तथा शोभा यह सभी धामधनीकी ही महिमा है. धामधनी उन्हें सर्वदा परमधामके अखण्ड सुख और प्रेम प्रदान करते हैं.

कहूं प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम ।
अरवा क्यों न उडावत, समझ हक इलम ॥ ३०

हे ब्रह्मात्माओ ! मैं तुम्हें प्रेमपूर्वक कह रहा हूँ. तुम ध्यान देकर सुनो. तारतम ज्ञानके द्वारा धामधनीकी महिमा समझते हुए भी तुम अपनी आत्माको इस शरीरसे क्यों नहीं उड़ा देती ?

कुदरत से पाइयत है, बुजरकी कादर ।
सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूं नजर ॥ ३१

धामधनीकी महानता तो उनकी आज्ञासे बनी हुई प्रकृतिके सामर्थ्यसे ही जानी जाती है. सभी धर्मग्रन्थोंमें परमधाम तथा अक्षरधामकी महिमाका वर्णन है तथापि किसीकी भी दृष्टिमें ये गोचर नहीं हो रहे हैं.

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अरस ।
कह्या तुम भी उतरे अरस से, यों दै सोभा अरस परस ॥ ३२

धामधनीने ब्रह्मात्माओंके हृदयको अपना परमधाम कहा है तथा यह भी कहा है कि तुम स्वयं परमधामसे इस संसारमें आई हो. इस प्रकार धामधनीने हमारा अद्वैत सम्बन्ध स्पष्ट कर परस्पर शोभा बढ़ाई है.

ए खावंद काहूं न पाइया, खोज खोज थके सब मिल ।
चौदे तबक की दुनी की, पहोंचे ना फहम अकल ॥ ३३

ऐसे परब्रह्म परमात्माको कोई भी साधक प्राप्त न कर सका. सभी उन्हें खोज-खोजकर थक गए. चौदह लोकोंके जीवोंकी बुद्धि परब्रह्म तक पहुँच नहीं सकती.

सो हादी देखावत जाहेर, अरस खुदा का जे ।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए ॥ ३४

ऐसे परब्रह्म परमात्माके अखण्ड परमधामको निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रत्यक्ष दिखा रहे हैं. अनेक साधकोंने परब्रह्म परमात्माको चौदह लोकोंमें चारों ओर खोजा. सद्गुरु धनीने हमें यह बताया कि वे परमात्मा हमारे प्राणनलीसे भी अति निकट हैं अर्थात् हमारे हृदयमें विराजमान हैं.

हांसी करी अति बडी, हक आए तेहेकीक ।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक ॥ ३५

निश्चय ही संसारका खेल दिखाकर धामधनीने ब्रह्मात्माओंके साथ अति बड़ा परिहास किया है और वे स्वयं भी इस नश्वर जगतमें निश्चित रूपसे आए. इस प्रकार जो परमात्मा चौदह लोकोंमें नहीं हैं उनको सद्गुरुने अति निकट अर्थात् हमारे हृदयमें अनुभव करवाया.

महामत कहे हंसे हक, देख मोमिनों हाल ।
आखर बुलाए चले वतन, करके इत खुसाल ॥ ३६

महामति कहते हैं, इस संसारमें ब्रह्मात्माओंकी स्थितिको देखकर धामधनी हँस रहे हैं. धामधनी इस संसारमें भी ब्रह्मात्माओंको आनन्दित करते हुए अन्तमें उन्हें साथ लेकर (बुलाकर) परमधाम चलनेके लिए आए हैं.

प्रकरण ९ चौपाई ४९४

जहूरनामा किताब

पढे तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए ।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए ॥ १

महामति कहते हैं, मैंने संसारका चातुर्य्यपूर्ण ज्ञान पढ़ा नहीं है किन्तु सद्गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा परमधामकी यथार्थता एवं पूर्ण पहचानकी बात स्पष्ट कर रहा हूँ जिसे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी एवं रसूल मुहम्मदने कहा है.

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ्या बनी आदम ।
एती सुध किन ना परी, कहां खुदा कौन हम ॥ २

सृष्टिके आरम्भसे लेकर मध्य तथा आज पर्यन्त सभी मानवों (आदमके वंशजों) ने परमात्माकी खोज की. परन्तु किसीको इतनी मात्र भी सुधि नहीं हुई कि परमात्मा कहाँ हैं और हम कौन हैं ?

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम ।
सुध न खसम रसूलकी, नाहीं गिरोकी गम ॥ ३

हम ब्रह्मात्माओंको भी यह ज्ञान नहीं रहा कि हम स्वयं कौन हैं और संसारके ये जीव कौन हैं, धामधनीने उन्हें ऐसा छलपूर्ण खेल दिखाया. इतना ही नहीं उन्हें यह भी सुधि नहीं रही कि धामधनी, उनके सन्देशवाहक रसूल तथा ब्रह्मात्माएँ कौन हैं ?

कौन रूहें कौन फिरस्ते, कौन आदम कौन जिंन ।
पढ पढ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन ॥ ४

ब्रह्मात्माएँ कौन हैं, ईश्वरीसृष्टि कौन हैं, मानव तथा देवगण कौन कहलाते हैं ? वेद तथा कतेब ग्रन्थोंको पढने वाले अनेक विद्वान हो गए परन्तु

किसीके भी हृदयमें इस सन्दर्भमें ज्ञानका प्रकाश नहीं हुआ.

अपनी अपनी खोजिया, पर पाया नहीं खुदाए ।
थके सब नासूतमें, पोहोंचे नहीं इमदाए ॥ ५

सभी साधकोंने अपनी-अपनी समझके अनुसार खोज की परन्तु कोई भी परमात्माको प्राप्त न कर सका. सभी साधक नश्वर संसारमें ही खोजते हुए थक गए, कोई भी संसारके मूलतक नहीं पहुँच सका.

आब हैयाती न पाइया, दौड्या सिकंदर ।
काहूं न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर ॥ ६

कुरानमें भी ऐसा उल्लेख है कि सिकन्दरने बहुत दौड़ लगाई किन्तु वह अमरत्व (अखण्ड ज्ञान) प्राप्त न कर सका. सभी पैगम्बरोंका यही कथन है कि किसीने भी अभी तक अखण्ड मुक्ति स्थानको प्राप्त नहीं किया है.

आप राह अपनी मिने, ढूंढ्या सब फिरकन ।
कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन ॥ ७

सभी मत-मतान्तरके लोगोंने अपने गुरुजनोंके द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलकर खोज की. अन्तमें सभीने यही कहा कि उन्हें अखण्ड धामकी प्राप्ति नहीं हुई.

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल ।
छोड सुरैया सितारा, कोई आगूं न सके चल ॥ ८

कतेब ग्रन्थोंमें कहा गया है कि इस नश्वर संसारके लोग वैकुण्ठकी बुद्धिके आधार पर परमात्माकी खोज करते हैं इसलिए वे ज्योति स्वरूप तथा शून्य-निराकारको लाँघकर आगे नहीं जा सकते.

जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम ।
खुद खबर पाई नहीं, ताथें पडे सब भरम ॥ ९

सभी लोगोंने धर्मके बाह्याचरण अर्थात् कर्मकाण्डको ही शिरोधार्य किया है. उन्हें अपनी और परमात्माकी सुधि नहीं हुई इसलिए वे सभी भ्रममें ही पड़े रहे.

लड फिरके जुदे हुए, हिन्दू मुसलमान ।
और खलक केती कहूं, सब में लडे गुमान ॥ १०

इस प्रकार हिन्दू अथवा मुसलमान सभी बाह्याचरणके आधार पर ही लड़-झगड़कर पृथक्-पृथक् हो गए हैं. संसारके अन्य लोगोंके विषयमें क्या कहूँ ? अहङ्कारकी भावना ही सभीको परस्पर लड़ा रही है.

माएने ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार ।
फिरके फिरे सब हक सें, बांधे जाए कतार ॥ ११

सभी लोगोंने धर्मग्रन्थोंका बाह्य अर्थ ग्रहण कर अपने अहङ्कारका पोषण किया. इसलिए वे परमात्मासे विमुख होकर विभिन्न समुदायोंमें बँटकर एक दूसरेके पीछे कतारमें बँधे चले जा रहे हैं.

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम ।
सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लडे रसम ॥ १२

वैसे तो सभी कहते हैं कि सब लोगोंका शरीर पञ्चमहाभूतोंका होनेसे एक जैसा ही है और सभीमें श्वास भी एक समान है. वे सभी यह भी कहते हैं कि सबके परमात्मा एक हैं. परन्तु सभीके भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज ही उनको परस्पर लड़ा रहे हैं.

क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखर ।
कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर ॥ १३

कयामतके समयके सङ्केत क्या हैं ? अन्तमें प्रलय किस प्रकार होगा ? ये सभी बातें कुरानमें लिखी हुई हैं. परन्तु किसीको भी इनकी सुधि नहीं हुई.

क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर ।
ए सुध किनको ना परी, कौन किताबें क्यों कर ॥ १४

यह महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) क्या है ? हौज कौसर ताल कैसा है ? इन सब बातोंकी भी सुधि किसीको नहीं हुई कि ये कुरानआदि धर्मग्रन्थ किसलिए हैं ?

मनसूख करी सब किताबें, रानी सबों की उमत ।
ए सुध किन को ना परी, जो इनकी क्यों करी सिफत ॥ १५

जबकि कुरानमें उससे पूर्व उतरे हुए धर्मग्रन्थों (जबूर, तौरेत, बाइबल आदि)

को निरस्त कर दिया है और उन सबको मानने वाले समुदायोंको अवज्ञाकारी माना है. तथापि किसीको भी यह सुधि नहीं हुई कि ब्रह्मात्माओंके समुदायकी इतनी विशेषता क्यों कही गई है ?

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखर ।
कहां से उतरे रूहें मोमिन, और कहां से आए काफर ॥ १६

सभी पैगम्बर कौन हैं तथा उन्होंने अन्तिम समयके कौन-से सङ्केत बताए हैं ? ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें कहाँसे अवतरित हुई हैं तथा अवज्ञाकारी जीव कहाँसे उत्पन्न हुए हैं, इन सब बातोंकी सुधि किसीको नहीं हुई.

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार ।
क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार ॥ १७

अन्तिम समयमें न्यायाधीश बनकर आए हुए परमात्मासे किस प्रकारका न्याय होगा. संसारके लोगोंको उनके दर्शन कैसे होंगे, किन लोगोंको अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें मुक्ति प्राप्त होगी, किन लोगोंको नरकाग्निमें जलाकर शुद्ध किया जाएगा, तथा किन आत्माओंको कयामतका दिन प्रकट करनेका अधिकार दिया गया है ? यह सुधि भी किसीको नहीं हुई.

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर ।
क्यों कर पहाड उडसी, तब कौन नजीक कौन दूर ॥ १८

इस्राफील फरिश्ता संसारमें क्यों आएगा तथा क्यों सूर फूँकेगा, उसके सूर फूँकनेसे पहाड़ कैसे उडेंगे, उस समय कौन परमात्माके निकट माने जाएँगे तथा कौन उनसे दूर होंगे यह सुधि भी किसीको नहीं हुई.

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर ।
सब दुनियां को खाएसी, आजूज माजूज क्यों कर ॥ १९

इसी प्रकार नूह नबीके पौत्र (नाती) तथा याफिस पैगम्बरके पुत्र याजूज और माजूज संसारके प्राणियोंको कैसे खा जाएँगे ? यह सुधि भी किसीको नहीं हुई.

कह्या गधा बडा दजाल का, ऊंचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान ॥ २०

कयामतके सङ्केतोंमें कहा गया है कि उस समय दज्जाल गधे पर चढ़कर आएगा. उस गधेकी ऊँचाई आकाश तक होगी यहाँ तक कि सात समुद्रोंका पानी उसकी जाँघ तक भी नहीं पहुँच पाएगा.

ना पेहेचान दजाल की, ना दाभातुल अरज ।
ए सुध काहूं ना परी, क्यों मगरब सूरज ॥ २१

कुरानके पाठकोंको न दज्जाल (शैतान) की पहचान हुई और न ही दाभातुल अर्जकी. उन लोगोंको यह भी सुधि नहीं हुई कि पश्चिमसे सूर्योदय कैसे होगा ?

ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत ।
माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत ॥ २२

उन लोगोंको ब्रह्मात्माओंकी संख्याका भी ज्ञान नहीं है तथा तीनों प्रकारकी आत्माओंकी भी सुधि नहीं है. वस्तुतः कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट हुए बिना तीनों सृष्टियों (ब्रह्म, ईश्वरी, जीव) का अन्तर ज्ञात नहीं होता.

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक ।
पढे वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक ॥ २३

कयामतके समयमें कब्रोंसे मुर्दे उठ जाएँगे ऐसा कुरानमें कहा है. चौदह लोकोंके प्राणियोंमें-से अनेक लोगोंने वेद तथा कतेबोंका अध्ययन किया किन्तु किसीको भी उपरोक्त बातोंकी सुधि नहीं हुई कि कब्रोंसे मुर्दे कैसे उठेंगे ?

जब मोहे हादी सुध दै, ए खुले माएने तब ।
तले ला मकान के, खुराक मौत की सब ॥ २४

जब निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने मुझे तारतम ज्ञान प्रदान कर इन बातोंकी सुधि दी तभी ये सब रहस्य स्पष्ट हो गए. तब ज्ञात हुआ कि शून्य-निराकारके नीचेके सभी लोक कालके ग्रास (नाशवान्) हैं.

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून ।
खुदा याही को बूझहीं, बे-सबी बे-निमून ॥ २५

संसारके लोग शून्य-निराकारको ही ब्रह्म मानकर उसे बेचून, बेचगून, बेशब्बीह तथा बेनिमून कहते हैं.

याही को माया कहे, पैदास सब इन से ।
कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने ॥ २६

पुनः इसी शून्यको माया बतलाकर कहते हैं कि इसीसे समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति हुई है. कुछ लोगोंका कहना है कि यह सब कर्म है क्योंकि सभी जीवोंको कर्मने ही बाँध रखा है.

खुदा याही को कहे, याही को कहे काल ।
आखर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल ॥ २७

अनेक लोग इसी शून्यको परमात्मा मानते हैं, फिर यह भी कहते हैं कि यह तो काल है, यह काल ही सबको अपनी मायाजन्य कल्पनामें नचाते हुए अन्तमें सभीको खा जाएगा.

यासों सुंन निरगुन कहे, निराकार निरंजन ।
यों नाम खुदाय के, बोहोत धरे फिरकन ॥ २८

इसीको शून्य, निराकार, निर्गुण, निरञ्जन आदि विभिन्न नाम दिए गए हैं. इस प्रकार विभिन्न सम्प्रदायके लोगोंने परमात्माके विभिन्न नाम रखे हैं.

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर ।
गोते खाए फना मिने, पोहोंचे ना बका नजर ॥ २९

संसारके लोग क्षर (नाशवान्) तथा अक्षर (अविनाशी) के विषयमें वारंवार विचार करते हैं, किन्तु नश्वर भवसागरमें ही गोते खाते रहते हैं. उनकी दृष्टि अखण्ड तक पहुँचती ही नहीं.

ला याही को केहेवहीं, इलाह भी याही कों ।
सब कोई गोते खात हैं, ला इलाह के मों ॥ ३०

ऐसे तथाकथित ज्ञानीजन इसी जगतको कभी क्षर (नाशवान्) तो कभी अक्षर

(अविनाशी) कहते हैं और क्षर अक्षरके चक्रमें गोते खाते रहते हैं.

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर ।
सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर ॥ ३१

इस प्रकार संसारके लोग क्षर तथा अक्षरके विषयमें वारंवार विचार करते रहते हैं. वस्तुतः वे सभी क्षर ब्रह्माण्डोंमें ही गोते खा रहे हैं इससे आगे वे एक शब्द भी उच्चारण नहीं कर पाते.

मैं भी उन अंधरे में, हुती ना सुध दिन रात ।
जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात ॥ ३२

मैं भी इसी अज्ञान अन्धकारमें ही निमग्न था. मुझे दिन या रात (ज्ञान या अज्ञान) की भी सुधि नहीं थी. ऐसी स्थितिमें मुझपर सद्गुरुकी जिस प्रकार कृपा हुई उसका वर्णन मैं अपने सम्बन्धी आत्माओंसे करता हूँ.

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इलाह तब ।
नूर मकान नूर तजल्ला, पाई अरस हकीकत सब ॥ ३३

जब सद्गुरुने मुझे तारतम ज्ञान देकर समझाया तब मुझे क्षर तथा अक्षरकी सुधि हुई. इतना ही नहीं तब अक्षरधाम तथा अक्षरातीत परमधामकी सभी वास्तविकता मुझे स्पष्ट हुई.

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान ।
मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरोह अपनी जान ॥ ३४

हृदयमें विश्वास धारणकर जिसको मानना हो वे यह बात मान लें, मुझे तो ब्रह्मात्माओंको अपने सम्बन्धी मानकर निश्चयपूर्वक कहना ही है.

नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब ।
तोबा दरवाजे बंद होयसी, कहा करसी ईमान तब ॥ ३५

विश्वास रखकर लाभ लेनेका समय यही है, भविष्यमें तो संसारके सभी जीव एकत्रित हो जाएँगे. जब प्रायश्चितके सभी द्वार बन्द हो जाएँगे तब विश्वास करनेसे क्या लाभ प्राप्त होगा ?

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, मैं केहेती हूं वीतक ।
पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक ॥ ३६

जिनको विश्वास करना हो वे विश्वास करें, मैंने तो यह आपबीती कही है. भविष्यमें तो सभी आत्माएँ तारतमवाणीके द्वारा इस पर विश्वास करेंगी. मुझे ब्रह्मस्वरूप सद्‌गुरु निजानन्द स्वामीने इस प्रकार कहा है.

रूहअल्ला अरस अजीम से, मोसों आए कियो मिलाप ।
कहे तुम आए अरस से, मोहे भेजी बुलावन आप ॥ ३७

श्री श्यामाजी परमधामसे सद्‌गुरुके रूपमें यहाँ आकर मुझे मिली हैं. उन्होंने इस प्रकार कहा, तुम ब्रह्मात्माएँ अखण्ड परमधामसे यहाँ पर आई हो. तुम्हें बुलानेके लिए धामधनीने मुझे यहाँ भेजा है.

तुम आए खेल देखनको, सो किया कारन तुम ।
ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम ॥ ३८

तुम यहाँ पर मायाजन्य खेल देखनेके लिए आई हो. इस खेलकी रचना तुम्हारे लिए ही की है. इसे देखकर अब परमधाम लौट जाओ. तुम्हें बुलानेके लिए ही मेरा यहाँ पर आना हुआ है.

तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब ।
हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब ॥ ३९

वस्तुतः तुम अपने घर (परमधाम) में ही बैठकर यह स्वप्नका खेल (सुरता मात्रसे) देख रही हो. मैं तुम्हें यह खेल दिखानेके लिए आया हूँ , अब शीघ्र ही इसे देखकर अपने घर लौट चलो.

इलम लुदंनी देय के, खोल दई हकीकत ।
सदर तुल मुंतहा अरस अजीम, कही कायम की मारफत ॥ ४०

इस प्रकार सद्‌गुरुने तारतम ज्ञान देकर जगतकी नश्वरता स्पष्ट कर दी और अक्षरधाम (सदरतुलमुंतहा) तथा परमधाम (अर्शे अजीम) की अखण्डताकी पहचान करवाई.

दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार ।
ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार ॥ ४१

विभिन्न धर्मग्रन्थोंकी साक्षियाँ देकर पारके द्वार खोल दिए. तब मुझे ज्ञात हुआ कि इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीसरे खण्डमें हम जागनी लीला देख रहे हैं.

दो बेर लैलत कदरमें, खेल में तुम उतरे ।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे ॥ ४२

इससे पूर्व इस महिमामयी रात्रिमें दो बार (व्रज और रासकी लीलामें) हम अवतरित हुए परन्तु इन दोनों लीलाओंमें हमारे वाञ्छित मनोरथ पूर्ण नहीं हुए.

सोए पट सब खोलके, दे साहेदी किताब ।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुखका आजाब ॥ ४३

इस प्रकार सद्गुरुने सभी धर्मग्रन्थोंके रहस्यों पर पड़े पर्दोंको हटाकर उनकी साक्षी दी और कहा कि महिमामयी रात्रिके तीसरे खण्डका यह मायामय खेल वस्तुतः दुःखोंका ही घर है.

इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया ।
तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या ॥ ४४

सद्गुरुने और भी कहा, वस्तुतः ब्रह्मात्माएँ परमधाममें बैठी हुई ही यह खेल (सुरता द्वारा) देख रही हैं. इस कल्पनामय संसारमें न कोई आई है और नहीं उसे लौटकर जाना है. तुम समझ रही हो कि परमधाम दूर है, वास्तवमें परमधाम प्राणनलीसे भी अति निकट है.

नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया ।
सेहेरग से नजीक, अरस बका में लिया ॥ ४५

इन चौदह लोकोंमें कोई भी वस्तु अखण्ड नहीं है किन्तु तारतमज्ञानके द्वारा सद्गुरुने हमें यहीं पर अखण्ड परमधामके दर्शन करवाए. इतना ही नहीं परमधामको अपने प्राण नलीसे भी निकट दिखाकर सभी आत्माओंको अखण्ड परमधाममें जागृत किया.

साहेदी खुदाय की, रूह अल्ला दई जब ।
खुले अंदर पट अरस के, पाई सूरत खुदाय की तब ॥ ४६

इस प्रकार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने जब पूर्णब्रह्म परमात्माकी साक्षी दी तब अन्तरसे अज्ञानके आवरण दूर होकर परमधामके द्वार खुल गए और परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार हुआ.

अंदर मेरे बैठके, खोले पट द्वार ।
ल्याए किल्ली अरस अजीम से, ले बैठाए नूर के पार ॥ ४७

सद्गुरुने मेरे अन्तर्हृदयमें विराजमान होकर परमधामके द्वार खोल दिए. इस प्रकार उन्होंने परमधामसे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लाकर मानों हमें अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाममें बैठा दिया.

हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन ।
रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन ॥ ४८

आज तक किसीने भी परमात्माका स्वरूप तथा अखण्ड परमधामका साक्षात्कार नहीं किया था. सद्गुरुके दिव्य ज्ञानके प्रतापसे अब मेरी अन्तर्दृष्टि खुल गई है.

ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी देत ।
बैठ बीच ब्रह्मांड के, अरस बका में लेत ॥ ४९

इस तारतम ज्ञानको प्राप्त करने पर इस प्रकार अन्तर्दृष्टि खुल जाती है और आत्मा अपनी ही साक्षी देने लगती है. तब इस नश्वर संसारमें रहते हुए भी अखण्ड परमधामका अनुभव होने लगता है.

अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए ।
कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए ॥ ५०

सृष्टिके आरम्भसे मध्य तथा आज तक इस संसारमें ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हुआ है जिसने इसी नश्वर संसारमें अखण्ड परमधाम तथा परमात्माके सच्चिदानन्द स्वरूपका दर्शन (अनुभव) करवाया हो.

जो रूहें अरस अजीम की, कहूं तिनको मेरी वीतक ।
जो हुई इनायत मुझ पर, जिन विध पाया हक ॥ ५१

जो परमधामकी आत्माएँ हैं उनको ही मैंने आपबीती कही है कि किस प्रकार मुझ पर सद्गुरुकी कृपा हुई और किस प्रकार मैंने धामधनीका साक्षात्कार किया.

कायम फना बीच दुनी के, हुती ना तफावत ।
मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत ॥ ५२

इस संसारमें आज तक किसीको भी अखण्ड तथा नश्वरताका अन्तर ज्ञात नहीं था. इस प्रकार मैंने जो अखण्ड परमधाम तथा नश्वर जगतका विवरण दिया है, वह सब सद्गुरुकी कृपाका ही प्रताप है.

नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध ।
जबरूत लाहूत हाहूत, दई हादिएं हिरदे बुध ॥ ५३

मृत्युलोक, वैकुण्ठ, शून्य-निराकार तथा अक्षरधाम, अक्षरातीत परमधाम एवं रङ्गमहलकी सुधि मुझे नहीं थी. सद्गुरुने ही मेरे हृदयको प्रकाशित कर यह सुधि प्रदान की है.

ए सुध पाए पीछे, भया बेवरा बुजरक ।
ज्यों जाहेर माहें दुनियां, त्यों बातून माहें हक ॥ ५४

यह सुधि प्राप्त होने पर श्रेष्ठ परमधामका विवरण स्पष्ट होने लगा. तब ज्ञात हुआ कि हम बाह्यदृष्टिसे इस नश्वर संसारमें हैं और अन्तर्दृष्टिसे धामधनीके समीप बैठे हैं.

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी ।
नासूत दुनी अरस मोमिन, है तफावत एती ॥ ५५

तब यह भी ज्ञात हुआ कि बाह्य उपासना (शराअ-कर्मकाण्डकी बन्दगी) एवं मानसिक उपासना (हकीकत बन्दगी) में उतना ही अन्तर है जितना नश्वर संसारके जीवों तथा परमधामकी आत्माओंमें है.

नासूत बीच फना के, अरस कायम हमेसगी ।
दुनियां तालुक दिल की, रूह मोमिन खुदाय की ॥ ५६

साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि यह मृत्युलोक नश्वर है और परमधाम अखण्ड

अविनाशी है. संसारके लोगोंका सम्बन्ध नश्वरतासे है और ब्रह्मात्माओंका सम्बन्ध परब्रह्म परमात्मासे है.

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने ।
नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोडें ना हठ अपने ॥ ५७

इस प्रकारका विवरण सभी धर्मग्रन्थोंमें भी दिया है. संसारके लोग (अपनी उपासनाके द्वारा) प्रत्यक्ष हो रहे लाभ-हानिको देखते हुए भी अपना हठ (आग्रह) नहीं छोड़ते हैं अर्थात् कर्मको ही प्रधानता देते हैं.

इसक बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर ।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर ॥ ५८

यह स्पष्ट कहा है कि प्रेमपूर्वक की गई पूर्णब्रह्मकी वन्दना उनके निकट पहुँचाती है और मात्र औपचारिकता समझ कर की गई बाह्य उपासना (फर्जबन्दगी) परमधामसे दूर ही रह जाती है.

जाहेर मैं केता कहूं, खुदाय का जहूर ।
वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर ॥ ५९

परमात्माके प्रकाशका वर्णन मैं कहाँ तक करूँ ? विशेषतः परमधामकी आत्माओंके लिए ही ये बातें (थोड़ी-सी) कही हैं.

ऊपर ला मकान के, राह ना मौत की तित ।
नूर मकान नूर तजल्ला, अरस हमेसगी जित ॥ ६०

शून्य-निराकारके परे कालका प्रभाव सर्वथा नहीं है. उससे भी परे अक्षर धाम तथा परमधाममें तो सदा-सर्वदा नित्यता (अमरत्व) है.

नूर तजल्ला अरस में, सूरत साहेब की ।
दरगाह बीच रहत हैं, रूहें हमेसगी ॥ ६१

तेजोमय परमधाममें परब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दमय दिव्य स्वरूपमें विराजमान हैं. इसी दिव्य परमधाममें ब्रह्मात्माएँ नित्य रहती हैं.

बडी बडाई इन की, कोई नहीं इन समान ।
रहें हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान ॥ ६२

इन ब्रह्मात्माओंकी महिमा इतनी अधिक है कि उनके समान अन्य कोई है

ही नहीं. वे सर्वदा धामधनीके चरणोंमें रहती हैं, इसीलिए यह नश्वर खेल देखते हुए भी वे धामधनीके साथके अपने शाश्वत् सम्बन्धको पहचान सकीं.

तब मैं दिल में यों लिया, करूं कायम चौदे तबक ।
मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक ॥ ६३

इसी सम्बन्धके कारण मैंने हृदयपूर्वक निश्चय किया कि मैं इन चौदह लोकोंको अखण्ड कर दूँ तथा सद्गुरु प्रदत्त इस तारतम ज्ञानसे सभीको धामधनीके चरणोंमें पहुँचा दूँ.

ऐसा जब दिलमें आइया, दिया जोस हकें बल ।
उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल ॥ ६४

मेरे मनमें ऐसे विचार आते ही धामधनीने मुझे आवेश (जोश) और बल प्रदान किया, उसीके प्रतापसे तारतम वाणीका अवतरण हुआ और संसारके जीवोंको अखण्ड करनेका आदेश भी प्राप्त हुआ.

ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप ।
रूहअल्ला पेहेलें दिल मिने, आए अहंमद कियो मिलाप ॥ ६५

सर्वप्रथम धामधनीकी यह अपार कृपा मुझ पर हुई फिर रसूल मुहम्मद (कुरानके रूपमें) मेरे समीप आए (मुझे कुरान प्राप्त हुआ). सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज प्रदत्त ज्ञान तो मेरे हृदयमें पहलेसे ही था पुनः रसूल मुहम्मदका ज्ञान भी आ जानेसे अहमदके रूपमें दोनोंका एकाकार हो गया. [तात्पर्य यह है कि सद्गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञान तो पहलेसे ही था जिससे शास्त्रोंके रहस्य स्पष्ट हो जाते थे फिर कुरानका ज्ञान भी प्राप्त होनेसे दोनोंका रहस्य स्पष्ट हो गया और परब्रह्म परमात्माका दिव्य ज्ञान संसारमें फैलानेका अहंभाव (अदम्य उत्साह) हृदयमें जागृत हो गया.]

तब खुदाई इलम से, भई सबों पेहेचान ।
ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान ॥ ६६

तब तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानके सभी रहस्य स्पष्ट हुए. धामधनीके साथके शाश्वत सम्बन्धको इस प्रकार पहचान लिया कि कुरानके सभी सङ्केत ज्ञात हुए.

सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत ।
हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड जानी निसबत ॥ ६७

जब उस कुरानको मैंने ध्यानपूर्वक देखा (अध्ययन किया) और परमधामके लिए दिए गए सङ्केत प्राप्त किए तब उसके सभी मुद्दे मेरे हाथ लग गए. मुझे यही निश्चय हुआ कि सभी आत्माओंका मूल सम्बन्ध तो पूर्णब्रह्म परमात्मासे ही है.

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत ।
ताए देऊं दोऊं साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत ॥ ६८

मैंने निश्चय किया कि परमात्माने अपनी अङ्गना स्वरूप जिन ब्रह्मात्माओंको इस मायाके खेलमें भेजा है उन्हें मैं वेद तथा कतेब दोनोंकी साक्षी दूँ जिससे उनको परमधामके अखण्ड आनन्दका अनुभव हो जाए.

एह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी ।
नूर जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी ॥ ६९

ये अखण्ड सम्पदाएँ वेद तथा कतेब दोनोंमें अलग-अलग प्रकारसे वर्णित हैं. दोनों धर्मग्रन्थोंने अक्षरातीत तथा अक्षरब्रह्मकी ही साक्षी दी है.

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई ।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बडाई ॥ ७०

रसूल मुहम्मदने कहा, मैं उसी परमधामसे आया हूँ तथा ब्रह्मात्माएँ मेरे भाई हैं. इस प्रकार कुरान और हदीसोंमें ब्रह्मात्माओंकी ही महिमा बताई गई है.

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोडेंगे सक ।
बरकत उमत खास की, सब लेसी इसक ॥ ७१

कुरानमें पहलेसे ही ऐसा लिखा था कि अन्त समयमें सभी लोगोंकी शङ्काएँ दूर हो जाएँगी. तब ब्रह्मात्माओं (खास समुदाय) के प्रतापसे सभी लोग प्रेमका मार्ग ग्रहण करेंगे.

करसी कतल दजाल को, ईसे का इलम ।
साफ दिल सब होयसी, जिनको पोहोंच्या दम ॥ ७२

उस समय सद्गुरुका ज्ञान (तारतम ज्ञान) कलियुगी नास्तिकता रूपी

दज्जालको समाप्त कर देगा. यह ज्ञानकी शक्ति जिन लोगों तक पहुँचेगी उन सभीके हृदय निर्मल हो जाएँगे.

कहे सबद सब आगूंहीं, इत खुदा करसी कजाए ।
हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए ॥ ७३

ये सभी बातें पहलेसे ही कही गईं थीं कि अन्त समयमें परमात्मा न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे. वे सभीके कर्मोंका हिसाब (लेखा) लेंगे और उन्हें मुक्तिस्थलोंका सुख प्रदान करेंगे.

रूहअल्ला कुंजी ल्यावसी, मेहेदी इमामत ।
दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत ॥ ७४

कतेब ग्रन्थोंमें पहलेसे ही कहा गया कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूह अल्लाह) तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर प्रकट होंगे और धर्मगुरुके रूपमें धर्मका नेतृत्व (उपदेश) करेंगे उस समय परमधामकी ब्रह्मात्माएँ अवतरित होंगी तथा स्वयं मुहम्मद आकर उनकी अनुशंसा (सिफारीश) करेंगे.

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड देसी कुफर ।
आवसी दीन इसलाममें, दिल साफ होय कर ॥ ७५

उस समय विभिन्न मत-मतान्तरोंमें बँटे हुए लोग अन्धविश्वास (परमात्माके प्रति अविश्वास) छोड़ देंगे और निर्मल हृदय होकर सत्यनिष्ठ धर्ममें सम्मिलित होंगे.

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम ।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम ॥ ७६

इस प्रकार जिनके अन्तर पट (अज्ञानके आवरण) खुल गए वे सत्यनिष्ठ धर्म मार्गमें आ गए. उन्होंने ही परमात्माके वचनों को शिरोधार्य कर एक परमात्माकी पहचान करवाने वाले इस सत्य धर्म (निजानन्द) का दावा किया.

जो बात मैं दिलमें लई, सो हक आगूं रखी बनाए ।
इत काम बीच खुदाय के, काहूं दम ना मार्‌यो जाए ॥ ७७

मैंने जो संकल्प मनमें लिया है धामधनीने उसकी पहलेसे ही व्यवस्था कर

दी है. परमात्माके कार्यमें किसीका भी हस्तक्षेप नहीं हो सकता अर्थात् किसीका वश नहीं चलता.

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबों मिलाए ।
खावंदें बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ ना सके पाए ॥ ७८

धामधनीका आदेश ही ऐसा है कि वह सभीको परस्पर मिला देता है. धामधनीने व्यवस्था ही ऐसी कर रखी है कि कोई भी व्यक्ति इस मार्गसे विचलित नहीं हो सकता.

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर ।
हुकम ऐसा कर छोड्या, काहूं करनी ना पडे फिकर ॥ ७९

धामधनीने रसूल मुहम्मदके द्वारा ग्यारहवीं शताब्दीको कयामतके दिनके रूपमें इस प्रकार दृढ़ कर दिया और ऐसी आज्ञा प्रदान की कि किसीको भी इसके विषयममें चिन्ता नहीं करनी पड़ी.

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक ॥ ८०

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनी सर्वश्रेष्ठ महिमाशाली हैं. जिन पर वे कृपा करते हैं उसे अपने चरणोंमें ले लेते हैं.

प्रकरण १० चौपाई ५७४

दो नामा किताब

मंगलाचरण

अब कहूं विध निगम, देऊं महंमद की गम ।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम ॥ १

महामति कहते हैं, अब मैं वैदिक धर्मग्रन्थोंकी विधि कहकर रसूल मुहम्मदके ध्येय (गम) को समझाता हूँ. जिससे संसारमें मेरा और तेरा भाव (द्वैतभाव) मिट सके ऐसे परब्रह्म परमात्माके प्रेममार्गको भी प्रकट करता हूँ.

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक ।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख ॥ २

मैं धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको विवेकपूर्वक स्पष्ट करता हूँ जिससे संसारमें

प्रचलित सभी धर्म एक परमात्माकी ओर उन्मुख हो जाएँगे. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा प्रदत्त जागृत बुद्धिके ज्ञानकी यह विशेषता है कि इससे माया (भ्रम) के विभिन्न रूप मिट जाएँगे.

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब ।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद ॥ ३

अनेक लोग वेद एवं कतेब ग्रन्थोंमें ब्रह्मका रहस्य खोजकर थक गए. परन्तु किसीने भी उस गूढ़ रहस्यको नहीं जाना. इसलिए सभीके मनमें ब्रह्मज्ञानकी चाहना बनी रही.

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अरथ ॥ ४

आज तक सभी विद्वान् लोग धर्मग्रन्थोंके अर्थोंका अनर्थ (विपरीत अर्थ) करते थे. सद्गुरुके बिना कोई भी समर्थ व्यक्ति नहीं हुआ, जो अज्ञानके आवरणको दूर कर इन धर्मग्रन्थोंका यथार्थ रहस्य स्पष्ट कर सके.

हक नाहीं मिने सृष्टि सुपन, ढूंढ्या ला के लोकन ।
जो जुलमत से उतपन, दै साख आप मुख तिन ॥ ५

इस स्वप्नकी सृष्टिमें परमात्मा नहीं है तथापि निराकारसे उत्पन्न लोगोंने यहाँ पर परमात्माकी खोज की. जो स्वयं निराकारसे उत्पन्न हुए हैं उन्होंने भी अपने मुखसे यही कहा कि परमात्मा यहाँ नहीं है.

कै खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम ।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम ॥ ६

वेदोंने भी अनेक प्रकारसे ब्रह्मकी खोज की, परन्तु उनका पार नहीं पाया. यह सम्पूर्ण सृष्टि जिनकी आज्ञा मात्रसे हुई है, उस परमात्माको किसीने भी नहीं पाया.

कैयों ढूंढ्या चौदे भवन, ढूंढे चार मुक्ति के जन ।
नवधा के ढूंढे भिंन भिंन, ना कछू खबर त्रैगुन ॥ ७

चौदह लोकोंमें अनेक साधकोंने परमात्माकी खोज की, वैकुण्ठमें चार

प्रकारकी मुक्तिके इच्छुक साधकोंने भी परमात्माको खोजा. अनेक साधकोंने नवधा भक्तिके द्वारा भिन्न-भिन्न ढङ्गसे खोज की (किन्तु कोई भी उसे प्राप्त न कर सके). इतना ही नहीं त्रिगुणाधिपति ब्रह्मा, विष्णु, महेशको भी परब्रह्म परमात्माकी सुधि प्राप्त नहीं हुई.

महाप्रले होसी जब, रहे सरगुन ना निरगुन तब ।
निराकार ना सुन, केहेवे को नाहीं वचन ॥ ८

जब महाप्रलय होगा तब सगुण या निर्गुण, शून्य तथा निराकार कुछ भी शेष नहीं रहेगा. तब परमात्माके विषयमें कहनेके लिए शब्द (वचन) भी नहीं रहेंगे.

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया ।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया ॥ ९

वेदोंने ब्रह्मके विषयमें नेति-नेति (ब्रह्म यहीं नहीं हैं और आगे है) इसीलिए कहा जब उन्हें कहीं भी परमात्मा दृष्टिगोचर नहीं हुए. उन्होंने जहाँ भी दृष्टि डाली वहाँ सर्वत्र मायाका ही विस्तार देखा तब उन्होंने स्वयंका नाम निगम रखा.

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन बाचा रही इत हार ।
ढूंढ्या कैयों कै प्रकार, पर चल्या न आगे विचार ॥ १०

इस अनित्य संसारमें परमात्मा नहीं है, मन और वाणी दोनों ही इस विषयमें मौन हो जाते हैं तथापि अनेक लोगोंने विभिन्न प्रकारसे परमात्माको ढूँढ़नेका प्रयत्न किया, परन्तु उनके विचार निराकारसे आगे नहीं बढ़ सके.

कै अवतार किताबां कर, बहु ग्यानी कहावें तीथंकर ।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहूं खबर ॥ ११

अनेक अवतारी पुरुष तथा तीर्थङ्कर विभिन्न ग्रन्थोंकी रचनाकर महान् ज्ञानी कहलाए. इसी प्रकार मुसलमानोंमें भी अनेक लोग परमात्मके मित्र (वली), नबी तथा पैगम्बर कहलाए. परन्तु परमात्माकी सुधि किसीको भी नहीं हुई.

कह्या इतथें आगे सुन, निराकार निरगुन ।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन ॥ १२

सभी लोग यही कहने लगे कि इन चौदह लोकोंसे परे शून्य, निराकार, निर्गुण तथा निरञ्जन है. इसीलिए पूर्णब्रह्म परमात्मा सभीके लिए अगम्य हो गए.

कैयों ढूंढ्या होए दुरवेस, फिरे जो देस विदेस ।
पर पाया न काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस ॥ १३

अनेक लोगोंने फकीरी भेष धारणकर देश-विदेशमें परिभ्रमण करते हुए परमात्माको ढूँढ़ा. इन वेशधारियोंको भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुए. इसलिए उन्होंने कहा कि इस जगतसे परे तो मात्र शून्यमण्डल ही है.

मंगलाचरण तमाम

प्रकरण ११ चौपाई ५८७

साखी ढाल

दौड करी सिकंदरे, ढूंढ्या हैयाती आब ।
बका अरस पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब ॥ १

सिकन्दरने अमरत्व (हैयाती आब) पानेके लिए दौड़ लगाई परन्तु वह अखण्ड परमधामको प्राप्त नहीं कर सका, इतना ही नहीं इस स्वप्नवत् संसारको भी वह पार नहीं कर सका.

हारे ढूंढ ऊपर तले, खुदा न पाया किन ।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन ॥ २

इसी प्रकार अनेक लोग ब्रह्माण्डके ऊपर तथा नीचे परमात्माकी खोज करते हुए थक गए परन्तु किसीको भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुए. तब उन लोगोंने परमात्माको निराकार, निरञ्जन तथा शून्य कह दिया.

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून ।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ॥ ३

इसी प्रकार अन्य लोगोंने भी परमात्माको बेचूँ तथा बेचगूँ कह दिया. वे लोग यह भी कहने लगे कि परमात्माकी कोई आकृति नहीं है इसलिए वह बेशब्बीह तथा बेनिमून है.

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत ।
देखो खोल माएने, अरस हक सूरत ॥ ४

ऐसी स्थितिमें अविनाशी धामसे रसूल मुहम्मद परमात्माके यथार्थ ज्ञानका सन्देश लेकर आए. उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करके देखो, वहाँ पर परमात्माके स्वरूप (आकृति) का वर्णन है.

मैं आया हक का हुकम, हक आवेगा आखरत ।
कौल किया है मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत ॥ ५

रसूलने यह कहा कि मैं परमात्माका आदेश लेकर आया हूँ. स्वयं परमात्मा अन्त समयमें आएँगे. उन्होंने मुझे अपने आनेका वचन दिया है. मैं उनकी पूर्ण पहचानके लिए सङ्केत वचन लेकर आया हूँ.

उतरी अरवाहें अरस से, रूहें बारे हजार ।
और उतरीं गिरो फिरस्ते, और कुन से हुआ संसार ॥ ६

उन्होंने यह भी कहा कि अखण्ड परमधामसे ब्रह्मात्माएँ इस खेलमें अवतरित हुई हैं. उनकी संख्या बारह हजार है. अक्षरधामसे भी ईश्वरीसृष्टिका समूह अवतरित हुआ है तथा परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे संसारके समस्त जीव भी उत्पन्न हुए हैं.

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान ।
जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे सब पेहेचान ॥ ७

रसूल मुहम्मदने कहा कि मैं ब्रह्मात्माओंके लिए परमात्माका सन्देश लेकर आया हूँ, जो मेरे इस यथार्थ ज्ञानको ग्रहण करेंगे उन्हें सब प्रकारकी पहचान हो जाएगी.

सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत ।
तिन पर हैं कै फिरस्ते, तिन पर है मलकूत ॥ ८

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान ।
नूर पार नूर तजल्ला, मैं तहां से ल्याया फुरमान ॥ ९

उन्होंने यह भी कहा कि मृत्युलोकके नीचे सात पाताल लोक हैं. उनके ऊपर

यह मृत्युलोक है. इस लोकके ऊपर कई देवलोक हैं. उनके ऊपर मलकूत (वैकुण्ठ) है. वैकुण्ठके ऊपर शून्य-निराकार है. उससे परे अक्षरधाम है. अक्षरधामसे भी परे अक्षरातीत परमधाम है. मैं वहींसे सन्देश लेकर आया हूँ.

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर ।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर ॥ १०

उन्होंने यह भी कहा कि जिब्रील फरिश्ता भी अक्षरधाम तक ही पहुँचा है किन्तु मैं अक्षरसे परे अक्षरातीतके निकट पहुँचा हूँ. मैंने ब्रह्मात्माओंके लिए अक्षरातीतसे अनेक बातें भी की हैं.

कह्या सुभाने मुझ को, हरफ नबे हजार ।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार ॥ ११
बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए ।
बका दरवाजे खोलसी, आखर को हम आए ॥ १२

अक्षरातीत परमात्माने मुझे ९० हजार शब्द कहते हुए कहा कि इनमें-से ३० हजार शब्दोंको प्रकट करना तथा अन्य ३० हजार शब्द तुम अपनी इच्छानुसार प्रकट करना. शेष ३० हजार शब्दोंको गुप्त रखना. अन्तिम समयमें आकर मैं अखण्डके द्वार खोल दूँगा.

कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखर ।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर ॥ १३

परमात्माने मुझे वचन दिया कि वे अन्त समयमें आएँगे. उन्होंने यह भी कहा हा कि ब्रह्मात्माओंको विश्वास उत्पन्न हो जाए इसलिए तुम पहले ही जाकर उन्हें यह समाचार दे दो.

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार ।
भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार ॥ १४

रसूलने यह भी कहा कि अन्तिम समयमें परमात्मा न्यायाधीशके रूपमें आकर सबके कर्मोंका लेखा-जोखा रखेंगे तब सभी जीवोंको उनके दर्शन

होंगे. वे सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें स्थान देंगे तथा ब्रह्मात्माओंको अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाम ले जाएँगे.

ईसा मेहेदी जबराईल, और असराफील इमाम ।
मार दजाल एक दीन करसी, खोलसी अल्ला कलाम ॥ १५

उस समय सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी अन्तिम समयके धर्मगुरु (महदी) के रूपमें धर्मका नेतृत्त्व करेंगे. जिब्रील एवं इस्त्राफील फरिश्ता उनके साथ होंगे. वे नास्तिकतारूपी दज्जालको मारकर एक धर्मकी स्थापना करेंगे और कुरानादि धर्मग्रन्थोंके रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

सोए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान ।
महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान ॥ १६

इस प्रकार रसूल मुहम्मद द्वारा कहे हुए वचनोंको हिन्दू तथा मुसलमान दोनोंने ही स्वीकार नहीं किया. रसूल मुहम्मदने तो स्पष्ट कहा है किन्तु ये लोग उनके वचनों पर विश्वास नहीं करते.

तो भी न माने हक सूरत, पातसाह इबलीस दिलों जिन ।
कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुन ॥ १७

इतना कहने पर भी बाह्य दृष्टिवाले ये लोग परमात्माके स्वरूपको नहीं मानते हैं. क्योंकि इनके हृदय पर दुष्ट इबलीसका शासन है. उनका कहना है कि परमात्माको किसीने देखा ही नहीं है, इसलिए वह शून्य अथवा निराकार है.

सोई कौल सरीयतने, पकड लिया इनों से ।
कौल तोडत रसूल के, दुसमन बैठा दिलमें ॥ १८

शराअके लोगों ने भी निराकार वादियोंके इन्हीं वचनोंको शिरोधार्य किया है. इसलिए वे रसूलके वचनोंको भङ्ग करते हैं. क्योंकि उनके हृदयमें भी दुष्ट इबलीस शत्रु बनकर बैठा हुआ है.

आखर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर यकीन ।
ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन ॥ १९

यह निश्चित मान लो कि इस अन्तिम (कयामतके) समयमें सद्गुरु श्री

देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) प्रकट हो गए हैं. जो इन वचनोंका रहस्य समझेगा वही इन सद्‌गुरु द्वारा उपदिष्ट धर्ममें माना जाएगा.

जो कछू कह्या महंमदें, ईसे भी कह्या सोए ।
ए माएने सो समझही, जो अरवा अरस की होए ॥ २०

परमात्माके विषयमें रसूल मुहम्मदने जो बातें की हैं, उन सभीकी स्पष्टता सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने की है. परन्तु जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे ही इन वचनोंको समझ पाएँगी.

सात लोक तले जिमी के, मृतलोक है तिन पर ।
इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीचमें, ऊपर विस्नु वैकुंठ घर ॥ २१

निराकार वैकुंठ पर, तिन पर अक्षर ब्रह्म ।
अक्षरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम ॥ २२

इस पृथ्वीके अधोभागमें सात पाताल हैं. उनके ऊपर मृत्युलोक है. इसके ऊपरके लोकोंमें इन्द्र, रुद्र, ब्रह्मा आदि रहते हैं. इन चौदह लोकोंमें सबसे ऊपर भगवान विष्णुका वैकुण्ठ धाम है. वैकुण्ठसे परे निराकार है. उससे परे अक्षरब्रह्म हैं. उनसे भी परे अक्षरातीत परब्रह्म हैं. इस प्रकार सद्‌गुरु देवचन्द्रजी प्रदत्त तारतम ज्ञान स्पष्ट कहता है.

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत ।
इलम एकै विध का, दोऊ की एक सरत ॥ २३

यह विवरण वेद और कतेब दोनों ग्रन्थोंकी यथार्थता प्रकट करता है. दोनोंके ज्ञानमें साम्यता है तथा दोनों एक ही लक्ष्यकी बात कह रहे हैं.

ईसे महंमद मेहेदी का, इन तीनों का एक इलम ।
हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम ॥ २४

ईसा, मुहम्मद और महदी इन तीनोंका ज्ञान एक ही लक्ष्यकी ओर है. उनका तात्पर्य यह है कि इस नश्वर ब्रह्माण्डमें परमात्मा नहीं है तथा यह उनकी आज्ञा मात्रसे बना हुआ है.

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए ।
हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावें ले ॥ २५

इस ब्रह्माण्डके लोगोंमें जिनको भी यह दिव्य तारतम ज्ञान प्राप्त होगा उन्हें परमात्मा अपनी प्राण नलीसे भी निकट प्रतीत होंगे. यह ज्ञान उन्हें इस स्वप्नवत् जगतसे जागृतकर अखण्ड परमधाममें पहुँचाएगा.

करमकांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद ।
जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद ॥ २६

कर्मकाण्ड अथवा शराअमें मग्न हुए लोग रसूल मुहम्मदको तभी समझेंगे जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और इमाम महदी दोनों ही उनकी साक्षी देंगे.

हिंदू न माने कौल महंमद, ना सरीयत मुसलमान ।
यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान ॥ २७

रसूल मुहम्मदके वचनोंको हिन्दू लोग भी स्वीकार नहीं करते और शराअमें पड़े हुए मुसलमान भी स्वीकार नहीं करते. ऐसा समझकर सबको परमात्माके प्रति विश्वास दिलानेके लिए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज चौथे आसमान (परमधाम) से इस जगतमें अवतरित हुए.

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत ।
दे साहेदी महंमद की, करे इमामत ॥ २८

कुरानमें कहे हुए वचनोंके अनुरूप इमाम महदी भी इस संसारमें अवतरित हुए हैं. उन्होंने रसूल मुहम्मदके वचनोंकी साक्षी देकर धर्मका नेतृत्व किया.

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक ।
दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक ॥ २९

इस प्रकार ईसा और इमाम अपने समुदायको कहते हैं कि तुम परमात्माके आदेशके अनुरूप आचरण करो. उन्होंने रसूल मुहम्मदके वचनोंकी साक्षी देते हुए कहा कि तुम मनके सभी सन्देहोंको दूर करो.

पेहेलें लिख्या फुरमानमें, आवसी ईसा इमाम हजरत ।
मारेगा दजाल को, करसी एक दीन आखरत ॥ ३०

रसूल मुहम्मदने कुरानमें पहलेसे ही लिख दिया था कि महान् आत्मा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी भविष्यमें प्रकट होंगे. वे नास्तिक भावना (दज्जाल) को दूर कर अन्तमें सभी लोगोंको एक ही धर्ममें प्रतिष्ठित करेंगे.

वेदों कह्या आवसी, बुध ईस्वरों का ईस ।
मेट कलिजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस ॥ ३१

वैदिक धर्म ग्रन्थोंमें भी इस प्रकार कहा गया है कि कलियुगमें सभी ईश्वरोंके ईश बुद्धजी प्रकट होंगे. वे कलियुगकी आसुरी वृत्तिको मिटाकर जगतके जीवोंको मुक्ति प्रदान करेंगे.

बुध ब्रह्मसृष्टि वास्ते, आवसी कह्या वेद ।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद ॥ ३२

इस प्रकार वैदिक धर्मग्रन्थोंमें कहा गया है कि ब्रह्मसृष्टियोंके लिए बुद्धजी प्रकट होंगे. यह ब्रह्मात्माओंकी बात है इसलिए इस रहस्यको अन्य कोई भी नहीं समझ सकते.

जो नेत नेत कह्या निगमे, सब लगे तिन सबद ।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद ॥ ३३

वेदोंने भी ब्रह्मको नेति-नेति (यही नहीं इससे भी आगे) कहा इसलिए सभी लोगोंने ब्रह्मके विषयमें ये ही शब्द ग्रहण किए. अतः निराकारसे परेका रहस्य इस नश्वर संसारके लोग कैसे समझ पाएँगे ?

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड ।
पाई ना हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ ॥ ३४

कुरानमें भी यही कहा गया है कि वैकुण्ठसे परे शून्य निराकार है इसलिए सब लोग शून्य-निराकारको ही परमात्मा मानने लगे. कुरानमें वर्णित यथार्थताका ज्ञान भी उन्हें नहीं हुआ इसलिए कोई भी शून्यको पार नहीं कर सके.

वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे ना मन अकल ।
कहे कतेब छोड सुरैया को, आगे पोहोंचे ना अरस असल ॥ ३५

वेदोंमें भी कहा गया है कि शून्य-निराकारसे परे मनुष्यकी बुद्धि अथवा मनकी गति नहीं है. इसी प्रकार कतेब ग्रन्थों में भी कहा है कि ज्योति स्वरूप (शून्य सुरैया) को छोड़कर संसारके लोगोंकी बुद्धि अनादि ब्रह्मधाम तक नहीं पहुँच सकती.

निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम ।
सोए करूं सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम ॥ ३६

वेदोंने ब्रह्मको प्राप्त किया जा सकता है ऐसा स्पष्ट कहा है किन्तु स्वप्नके जीव उस रहस्यको कैसे समझ सकते ? अब मैं सद्गुरु प्रदत्त तारतमज्ञानके द्वारा इस रहस्य (परब्रह्मका स्वरूप एवं धाम) को स्पष्ट करता हूँ.

कहूं ईसे के इलम की, जो है हकीकत ।
हक बका अरस उमत, जाहेर करी मारफत ॥ ३७

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रदत्त तारतम ज्ञानकी यथार्थता कहता हूँ, वह यह है कि उसने पूर्णब्रह्म परमात्मा, अखण्ड परमधाम तथा ब्रह्मात्माओंकी पूर्ण पहचान प्रकट कर दी है.

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम ।
सबमें उमत और दुनियां, सोई खुदा सोई ब्रह्म ॥ ३८

विभिन्न सम्प्रदायके अनुयायियोंने परमात्माको अलग-अलग नामोंसे पुकारा है तथा उसकी प्राप्तिके लिए भी अलग-अलग साधना पद्धति ग्रहण की है. इन विभिन्न सम्प्रदायोंके अनुयायियों तथा अन्य सामान्य लोगोंमें समानता यह है कि वे जिसको खुदा अथवा ब्रह्म कह कर पुकारते हैं वह एक ही परब्रह्म परमात्माके लिए किया गया सङ्केत है.

लोक चौदे कहे वेदने, सोई कतेब चौदे तबक ।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक ॥ ३९

वेदोंने ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंकी चर्चा की है, कतेब ग्रन्थोंमें उनको ही

चौदह तबक कहा गया है. वेदोंमें कहा गया है कि ब्रह्म एक है इसी प्रकार कतेब ग्रन्थ भी कहते हैं कि परमात्मा (हक) एक है.

तीन सृष्टि कही वेदने, उमत तीन कतेब ।
लेने न देवे माएने, दिल आडा दुसमन फरेब ॥ ४०

वेदोंमें तीन प्रकारकी सृष्टि (ब्रह्म, ईश्वरी, जीव) की बात की गई है तो कतेबोंमें भी उनको तीन उमत (समूह) कहा है. वेद तथा कतेब दोनोंके अनुयायियोंको उनके मनमें बैठा हुआ झूठा अहङ्कार सीधा अर्थ ग्रहण करने नहीं देता.

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक ।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक ॥ ४१

वेद तथा कतेब दोनों एक-सा ही ज्ञान देते हैं कि सबका (नश्वर) शरीर एक ही प्रकार (पाँच तत्त्व) का बना हुआ है तथा सबके अन्दर आत्मा (चैतन्य) भी एक ही प्रकारकी है. किन्तु इस विवेकको कोई ग्रहण नहीं कर रहा है.

जो कछू कह्या कतेबने, सोई कह्या वेद ।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लडत बिना पाए भेद ॥ ४२

जैसा कतेब ग्रन्थोंमें कहा गया है, वेदोंमें पहलेसे ही वही बात की गई है. वास्तवमें हिन्दू या मुस्लिम दोनों एक ही परमात्माके सेवक (बन्दे) हैं परन्तु इस रहस्यको न समझनेके कारण वे परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं.

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन ।
चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ ना परी किन ॥ ४३

सबकी भाषाएँ भिन्न-भिन्न होनेके कारण उन्होंने परमात्माके नाम भी अलग-अलग रख दिए हैं. इस प्रकार आचरण तथा पूजा-पद्धति भी भिन्न प्रकारकी बनाई गई है. इसीलिए किसीको भी यथार्थ समझमें नहीं आया.

ताथें हुई बडी उरझन, सो सुरझाउं दोए ।
नाम निसान जाहेर करूं, ज्यों समझे सब कोए ॥ ४४

इसलिए दोनोंमें परस्पर बड़ी उलझनें खड़ी हो गई. अब मैं उन दोनोंकी उलझनोंको सुलझा देता हूँ. वेद तथा कतेबोंमें परमात्माके लिए प्रयोग किए हुए नाम तथा सङ्केतोंको स्पष्ट कर देता हूँ जिससे सभी लोग यह रहस्य समझ सकें.

विस्नु अजाजील फिरस्ता, ब्रह्मा मेकाईल ।
जबराईल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराईल ॥ ४५

कुरानमें भगवान विष्णुको अजाजील फरिश्ता तथा ब्रह्माजीको मेकाईल फरिश्ता कहा है. इसी प्रकार दुनियांको जोश प्रदान करने वाले फरिस्ताको जिब्रील एवं तामस स्वरूप रुद्रको इजराईल कहा है.

बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासें बांधे करम ।
ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम ॥ ४६

बुद्धिरूप ब्रह्माजीने मनरूप नारदजीके साथ मिलकर व्यासजीके द्वारा विभिन्न शास्त्रोंकी रचना करवाई और कर्मोंके बन्धन बाँध दिए. इसीको वैदिक कर्मकाण्ड कहा जाने लगा जिसके बन्धनमें बँधकर सभी लोग भ्रमित हो रहे हैं.

वेदें नारद कह्यो मन विस्नुको, जाको सराप्यो प्रजापत ।
राह ब्रह्म की भांन के, सबों विस्नु बतावत ॥ ४७

वैदिक धर्मग्रन्थोंमें नारदमुनिको भगवान विष्णुके मनका स्वरूप माना है. जिनको प्रजापति (ब्रह्माजी) ने श्राप दिया था. इसलिए नारद सदृश अस्थिर मन परमात्माके मार्गसे साधकोंको विचलित कर भगवान विष्णुकी ही श्रेष्ठता दर्शाता है.

दम इबलीस अजाजील को, जाए कुरानें कही लानत ।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत ॥ ४८

कतेब ग्रन्थोंमें भी इबलीस (मन) को अजाजीलका प्राणभूत मानकर धिक्कारा

गया है. वही संसारके लोगोंके अन्तःकरण पर बैठकर उनको कर्मकाण्डकी ओर प्रेरित करता है.

अजाजील दम सब दिलों, बैठा इबलीस ले लानत ।
बीच तौहीद राह छुडाए के, दांएं बांएं बतावत ॥ ४९

इस प्रकार धिक्कारा गया अजाजीलका प्राणस्वरूप मन (इबलीस) संसारके जीवोंके अन्तःकरणमें बैठा हुआ है और सभीको अद्वैतके मार्गसे विचलित कर यत्रतत्र (दायें बायें) भ्रमित करता है.

सोई इबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह ।
एही दुसमन दुनी का, जिन मारी सबों की राह ॥ ५०

वही श्रापित इबलीस सबके हृदयका अधिपति बना हुआ है. वस्तुतः यह संसारके सभी प्राणियोंका शत्रु है जिसने सभीका सन्मार्ग अवरुद्ध कर दिया है.

मलकूत कह्या वैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल ।
अक्षर को नूर जलाल, अक्षरातीत नूरजमाल ॥ ५१

कुरानमें वैकुण्ठ धामको मलकूत तथा मोहतत्त्वको अन्धेरी पाल कहा है. इसी प्रकार अक्षरब्रह्मको नूरजलाल एवं अक्षरातीतको नूरजमाल कहा है.

ब्रह्मसृष्टि कहे मोमिन को, कुमारका फिरस्ते नाम ।
ठौर अक्षर सदरतुल मुंतहा, अरस उल अजीम सो धाम ॥ ५२

ब्रह्मसृष्टियोंको वहाँ पर मोमिन कहा है तथा ईश्वरीसृष्टिको फरिश्ता नाम दिया है. इसी प्रकार अक्षरधामको सदरतुलमुन्तहा एवं परमधामको अरश ए अजीम कहा है.

श्रीठकुरानीजी रूहअल्ला, महंमद श्रीकृस्नजी स्याम ।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अक्षर फिरस्ते नाम ॥ ५३

इसी प्रकार श्रीठकुराणीजीको रूहअल्लाह एवं श्यामसुन्दर श्रीकृष्णजीको मुहम्मद कहा है तथा ब्रह्मात्माओंको दरगाहकी रूह एवं अक्षरब्रह्मकी सुरताको फरिश्ता नाम दिया है.

बुधजीको असराफील, बिजिया अभिनंद इमाम ।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम ॥ ५४

अक्षरकी बुद्धिको इस्त्राफील तथा विजयाभिनन्दको इमाम महदीकी संज्ञा दी है. इस प्रकार वेद तथा कतेबोंमें दिए गए भिन्न-भिन्न नामोंको लेकर सभी लोग अपनी-अपनी भाषामें ही उलझें हुए हैं.

वाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख ।
अंदर दोऊ के गफलत, लडत वास्ते भाख ॥ ५५

अन्यथा वेद-कतेब दोनों एक ही परमात्माकी साक्षी दे रहे हैं. किन्तु उन दोनोंको मानने वाले हिन्दू तथा मुसलमान दोनोंके अन्दर अज्ञानरूप अन्धकार भरा हुआ होनेसे दोनों ही भाषा भेदके कारण परस्पर लड़ रहे हैं.

प्रकरण १२ चौपाई ६४२

कंसे काला गृहमें, किए वसुदेव देवकी बंध ।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अंध ॥ १

श्रीमद्भागवतमें उल्लेख है कि राजमदमें अन्धा बना हुआ कंसने वसुदेव और देवकीको कारागृहमें बन्दी बनाया एवं स्वयं अपने भाञ्जोंको मार डाला.

नूह काफर की बंधमें, रहे साल चालीस ।
बेटे मारे कै दुख दिए, तो भी काफरें न छोडी रीस ॥ २

कतेब ग्रन्थोंमें भी इसी प्रकारका उल्लेख है कि नूह पैगम्बर अविश्वासी क्रूर राजाके बन्धनमें चालीस वर्ष तक पड़े रहे. उस आततायीने नूह पैगम्बरके पुत्रोंको मार डाला और उनको अनेक यातनाएँ दी तथापि उसका कोप शान्त नहीं हुआ.

कहे वेद वैकुंठ से, आए चत्रभुज दिया दीदार ।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नंद द्वार ॥ ३

वैदिक धर्मग्रन्थ श्रीमद्भागवतमें उल्लेख है कि श्रीकृष्ण जन्मके समय चतुर्भुज भगवान विष्णुने वैकुण्ठसे आकर कंसके कारागृहमें वसुदेव-देवकीको दर्शन दिए और वसुदेवको उपदेशके अनुसार श्रीकृष्णको गोकुलमें नन्दबाबाके घर पहुँचा दिया.

मलकूत से फिरस्ता, नूह समझाया आए ।
नसीहत कर पीछा फिर्‌या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए ॥ ४

कतेब ग्रन्थोंमें कहा है कि मलकूतसे फरिश्ताने आकर नूह पैगम्बरको (शाम-श्यामकी सुरक्षाके लिए) समझाया. इस प्रकार उपदेश देकर उस फरिश्ताके लौटने पर नूह पैगम्बरने शामको निर्दिष्ट स्थानमें पहुँचाया.

अहीरों की कोम में, जित मेहेतर नंद कल्यान ।
सुख लिया ब्रज वधुएं औरों न हुई पेहेचान ॥ ५

श्रीमद्भागवतके अनुसार यादव (आहिर) समुदायमें, जहाँ पर नन्दबाबा तथा कल्याणजी अग्रणी माने जाते हैं, श्री कृष्णका प्रादुर्भाव हुआ. व्रजवधुओंने व्रजलीलामें उनसे आनन्द प्राप्त किया परन्तु अन्य लोगोंको श्रीकृष्णके स्वरूपकी पहचान नहीं हुई.

मेहेतरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार ।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार ॥ ६

इधर कतेब ग्रन्थोंके अनुसार मेहत्तर समुदायमें हूद पैगम्बर और कील अग्रणी माने जाते थे. प्रलयके समय टापूमें आए हुए अपने लोगोंको जिब्रीलकी सहायतासे रसूलने आत्मिक आहार प्रदान किया.

खेल हुआ जो लैलमें, तकरार जो अव्वल ।
उतरी रूहें फिरस्ते, अरस के असल ॥ ७

इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के प्रथम खण्ड (अव्वल तकरार) अर्थात् व्रजकी लीलामें अखण्ड धामसे बह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि अवतरित हुई हैं.

सात रात आठ दिन का, सुकें कह्या इन्द्र कोप ।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृत लोक ॥ ८

श्रीमद्भागवतके अनुसार व्रजमण्डलमें सात रात और आठ दिन तक आँधीके साथ वर्षा हुई उसे शुकदेवमुनिने इन्द्रकोप कहा है. उस समय मृत्युलोकका

प्रलय करनेके लिए पवन, अग्नि और जलको भेजा गया था.

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकल ।
जल प्रले के फिरवले, अंदर न हुआ दखल ॥ ९

उस समय श्रीकृष्णजीने गोवर्धन पर्वतको उठाकर गोकुल गाँवको सुरक्षित रखा. यद्यपि प्रलयका जल चारों और फैल गया किन्तु व्रजमंडलके अन्दर जलकी एक बूँद भी प्रविष्ट न हो सकी.

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद मेहेतर ।
राखी रूहें कोहतूर तले, और डूब मुए काफर ॥ १०

कतेब ग्रन्थोंमें उल्लेख है कि हूद पैगम्बरके नगरमें सात रात और आठ दिन तक भयङ्कर तूफान आया. उस समय श्रेष्ठ आत्माओंको कहतूर पर्वतके नीचे रखकर उनकी रक्षा की जबकि अधर्मी (काफिर) लोग डूबकर मर गए.

हूद कह्या नंदजीय को, टापू व्रज अखंड ।
कोहतूर गोवरधन कह्या, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥ ११

श्रीमद्भागवतमें वर्णित नन्दबाबाको ही कुरानमें हूद पैगम्बर कहा है और अखण्ड व्रजमण्डलको टापू तथा गोवर्धन पर्वतको कोहतूर कहा है. ये सभी स्थान इस नश्वर ब्रह्माण्डसे परे हैं.

जोगमायाकी नाव कर, तित सखियां लै बुलाए ।
सो सोभा है अति बडी, जित सुख लीला खेलाए ॥ १२

(कुरानका एक और कथानक है कि नूह पैगम्बर अपने लोगोंको नावमें चढ़ाकर सुरक्षित टापूमें ले गए थे. यह कथानक भी श्रीमद्भागवतके साथ साम्य रखता है). योगमायाके नावमें सखियोंको बैठाकर श्री कृष्णने उन्हें अपने पास (वृन्दावनमें) बुलाया. उस चिन्मय वृन्दावनकी शोभा अनुपम है. जहाँ पर आनन्दमयी रासलीला रचाई गई.

समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढाए ।
सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए ॥ १३

योगमायाकी नाव बनाकर ब्रह्मात्माओंको उस पर बैठाया गया, वस्तुतः वे

श्याम परमात्मा ही मुहम्मदके आत्म (चिराग) स्वरूप हैं जिन्होंने मोमिनोंको पार पहुँचा दिया.

वेदें कह्या स्याम व्रजमें, आए नंद के घर ।
पीछे आए राममें, इत हुई नहीं फजर ॥ १४

वैदिक ग्रन्थ श्रीमद्भागवतमें कहा है, श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण व्रज मण्डलमें नन्दजीके घर अवतरित हुए हैं. तदुपरान्त वे रास मण्डलमें आए. जहाँ पर प्रभात हुआ ही नहीं अर्थात् रासलीला निरन्तर (अखण्ड) रूपसे चलती रही.

कालमाया इंड पेहेलें रच्यो, जोगमाया रचियो और ।
फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर ॥ १५

व्रजलीलाके लिए कालमायाके ब्रह्माण्डकी रचना पहले हुई. फिर उसके बाद रासलीलालके लिए योगमायाके मण्डलकी रचना हुई. रासलीलाके उपरान्त पुनः कालमायाके ब्रह्माण्ड (प्रतिबिम्ब व्रज) की रचना हुई है. किन्तु सभीको यही लगा कि यह वही ब्रह्माण्ड है और लीलाका स्थान भी वही है.

पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर ।
तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर ॥ १६

कतेब ग्रन्थोंमें लैलतुलकद्रके प्रथम खण्डमें हूद पैगम्बरके घरका उल्लेख है. दूसरे खण्डमें नूह पैगम्बरके नाव पर बैठ कर बागमें पहुँचनेका उल्लेख है. इसी प्रकार तीसरे खण्डमें प्रभात (फजर) की लीलाका उल्लेख है. किन्तु सभी लोगोंको यही लगा कि वही लैलतुलकद्र निरन्तर चल रही है.

किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढाए ।
स्याम बेटा नूह नबीय का, फिर्‌या किस्ती पार पोहोंचाए ॥ १७

नूह पैगम्बर द्वारा बनाई गई नौका पर अपनी अङ्गरूपा रूहोंको बैठाकर नूह नबीके बेटे शामने उस किस्तीको पार पहुँचाया.

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान ।
मोमिन सबे किस्ती चढे, ए नई हुई जहान ॥ १८

कुरानके अनुसार नूह पैगम्बरके नगरमें आए हुए तूफानमें अविश्वासी (काफिर) लोग डूब गए और मोमिन नौका पर चढ़कर पार पहुँचे. पश्चात् नई सृष्टि की गई.

कह्या वेदें कृस्न अवतार की, पेहेलें आए व्रजके माहें ।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहांए ॥ १९

वैदिक ग्रन्थ श्रीमद्भागवतके अनुसार श्रीकृष्णजी पहले व्रज मण्डलमें अवतरित हुए. रातमें हुई रासलीला तक वे वृन्दावनमें रहे. तत्पश्चात् प्रभात से तीसरी जागनी लीलाका शुभारम्भ हुआ.

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल ।
दोए पीछे ए तीसरा, ए जो भया फजर का खेल ॥ २०

कुरानके अनुसार नूह तूफानके समय लैलतुलकद्रके दो खण्ड व्यतीत हो गए. तत्पश्चात् तीसरे खण्डमें प्रभात (फजर) का खेल रचा गया.

कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार ।
लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार ॥ २१

कुरानमें रसूल मुहम्मदने उल्लेख किया है कि खुदाका एक दिन संसारके एक हजार वर्षों जितना होता है. लैलतुलकद्रके तीसरे खण्ड अर्थात् प्रभातकी वेलामें संसारके सभी लोगोंको परमात्माके दर्शन होंगे.

लैल बडी महीने हजार से, ए बताए दई सरत ।
सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत ॥ २२

रसूल मुहम्मदने परमात्मा (खुदा) की एक रात्रि (लैल)को हजार महीनेसे भी अधिक लम्बी बताया और यह वचन दिया कि खुदाका एक दिन और एक रात व्यतीत होनेके पश्चात् अर्थात् ग्यारहवीं शताब्दीमें प्रभात होगा, उसीको कयामतका दिन समझना.

ब्रह्मसृष्टि सखियां स्याम संग, खेले ब्रज रास के माहें ।
ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांएं ॥ २३

ब्रह्मसृष्टियोंने श्रीकृष्णजीके साथ व्रज और रासकी लीलाएँ की. प्रभातके समयकी इस जागनी लीलाके लिए वे पुनः इस तीसरे ब्रह्माण्डमें आई हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! तुम उनका विवरण सुनो.

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार ।
सोए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कारगुजार ॥ २४

धामधनीने ब्रह्मात्माओंको संसारका खेल दिखाया. उसके तीन चरण (व्रज, रास और जागनी) कहे गए हैं. उनमें-से यह तीसरी जागनी लीला तारतम ज्ञानके प्रभातमें हो रही हैं. अब मैं उसका विवरण दे रहा हूँ.

कालमाया जोगमाया, बीच कहे परले दोए ।
एह खेल भया तीसरा, माएने बुधजी बिना न होए ॥ २५

कालमाया और योगमाया इन दोनोंके बीच दो बार जगतका लय हुआ. पुनः जागनी लीलाके लिए तीसरे ब्रह्माण्डकी रचना हुई. बुद्धजीके बिना इस रहस्यको कोई भी स्पष्ट नहीं कर सकता.

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान ।
परले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान ॥ २६

कुरानमें हूद पैगम्बरके समयमें आए हुए तूफानका वर्णन है और नूह तूफानके समय नौका पर चढ़ाकर मोमिनोंको बचा लेनेकी भी चर्चा की गई है. इस प्रकार रसूलने दो प्रलयोंका स्पष्ट उल्लेख किया है.

पेहेलें भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर ।
स्याम सरूप है ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर ॥ २७

श्रीमद्भागवतके अनुसार व्रज मण्डलमें दो भाई अवतरित हुए. उनमें एक श्याम श्रीकृष्ण हैं और दूसरा हलधर बलभद्र हैं. उन दोनोंमें से श्याम ब्रह्मके स्वरूप हैं जिन्होंने रासलीला रचाई.

दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम ।
स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम ॥ २

इसी प्रकार कुरानमें भी नूह पैगम्बरके दो पुत्रोंका उल्लेख है. उनमें-से एक शाम तथा दूसरा हिशाम है. उन दोनोंमें-से शामने तूफानके समय नौकाको सम्भाला और श्रेष्ठ आत्माओंको उसमें बैठाकर सुख (आराम) प्रदान किया.

हलधर आतम नारायण, जो आया हिंदुस्तान ।
साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान ॥ २९

हलधर (बलराम) शेषशायी नारायणकी आत्मा अर्थात् सङ्कर्षण व्यूह माने जाते हैं. वे भारतभूमिमें प्रकट हुए. उनको हिन्दूओंमें मूर्धन्य माना गया है. वे ही वेद व्यासजीके रूपमें भागवत तथा गीताका ज्ञान लेकर आए हैं.

बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम ।
सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम ॥ ३०

कुरानके अनुसार नूह पैगम्बरके पुत्र हिशामको भारतभूमिका जनक कहा है जो नूह तूफानके बाद भारतमें आये.

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान ।
हकीकत अखंड धाम की, तिन बांधी सब जहान ॥ ३१

रासलीलाके पश्चात् श्याम श्रीकृष्ण रसूल मुहम्मदके रूपमें परमात्माका सन्देश लेकर अरब देशमें आए. उन्होंने परमधामका वृत्तान्त कहा और संसारके लोगोंको शराअके बन्धनोंमें बाँध दिया.

सो बुधजी सुर असुरनपें, लेसी वेद कतेब छीन ।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों यकीन ॥ ३२

अब वे ही श्रीकृष्ण बुद्धजी (बुद्धनिष्कलङ्क) के रूपमें प्रकट हुए हैं वे हिन्दुओंसे वैदिक कर्मकाण्ड एवं मुसलमानोंसे कुरान निर्दिष्ट शराअ छीन लेंगे. यह भी कहा है कि वे आसुरी वृत्तिको दूर कर परब्रह्म परमात्माके प्रति विश्वास दिलाएँगे.

बाप फारस रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम ।
फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम ॥ ३३

कुरानमें ईरान, अरब, इटली (रोम) आदि देशोंके पिताके रूपमें शामका

उल्लेख किया है. परमात्माका आदेश लेकर आनेके कारण उनको ही रसूल मुहम्मद भी कहा है.

वेद कतेब सबनपें, लेसी छीन बुधजी ।
खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टि ॥ ३४

शास्त्रोंमें कहा है कि श्रीकृष्णजी बुद्धजीके रूपमें प्रकट होकर वेद तथा कतेब ग्रन्थोंके बाह्य अर्थको माननेकी परम्परा दूर करेंगे तथा ब्रह्मसृष्टियोंमें बैठकर उन ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हुए सबको मुक्ति प्रदान करेंगे.

ए खिताब महंमद मेहेदीपे, जाकी करे मुसाफ सिफत ।
सो महंमद मेहदी खोलसी, आखर अपनी बीच उमत ॥ ३५

कुरानके अनुसार यह शोभा महदी मुहम्मदकी है, वहाँ पर उनकी प्रशंसा की गई है. यह भी कहा है कि महदी मुहम्मद अन्तिम समयमें आकर अपने समुदायमें धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करेंगे.

अवतार तले विस्नु के, विस्नु करे स्याम की सिफत ।
इन विध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुधजी इत ॥ ३६

शास्त्रोंमें सभी अवतार भगवान विष्णुके माने गए हैं किन्तु भगवान विष्णु भी श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करते हैं. वेदोंमें किए गए उल्लेखके अनुसार वे ही श्रीकृष्णजी बुद्धजीके रूपमें प्रकट हुए हैं.

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम ।
ए मुकरर सब महंमदपें, सो महंमद कह्या जो स्याम ॥ ३७

कतेब ग्रन्थोंमें अनेक प्रकारसे पैगम्बरोंकी प्रशंसा की गई है. वस्तुतः वह सारी शोभा मुहम्दकी है. वे मुहम्मद श्रीकृष्णजीके ही स्वरूप कहे गए हैं.

तीथंकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार ।
तो बुजरकी इत कहां रही, जो कायम न खोले द्वार ॥ ३८

इस जगतमें अनेक तीर्थङ्करों तथा अवतारोंने परमात्माकी खोज की है. उन सबकी महत्ता कैसे स्वीकार की जाएगी जब वे अखण्डके द्वार ही नहीं खोल पाए.

अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध ।
तोलों द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजिया अभिनंद बुध ॥ ३९

अवतारोंने इस जगतमें आकर क्या किया ? जब वे अखण्डकी सुधि ही नहीं दे सके. परमधामके द्वार तब तक बन्द ही रहे अर्थात् परमधामका रहस्य स्पष्ट नहीं हुआ जब तक विजयाभिनन्द बुद्धजीने प्रकट होकर उन सब द्वारोंको खोल नहीं दिया.

सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम ।
उमत सबे रानी गई, इनों किन को दिया पैगाम ॥ ४०

कुरानमें सभी पैगम्बरोंकी प्रशंसा की गई किन्तु उन सबके अनुयायियोंको निरस्त किया. तो फिर उन्होंने किसको सन्देश दिया था अर्थात् उनके सन्देशका क्या लाभ हुआ ?

लिखी बडाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत ।
अजूं ठाढी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत ॥ ४१

कुरानमें जिन पैगम्बरोंकी प्रशंसा की गई है, उनके उपदेश कहाँ चले गए क्योंकि आज भी उनके अनुयायी आग और पत्थरकी पूजा कर रहे हैं.

करी किताबें मनसूख, हुए जमाने रद ।
ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लों आखर आए महंमद ॥ ४२

इसलिए भूतकालके सभी पैगम्बरोंके उपदेश ग्रन्थोंको निरस्त कर दिया गया. नूह तूफानके पश्चात् इस जगतमें जब तक अन्तिम युगके सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (मुहम्मद) का अवतरण नहीं हुआ तब तक ब्रह्मात्माओंका अवतरण भी नहीं हुआ.

रात बडी है रास की, कही सुकें और व्यास ।
ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टि प्रकास ॥ ४३

शुकदेवजी तथा व्यासजीने रासकी रात्रिको बहुत बड़ी माना है. इसी रात्रिमें परब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओंकी अखण्ड लीलाओंका प्रकाश हुआ है.

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन ।
रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान ॥ ४४

मृत्युलोक तथा स्वर्ग लोककी रात्रि एवं ब्रह्माजी तथा भगवान नारायणकी रात्रि भी रासलीलाकी इस महान् रात्रिमें ही समाहित हो जाती है.

रात कही कदर की, बोहोत बडी है सोए ।
फिरत चिरागें इनमें, चांद सूर ए दोए ॥ ४५

कुरानमें भी इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) को बहुत बड़ी बताया है. इस विशेष रात्रिमें सूर्य तथा चन्द्रमा भी दीपकोंके समान भ्रमण करते दिखाई देते हैं.

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म ।
दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्ट लेसी कदम ॥ ४६

व्रज, रास और जागनी इन तीनों लीलाओंके प्रकट होने पर इस ब्रह्माण्डमें परब्रह्म परमात्माका आनन्द (सुख) प्रकट होगा क्योंकि इस लीलामें परब्रह्म स्वयं प्रकट होकर संसारके सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे एवं ब्रह्मसृष्टिको अपने चरणशरणमें ले लेंगे.

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर ।
एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर ॥ ४७

ब्रह्मात्माएँ इस महिमामयी रात्रिके तीनों खण्डोंमें संसारमें आईं हैं. किन्तु इस रात्रिका महत्त्व तभी प्रकट होगा जब प्रभातके समय (जागनी लीलामें) संसारके लोगोंका एक ही धर्म स्थापित हो जाएगा और उन्हें अखण्ड सुखकी प्राप्ति होगी.

ब्रह्मसृष्टि प्रेम लक्षमें, कुमारिका ईस्वर ।
तीसरी जीव सृष्टि दुनियां, वेद कहत यों कर ॥ ४८

वैदिक ग्रन्थोंमें तीन प्रकारकी सृष्टिका वर्णन है उनमें प्रथम प्रेमलक्षणा भक्तियुक्त ब्रह्मसृष्टि हैं. दूसरी कुमारिका हैं जिन्हें ईश्वरीसृष्टि भी कहते हैं तथा तीसरी जीवसृष्टि सांसारिक जीवोंको कहा गया है.

खास रूहें उमत की, और मुतकी दीन इसलाम ।
और तीसरी आम खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम ॥ ४९

इसी प्रकार कुरानमें भी विशेष आत्माओंको ब्रह्मसृष्टि कहा है, धर्म पर दृढ़ रहनेवाली आत्माओंको ईश्वरीसृष्टि तथा सर्वसाधारण जीवको तीसरी (जीव) सृष्टि माना है.

ब्रह्मसृष्ट अक्षरातीत से, ईस्वरी सृष्टि अक्षर से ।
जीव सृष्टि वैकुंठ की, ए जो गफलत में ॥ ५०

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत परमधामसे, ईश्वरीसृष्टि अक्षरधामसे तथा जीवसृष्टि वैकुण्ठसे इस नश्वर खेलमें आई हैं.

रूहें उमत कही लाहूती, और फिरस्ते जबरूती ।
और आम खलक तारीकी से, सो सब कुंन से मलकूती ॥ ५१

इसी प्रकार कुरानमें विशिष्ट आत्माओंके समूहको लाहूती (परमधामकी), ईश्वरीसृष्टि (फरिश्तों) को जबरूती (अक्षरधामकी) एवं सर्वसाधारण जीवको शून्य, निराकारसे आए हुए माना है. ये सभी वैकुण्ठके (मलकूती) जीव परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहनेसे उत्पन्न हुए हैं.

बुध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर ।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर ॥ ५२

शास्त्रोंमें इस प्रकारका उल्लेख है कि कलियुगमें बुद्धनिष्कलङ्क प्रकट होंगे और कलियुगका संहार करेंगे. वे सबकी आसुरीवृत्तिको मिटाकर उन्हें मुक्तिका सुख प्रदान करेंगे.

विजीयाभिनंदन बुध जी, लिखी एही सरत ।
ब्रह्मसृष्टि जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त ॥ ५३

शास्त्र वचनोंके अनुसार विजयाभिनन्द बुद्धजी निश्चित समय पर प्रकट होंगे, उस समय ब्रह्मात्माएँ भी प्रकट होंगी और सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगी.

ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन ।
ए दजाल को मार के, देसी सबों यकीन ॥ ५४

श्रीदेवचन्द्रजीके ज्ञानके प्रतापसे सर्वत्र एक ही सत्यधर्मका विस्तार होगा. वे तारतम ज्ञानके द्वारा नास्तिक भाव (दज्जाल) को मिटाकर सबको एक परमात्माके प्रति विश्वास दिलाएँगे.

चरन रज ब्रह्म सृष्टिकी, ढूंढ थके त्रैगुन ।
कै विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन ॥ ५५

ब्रह्मसृष्टियोंकी चरणरजकी खोजमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी थक गए. शास्त्रोंमें उल्लेख है कि उन्होंने इसके लिए अनेक प्रकारसे तपस्याएं भी की थी.

करसी पाक चौदे तबकों, लाहूती उमत ।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत ॥ ५६

कुरानमें ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसा इस प्रकार की गई है कि परमधामकी आत्माएँ (लाहूती उमत) इस संसारमें आकर चौदह लोकोंको पवित्र करेंगी तथा सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंका सुख दिलाएँगी.

बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत विध सब ।
बडाई ब्रह्मसृष्टि की, ए जो लीला होत है अब ॥ ५७

इस प्रकार कुरानमें ब्रह्मात्माओंके प्रकट होनेके वर्ष, महीने और दिनोंकी निश्चित अवधि भी लिख दी गई तथा विभिन्न प्रकारके सङ्केत भी दिए गए. यह सब महिमा उन्हीं ब्रह्मसृष्टियोंकी है जो वर्तमान समयमें लीला कर रहीं हैं.

साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत ।
सिफत उमत मोमिनों, ए जो जाहेर होत आखरत ॥ ५८

कुरानमें भी कयामतके समयके लिए वर्ष, मास और दिनोंका निश्चित उल्लेख किया गया है. यह भी उन्हीं ब्रह्मात्माओंकी महिमा है जो कयामतके समयमें प्रकट हुई हैं.

विजियाभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावे पार ॥ ५९

शास्त्रोंका कहना है कि विजयाभिनन्द बुद्धजी निष्कलङ्कके रूपमें अवतरित होंगे और संसारके सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति दिलाकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरको भी पार पहुँचाएँगे.

महंमद मेहेदी आवसी, और ईसा हजरत ।
ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत ॥ ६०

इसी प्रकार कुरानमें भी कहा है कि अन्तिम समयके अधिपतिके रूपमें अन्तिम धर्मगुरु एवं मुहम्मद महदी न्यायाधीशके रूपमें प्रकट होंगे.वे अपने वचनानुसार सभी जीवोंका लेखा (हिसाब) लेकर उन्हें अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान करेंगे.

अखंड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म ।
बुध विजियाभिनंदन जाहेर, जाहेर काटे दुनीके करम ॥ ६१

उन सभी धर्मग्रन्थोंके अनुरूप अखण्ड परमधाम तथा ब्रह्मानन्द सुख यहाँ प्रकट हो गए. विजयाभिनन्द बुद्धजी भी प्रकट हो गए और उन्होंने संसारके जीवोंके कर्मबन्धनोंको काट डाला.

भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक ।
काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक ॥ ६२

अब संसारमें अखण्डमुक्ति स्थल तथा नरक दोनोंका अस्तित्व स्पष्ट होगा. सम्पूर्ण विश्वके स्वामी परब्रह्म परमात्मा प्रकट हो गए हैं. अब वे न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे.

कै हुए ब्रह्मांड कै होएसी, पर ए लीला न हुई कब ।
विलास बडो ब्रह्मसृष्टि में, सुख नयो पसरसी अब ॥ ६३

ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड पहले भी उत्पन्न हुए हैं और भविष्यमें भी होंगे. किन्तु यह ब्रह्मलीला पहले कभी प्रकट नहीं हुई थी. इस ब्रह्माण्डमें ब्रह्मसृष्टियोंने

बड़ा आनन्दविलास किया है अतः एव अब यह नया (अखण्ड) सुख सर्वत्र विस्तृत हो जाएगा.

कै दुनी हुई कै होएसी, पर कबूं ना जाहेर उमत ।
दे भिस्त चौदे तबकों, करे बखत रोज कयामत ॥ ६४

अनेक बार संसारकी सृष्टि हुई और भविष्यमें भी होगी परन्तु अभी तक ब्रह्मात्माएँ प्रकट नहीं हुईं थीं. अब यह ऐसा काल है जिसमें ब्रह्मात्माएँ प्रकट होकर आत्म-जागृतिके समयको स्पष्ट करते हुए चौदह लोकोंके जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगी.

रसम करमकांड की, हुती एते दिन ।
अब इलम बुधजीएके, दै सबों प्रेम लछन ॥ ६५

आज तक संसारमें कर्मकाण्डके नियम ही प्रचलित थे. अब बुद्धजीके तारतमज्ञानने सभीको प्रेमलक्षणाभक्ति प्रदान की.

सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन ।
महंमद मेहेदी जाहेर होए के, इसक दिया सबन ॥ ६६

कतेब परम्पराके लोग भी इतने दिनों तक शराअके नियममें रहकर औपचारिक पूजा (फरज बन्दगी) ही करते आए थे. अब मुहम्मद महदीने प्रकट होकर उन सभीको प्रेमका मार्ग दिखाया.

पेहेचान बुध निहकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्टि ।
याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या द्रष्ट ॥ ६७

बुद्धनिष्कलङ्क अवतार तथा ब्रह्मसृष्टियोंकी पहचानके लिए वेदोंमें भी प्रार्थना की गई है. किन्तु आज तक उनको न किसीने अपनी आखोंसे देखा था और न ही कानोंसे सुना था.

पेहेचान महंमद रूह अल्ला, और पेहेचान मोमन ।
तोरा सबों पर इन का, यों कहे कुरान रोसन ॥ ६८

कुरानमें भी मुहम्मद (प्रशंसित) रूहअल्लाह (श्री देवचन्द्रजी) और मोमिन (ब्रह्मात्माओं) की पहचान की बात स्पष्ट कही है और यह भी कहा है कि सर्वत्र इनका ही शासन चलेगा.

तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढापन ।
ब्रज रास प्रभात को, ए बुध जी को रोसन ॥ ६९

वेदोंने बाल, किशोर और वृद्धावस्था इस प्रकार ब्रह्मके अवतरणके तीन स्वरूपोंकी बात की है. व्रज, रास तथा जागनीके प्रभातकी इन लीलाओंका रहस्य बुद्धजीने ही प्रकट होकर स्पष्ट किया है.

ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्टि में, चढती चढती कहे वेद ।
प्रेम लक्ष दोऊ कहें, किए जाहेर बुधजीएं भेद ॥ ७०

वैदिक धर्मग्रन्थोंमें ब्रह्मसृष्टिकी इस जगतमें होनेवाली लीलाओं-व्रज, रास और जागनीको एक दूसरेसे अधिक विशिष्ट कहा है. वेद तथा कतेब दोनोंने ब्रह्मसृष्टिको प्रेमस्वरूपा कहा है. बुद्धजीने प्रकट होकर इस रहस्यको स्पष्ट कर दिया.

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप ।
सो कुरान यों केहेवही, सुंदर रूप अनूप ॥ ७१

कुरानमें इस प्रकार कहा है कि इस संसारमें परब्रह्म परमात्मा तीन स्वरूपमें प्रकट हुए. जिनके सुन्दर स्वरूपकी उपमा नहीं दी जा सकती.

एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढापन ।
सुंदरता सुग्यान की, बढत जात अति घन ॥ ७२

परमात्माके इन तीन स्वरूपोंमें एक बालस्वरूप (व्रजलीला) दूसरे किशोर स्वरूप (रासलीला) तीसरे प्रौढस्वरूप (जागनी लीला) कहे गए हैं. उन स्वरूपोंमें ज्ञानकी सुन्दरता उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है.

ज्यों चढती अवस्था, बाल किसोर बुढापन ।
यों बुध जागृत नूर की, भई अधिक जोत रोसन ॥ ७३

जिस प्रकार बाल, किशोर और प्रौढ ये तीनों अवस्था उत्तरोत्तर विकसित होती हैं उसी प्रकार अक्षर ब्रह्मकी जागृत बुद्धिका प्रकाश भी इन तीनोंमें क्रमशः बढ़ता रहा है.

ए केहेती हूं प्रगट, ज्यों रहे ना संसे किन ।
खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भांने विकल्प मन ॥ ७४

मैंने इसलिए स्पष्टता की है कि जिससे किसीके मनमें लेशमात्र भी संशय

न रहे. इस प्रकार कुरानके रहस्योंको स्पष्टकर सबके मनके सङ्कल्प-विकल्पोंको दूर कर दिया है.

श्री कृस्नजीएं व्रजरास में, पूरे ब्रह्मसृष्ट मन काम ।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम ॥ ७५

श्रीकृष्णजीने व्रज और रासकी लीलामें ब्रह्मात्माओंकी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं. वही स्वरूप कुरानका सन्देश लेकर आया है तब वे ही श्याम रसूल मुहम्मद कहलाए.

चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम ।
पांचमा सरूप निज बुधका, खोल माएने भए इमाम ॥ ७६

श्रीकृष्णजीका चतुर्थ स्वरूप श्री देवचन्द्रजी (ईसा रूहअल्लाह) का है जो परमधामकी यथार्थता स्पष्ट करने वाले तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर प्रकट हुए हैं. पाँचवाँ स्वरूप निष्कलङ्क बुद्धका है जो वेद-कतेबके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर इमाम महदी कहलाए.

ए भी पांच सरूप का, है बेवरा माहें कुरान ।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान ॥ ७७

इन पाँचों स्वरूपोंका विवरण भी कुरानमें दिया गया है. श्रीमद्भागवतमें जिस प्रकारका उल्लेख है उसकी साक्षी कुरानमें दी गई है.

एही बडी इसारत, इमाम की पेहेचान ।
सब को सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान ॥ ७८

कुरानके अनुसार इमामकी पहचानका यह सबसे बड़ा सङ्केत है कि वे सभीको सब प्रकारसे समझाएँगे.

वेद कहे बुध इनपें, और बुध सुपन ।
एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन ॥ ७९

वैदिक धर्म ग्रन्थोंमें भी यही कहा है कि जागृत बुद्धि बुद्धजीमें ही प्रकट हुई है तथा अन्य सभी बुद्धि स्वप्नकी बुद्धि है. यही बुद्धजी सबको जागृत कर त्रिगुणोंको भी मुक्ति देंगे.

हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम ।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम ॥ ८०

वेदादि धर्मग्रन्थोंकी भविष्यवाणीके आधार पर हिन्दूलोग कहते हैं कि परब्रह्म परमात्मा बुद्धनिष्कलङ्कके रूपमें पधारेंगें. उनके सन्मुख पहुँचने पर हमारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी.

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम ।
लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम ॥ ८१

इसी प्रकार कुरानकी भविष्यवाणीके आधार पर मुसलमान भी कहते हैं कि हमारे परमात्मा न्यायाधीशके रूपमें प्रकट होंगे. उस समय हमारे पैगम्बर उनके आगे हमारे लिए अनुशंसा (सिफारीस) करेंगे.

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरगान ।
किल्ली भिस्त जो याहींपे, खोल देसी नसरान ॥ ८२

ईसाई भी अपने धर्मग्रन्थ बाइबलके आधार पर कहते हैं कि ईसाके कथनानुसार परमात्मा पुनः प्रकट होंगे. मुक्ति स्थलोंके द्वारोंकी कुञ्जी उनके हाथमें होंगी. वे अपने अनुयायी (ईसाई-नस्रानी) के लिए बहिश्तोंका द्वार खोल देंगे.

यों लड के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए ।
रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए ॥ ८३

इस प्रकार विभिन्न धर्मग्रन्थोंके भविष्यवाणियोंको लेकर लोग परस्पर लड़-झगड़कर अलग-अलग हो गए परन्तु परमात्मा तो कभी दो नहीं हो सकते (वे तो एक ही हैं) चाहे कोई अपना सिर पटकता क्यों न रहे किन्तु समस्त ब्रह्माण्डोंके स्वामी एकसे मिटकर दो नहीं हो सकते अर्थात् परमात्मा अलग-अलग नहीं हो सकते वे तो एक ही हैं भले ही लोग उनको अलग-अलग रूपमें देखें.

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत ।
ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत ॥ ८४

इस प्रकार सभी धर्मग्रन्थोंमें परमात्माके प्रकट होनेकी बात स्पष्ट लिखी है

किन्तु धर्मग्रन्थके गूढ़ रहस्यको कोई भी समझ नहीं पाता. इन धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेका दायित्व बुद्धजी (इमाम) को है इसलिए उनके अतिरिक्त अन्य कौन इन रहस्योंको स्पष्ट कर सकता है.

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम ।
सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम ॥ ८५

इस प्रकार उक्त तीनों स्वरूप (बशरी, मलकी, हकी) अलग-अलग नाम धारण कर इस संसारमें प्रकट हुए और उन रहस्यवेत्ताओंने ब्रह्मसृष्टियोंके लिए ही इस संसारमें परब्रह्म परमात्माका गूढ़ रहस्य प्रकट किया है.

सुर असुर अद्याप के, करत लडाई दोए ।
ए द्वैष साहेब बिना, मेट ना सके कोए ॥ ८६

दैवी तथा आसुरी विचारधाराएँ आदिकालसे ही परस्पर संघर्ष करती आ रही है. स्वयं परमात्माके प्रकट हुए बिना इस द्वेषको अन्य कोई भी मिटा नहीं सकता.

द्वैष जो लाग्या पेड से, सब सोई रहे पकर ।
साधो द्वैष मिटावने, उपाय थके कर कर ॥ ८७

यह शत्रुता (द्वैष) सृष्टिके आदिकालसे ही बनी हुई है. सभी लोग अपनी-अपनी मान्यताओंको पकड़े हुए चले जा रहे हैं. इस द्वेषको मिटानेके लिए कई सन्तजन भी प्रयत्न करते हुए थक गए किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली.

कै अवतारों बल किए, कै बल किए तीथंकर ।
द्वैष अद्यापी ना मिट्या, कै फिरस्ते पैगंमर ॥ ८८

अनेक अवतारों तथा तीर्थङ्करोंने भी प्रयत्न किए. इसी प्रकार फरिश्ते तथा पैगम्बर भी प्रयत्न करते रहे तथापि वह द्वेषभाव आज तक नहीं मिट पाया.

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन ।
सो सब का झगडा मेट के, या दुनियां या दीन ॥ ८९

स्वयं परमात्मा इस संसारमें तीन कार्य करनेके लिए प्रकट हुए हैं. वे संसारके सभी झगड़ोंको मिटाएँगे चाहे वे व्यवहारिक झगड़े हों या धर्मके.

ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और ।
वेद कतेब छुडावने, धनी आए इन ठौर ॥ ९०

दैवी तथा आसुरी वृत्तियोंका संघर्ष, पैगम्बरोंके पुत्रोंका संघर्ष तथा वेद एवं कतेबके कर्मकाण्ड (बाह्याचरण) का संघर्ष मिटानेके लिए धामधनी बुद्धजीके रूपमें इस संसारमें प्रकट हुए हैं.

दो बेटे रूहअल्लाह के, एक नसली और नजरी ।
भई लडाई इन वास्ते, मसनंद पैगंमरी ॥ ९१

श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) के दो पुत्र माने गए हैं. उनमें-से एक औरस (नसली अथवा बिन्दू पुत्र) तथा दूसरा मानस (नजरी अथवा नादपुत्र) कहलाता है. उन दोनोंमें धार्मिक सिद्धान्तोंको लेकर मतभेद उत्पन्न हुआ.

वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान ।
मूल माएने उलटाए के, कै जाहेर किए तोफान ॥ ९२

दैवी सम्पदाको महत्त्व देनेवाले हिन्दुओंको मार्गदर्शन देनेके लिए वेदका अवतरण हुआ. इसी प्रकार आसुरी वृत्तिवाले मुसलमानोंको सन्मार्गमें लानेके लिए कुरानका उपदेश हुआ. इन दोनों ग्रन्थोंके मूल (अभिप्रेत) अर्थोंको उलटाकर तथाकथित ज्ञानियोंने परस्पर झगड़े आरम्भ कर दिए.

मेटन लडाई बंदन की, और जादे पैगंमर ।
धनी आए वेद छुडावने, ए तीन बातें चित धर ॥ ९३

धार्मिक लोगोंके मतभेद, पैगम्बरोंकी सन्ततिका विवाद (कलह) तथा वेदादिके कर्मबन्धन इन तीनोंको छुड़ानेके लिए इस संसारमें बुद्धजीका अवतरण हुआ है.

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध ।
मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध ॥ ९४

जिन लोगोंके मनमें जैसी भावना रही है उन्होंने बुद्धजीको उसी रूपमें प्राप्त किया. इस प्रकार बुद्धजीने सबलोगोंके मनोनुकूल स्वरूप धारण कर सभीके मनोरथ सिद्ध किए.

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद ।
सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद ॥ ९५

बुद्धजीके सद्गुरुके रूपमें प्रकट होने पर धर्मग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट हो गए, जिससे सन्मार्ग पर चलनेवाले लोगोंको आनन्दका अनुभव हुआ और पथभ्रष्ट हुए झूठे लोग निरस्त हो गए.

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल ।
मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हते जो बोल ॥ ९६

बुद्धजीने प्रकट होकर वेदान्त, गीता, भागवत आदि सभी धर्मग्रन्थोंके सङ्केतोंको स्पष्टकर उनमें निहित गूढ़ रहस्योंको भलीभाँति प्रकट कर दिया.

अंजीर जबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान ।
ए माएने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान ॥ ९७

इसी प्रकार कतेब ग्रन्थों–मूसा पैगम्बरका जबूर, दाउद पैगम्बरका तौरेत, ईसा पैगम्बरका बाइबल तथा रसूल पैगम्बरका कुरान आदिमें निहित गूढ़ रहस्योंको भी स्पष्ट कर दिया.

ए कागद उमत ब्रह्मसृष्टि को, सोभा आई तिन पास ।
माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास ॥ ९८

वस्तुतः ये सभी धर्मग्रन्थ ब्रह्मसृष्टियोंके लिए भेजे गए सन्देश स्वरूप हैं. इसलिए इनके रहस्योंके स्पष्टीकरणकी शोभा भी ब्रह्मसृष्टियोंको ही प्राप्त हुई. जब बुद्धजीने इन ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया तब इनके विपरीत अर्थ करनेवाले लोगोंको निराशा मिली.

जब हक हादी जाहेर भए, और अरस उमत ।
सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत ॥ ९९

जब धामधनी सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुए और उनके साथ उनकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंका अवतरण हुआ तब सभी धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट होनेसे ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो गया.

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लडाई मिल ।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल ॥ १००

आज तक हिन्दू और मुसलमान एक दूसरेको असुर अथवा काफिर कहकर परस्पर लड़ते रहे हैं. कुरानका गूढ़ रहस्य स्पष्ट होने पर अब सभीके हृदय निर्मल हो गए.

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन ।
रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन ॥ १०१

अब अज्ञानरूपी रात्रिका अन्धकार मिट गया तथा ब्रह्मज्ञानका प्रकाश सर्वत्र फैल गया. विश्वब्रह्माण्डके स्वामी बुद्धजीके प्रकट हो जाने पर दैवी वृत्तिवाले हिन्दू तथा आसुरी वृत्तिवाले मुसलमान दोनों उनके शरणागत हुए.

हांसी हुई अति बडी, झूठों बडी जलन ।
मेला अति बडा हुआ, आखर सुख सबन ॥ १०२

तब अज्ञानके कारण लडनेवालोंकी बड़ी हँसी हुई (वे लज्जित हुए), असत्यवादियोंको भी पश्चात्ताप होने लगा. इस प्रकार अन्तिम समयमें जगतमें ब्रह्मसृष्टियोंका मेला हुआ जिससे सभी जीव भी आनन्दित हुए.

बिना सुख कोई ना रह्या, सब मन काम पूरन ।
अंधेरी कछू ना रही, भए चौदे तबक रोसन ॥ १०३

बुद्धजीके प्रकट होनेसे संसारका कोई भी जीव अखण्ड सुखसे वञ्चित नहीं रहा. सभीकी मनोकामनाएँ पूर्ण हुई. अब अज्ञानका अन्धकार लेशमात्र भी न रहा तथा चौदह लोकोंमें ज्ञानका प्रकाश फैल गया.

मोह तत्व अहं उड्यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन ।
ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुन ॥ १०४

अब त्रिगुणस्वरूपों पर पड़ा हुआ मोह तत्त्व एवं अहङ्कारका पर्दा उड़ गया जिससे सभीको ज्ञान हुआ कि शून्य, निराकार एवं निरञ्जन ये सभी द्वैत मायाके अन्तर्गत ही हैं.

वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच ।
सुपन सृष्टि खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच ॥ १०५

लौकिक शब्दोंकी सीमा शून्य-निराकार पर्यन्त ही रही है उससे आगे मन और वचन नहीं पहुँचते हैं. स्वप्नवत् संसारके जीव (स्वप्नकी बुद्धिसे) शास्त्रोंमें ब्रह्मकी खोज करते रहे परन्तु अखण्ड अविनाशी घर (परमधाम) प्राप्त न कर सके.

अक्षरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपन फिरस्तों नूर ।
घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर ॥ १०६

बुद्धजीने प्रकट होकर अक्षरब्रह्मका रहस्य स्पष्ट किया जहाँसे सभी अवतारी शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं. वस्तुतः जिब्रील फरिश्ताका मूलस्थान भी अक्षरधाम ही है जो सदा सर्वदा अक्षरब्रह्मके निकट रहते हैं.

और धाम अक्षरातीत, नूरतजल्ला अरस ।
रूह बडी ब्रह्मसृष्टि की, जो हैं अरस परस ॥ १०७

इसी प्रकार अक्षरातीत परमधामका रहस्य भी स्पष्ट किया जिसको कुरानमें नूरतजल्ला अथवा अर्शेअजीम कहा है. वहाँ पर ब्रह्मसृष्टि एवं श्यामाजीका परब्रह्मके साथ अद्वैत सम्बन्ध है.

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुध आए ।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए ॥ १०८

कुरानके अनुसार मुहम्मद, बाइबलके अनुसार ईसा तथा हिन्दूधर्म ग्रन्थोंके अनुसार बुद्धजीने प्रकट होकर दिव्य परमधामकी सम्पूर्ण लीलाएँ नश्वर जगतमें प्रकट की. इन तीनों स्वरूपोंने मिलकर सभी जीवोंको जागृत किया.

भिस्त दई सबन को, चढे अक्षर नूर की द्रष्ट ।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट ॥ १०९

बुद्धजीने संसारके सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें स्थान दिया जिससे वे अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें अखण्ड हो गए. इस प्रकार बुद्धजीके प्रतापसे स्वप्न जगतके जीवोंको भी अखण्ड सुख प्राप्त हुआ.

दूजी सृष्टि जो जबरूती, जो ईस्वरी कही ।
अधिक सुख अक्षर में, दिल नूर चूभ रही ॥ ११०

दूसरी अक्षरधामकी सृष्टि है जिसको ईश्वरीसृष्टि कहा गया है. अक्षरब्रह्मकी सुरता स्वरूप होनेसे उन्होंने अक्षरब्रह्मके हृदयमें स्थान प्राप्त कर अखण्ड सुख प्राप्त किया.

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टि घर धाम ।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम ॥ १११

इनके अतिरिक्त परमधामकी आत्माएँ ब्रह्मसृष्टि कहलाती हैं. इस क्षर जगतकी लीला दिखाकर बुद्धजीने इनके सभी मनोरथ पूर्ण किए.

मुक्त दई त्रैगुन फिरस्ते, जगाए नूर अक्षर ।
रूहें ब्रह्मसृष्टि जागते, सुख पायो सचराचर ॥ ११२

बुद्धजीने त्रिदेवों तथा अन्य फरिश्तोंको भी अखण्ड सुख (मुक्ति) प्रदान किया तथा अक्षरब्रह्मको भी जागृत किया. इस प्रकार ब्रह्मसृष्टियोंके परमधाममें जागृत होने पर जगतके सचराचर प्राणियोंको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ.

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बडे कृपाल ।
सो बुधजीएं मारिया, जो त्रैलोकी का काल ॥ ११३

धामधनी इतने बड़े कृपालु हैं कि उन्होंने किसीके भी कर्तव्य तथा कर्मबन्धनोंको शेष रहने नहीं दिया. इस प्रकार बुद्धजीने तीनों लोकों (स्वर्गादि, मृत्युलोक तथा पाताल) के जीवोंके कालचक्र (आवागमन चक्र) को मिटा दिया.

कुरानकी कहूं (कुरानका विवरण)

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत ।
मगज माएने खोले बिना, क्यों पाइए मारफत ॥ १

महामति कहते हैं, अब मैं कुरानकी सम्पूर्ण यथार्थता प्रकट कर रहा हूँ. उसके गूढ़ रहस्योंको प्रकट किए बिना पूर्ण पहचान कैसे हो पाएगी ?

विध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान ।
माएने ऊपरके लेए के, कर बैठे अपना कुरान ॥ २

कुरानमें ये सारी युक्तियाँ दी गई हैं जिससे अज्ञान नाममात्र भी नहीं रहेगा. किन्तु कुछ लोगोंने बाह्य अर्थोंको लेकर कुरानको अपना मान लिया है.

आरबोंसों ऐसा कह्या, कागद ए परवान ।
आवसी रब आलमका, तब खोलसी कुरान ॥ ३

रसूल मुहम्मदने आरबोंको स्पष्ट कहा था कि यह कुरान निश्चय ही ब्राह्मी सन्देश है. विश्व ब्रह्माण्डके स्वामी (परमात्मा) स्वयं प्रकट होकर इसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

कागदमें ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब ।
अंदर अरथ खोलसी, सब जाहेर होसी तब ॥ ४

कुरानमें भी उल्लेख किया है कि परमात्मा संसारमें प्रकट होंगे और कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट करेंगे. तब सर्वत्र यथार्थता प्रकट होगी.

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन ।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले ना हम बिन ॥ ५

चाहे चौदह लोकोंके सभी जीव तथा त्रिगुण स्वरूप भी मिलकर प्रयत्न करें किन्तु कुरानके गूढ़ रहस्य हमारे बिना कोई भी खोल नहीं सकता.

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए ।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए ॥ ६

वस्तुतः परब्रह्म (परमात्मा) ही प्रकट होकर इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे, इस बातको सत्य समझना. क्योंकि ये गूढ़ रहस्य परमात्माके बिना अन्य किसीसे स्पष्ट नहीं हो सकते.

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत ।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित ॥ ७

विभिन्न समुदायके लोगोंने परमात्माको भिन्न-भिन्न नामोंसे पुकारा है और

उनके धर्मग्रन्थोंमें भी परमात्माके प्रकट होनेके सङ्केत दिए गए हैं. किन्तु कुरानके गूढ़ रहस्योंको जो स्पष्ट कर दे उन्हींको परमात्मा समझ लेना.

गुझ अरथ यामें लिखे, सो ए समझें कैसे कर ।
अरथ ऊपर का लेए के, अकस लेत दिल धर ॥ ८

कुरानमें जो गूढ़ अर्थ दिए गए हैं उनको बाह्यदृष्टि वाले ये लोग कैसे समझ सकेंगे ? इसलिए ये लोग मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण कर हृदयमें दु:शीलता (अकस) धारण करते हैं.

बडी सोभा एहेल किताब की, लिखी मिने कुरान ।
सो आरब जानें आपको, ए जो धनी फुरमान ॥ ९

कुरानमें उसके उत्तराधिकारी (एहेल किताब) की बड़ी महिमा लिखी है. इसलिए अरबके लोग स्वयंको परमात्माके आदेश स्वरूप कुरानके उत्तराधिकारी मानते हैं.

एहेलकिताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान ।
फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान ॥ १०

ऐसे तथाकथित मुसलमान स्वयंको कुरानके उत्तराधिकारी समझते हैं और अन्य सभीको अविश्वासी (काफिर) मानते हैं. किन्तु जब ब्रह्मज्ञानका प्रभात होगा और कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे तब इसकी यथार्थता पहचानी जाएगी.

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार ।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार ॥ ११

ब्रह्मात्माओंके विशिष्ट समुदायकी गिनती कुरानमें १२ हजार बताई है. ये अरब निवासी तो असंख्य हैं. इनकी गणना करोड़ोंमें भी नहीं होती (तो फिर ये सभी कुरानके उत्तराधिकारी कैसे हो सकते हैं).

एता भी ना विचारहीं, होए खावंद बैठे सब ।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब ॥ १२

ये लोग इतना भी विचार नहीं करते और स्वयं कुरानके अधिपति बनकर

बैठे हैं. अपने आचरणोंको देखे बिना ही ये लोग ब्रह्मसृष्टियोंकी पदवी ले बैठे हैं.

सहूर ना करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक ।
और बहतर नारी कहे, पर पावे नहीं विवेक ॥ १३

ये लोग हृदयपूर्वक विचार करते ही नहीं. कुरानमें तो एक ही धर्मनिष्ठ समुदाय (नाजी फिरका) की बात कही है, शेष बहत्तर समुदाय नारी (नरकगामी) कहे गए हैं. इस प्रकार कुरानको पढने पर भी इनमें विवेकका उदय नहीं हुआ है.

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर ।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अरथ कर ॥ १४

कुरानमें यह भी लिखा है कि इस प्रकार मात्र बाह्यार्थ ग्रहण करनेवालोंके दिल पर ताला लगा हुआ है. इतना ही नहीं उनके कानों तथा आँखों पर भी परदा पड़ा है. इसलिए वे कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट नहीं कर सकते.

कागद एक उमत का, और हुआ झूठोंसों छल ।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठो बल ॥ १५

यह कुरान एक विशेष समुदायका था (इसलिए उन्हें मिल गया), इसको अपना माननेवाले तथाकथित लोग अपने भूलोंके कारण ठगे गए. जब कुरानके गूढ़ अर्थ प्रकाशमें आए तब इन तथाकथितोंका मिथ्या अधिकार उड़ गया.

एह विध साख कुरानमें, जाहेर लिखी हकीकत ।
सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढत ॥ १६

इस प्रकारकी अनेक साक्षियाँ तथा यथार्थज्ञान कुरानमें स्पष्ट रूपमें उल्लेखित हैं तदनुसार वे परमात्मा तो हिन्दुओंमें प्रकट हो गए हैं किन्तु तथाकथित मुसलमान उनको आरबोंमें ढूँढ़ रहे हैं.

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें ।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें ॥ १७

कतेब ग्रन्थोंमें लिखा है कि अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाले परमात्माके मुख

पर परदा होगा. इसलिए ऐसा लिखा गया कि परमात्मा हिन्दुओंमें प्रकट होनेवाले हैं. किन्तु मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण करनेवाले आरब इन सङ्केतोंको समझ नहीं पाते.

प्रकरण १४ चौपाई ७७२

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए (कुरानमें वर्णित कयामतके संकेत प्रकट हुए)

बरस नबे हजार पर, गुजरे एते दिन ।
कयामत लिखी कुरानमें, सोए न पाई किन ॥ १

रसूल मुहम्मदके पश्चात् एक हजार नब्बे वर्ष व्यतीत होने पर कयामतका समय आएगा, इस प्रकारके सङ्केत कुरानमें लिखे गए हैं किन्तु कोई भी इन सङ्केतोंको समझ नहीं पाया.

कै पढ पढ काजी हुए, कै आलम आरफ ।
माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या न एक हरफ ॥ २

कुरानका अध्ययन करते हुए अनेक लोग विद्वान (आलम) तथा ज्ञानीजन (आरफ) कहलाए. परन्तु कुरानमें कहे हुए शब्दोंका गूढ़ रहस्य किसीने भी स्पष्ट नहीं किया.

लिख्या जाहेर कुरानमें, और माजजे सब रद ।
सांचा माजजा इमामपें, जो ले उतर्‌या अहंमद ॥ ३

कुरानमें यह भी स्पष्ट लिखा है कि उस समय सारे चमत्कार निरस्त हो जाएँगे, सच्चा चमत्कार अन्तिम धर्मगुरु (इमाम) के पास होगा. वस्तुतः तारतमज्ञानरूपी यह चमत्कारपूर्ण ज्ञान लेकर सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजी इस संसारमें प्रकट हो गए हैं.

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत है सोए ।
लिख्या है कुरानमें, सो बिना इमाम न होए ॥ ४

इस प्रकार कुरानमें कहे हुए चमत्कारपूर्ण वचन सत्य कहे गए हैं. कुरानमें यह भी लिखा है कि वे चमत्कारपूर्ण सङ्केत अन्तिम धर्मगुरु (इमाम) के बिना अन्य किसीसे स्पष्ट नहीं होंगे.

पढ्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब ।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब ॥ ५

सद्गुरुने न कभी फारसी तथा अरबी शब्दोंका अध्ययन किया और न ही कुरानका श्रवण किया तथापि वे मेरे हृदयमें बैठकर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर रहे हैं.

ए सब किताबें इन पें, तामें किल्ली कुरान ।
रूहअल्ला महंमद मेहेदी, एही इमाम पेहेचान ॥ ६

यद्यपि इन सभी कतेब ग्रन्थों (जबूर, तौरेत, बाइबल और कुरान) को स्पष्ट करनेका दायित्व इन्हीं अन्तिम धर्मगुरु पर है, उनमें भी कुरान तो कुञ्जीके समान माना गया है. परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामास्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मेरे हृदयमें विराजमान होकर इन सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया है. वस्तुतः यही सद्गुरु (इमाम) के स्वरूपकी पहचान है.

जोलों माएने मगज न पाइया, तोलों पढ्या न किन कुरान ।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान ॥ ७

जब तक कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए थे तब तक किसीने भी कुरानको नहीं समझा था (उनका अध्ययन निरर्थक हुआ). इसलिए उन लोगोंको यह ज्ञात नहीं हुआ कि यह आदेश (कुरान) किसने भेजा तथा किसके लिए भेजा. इस सन्देशको लेकर आनेवाले रसूलकी पहचान भी उनको नहीं हुई.

जो अरथ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान ।
यों जंजीरां मुसाफ की, कै विध करी बयान ॥ ८

जो लोग मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करते हैं, उन्हें आसुरी वृत्तिके मानव (ब्रह्मराक्षस) कहा गया है. इस प्रकार बुद्धजीने प्रकट होकर कुरानके गूढ़ रहस्योंको अनेक प्रकारसे स्पष्ट किया.

अजाजील दम सबनमें, फिरस्ता जो बुजरक ।
सारी जिमी पर सेजदा, किया ऊपर हक ॥ ९

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है कि अजाजील फरिश्ता ही संसारके सभी

जीवोंका प्राण है तथा वह स्वयं श्रेष्ठ भी कहलाता है. उसने परमात्माकी आज्ञा पाकर सारे पृथ्वी पर नमन किया.

हुकम हुआ तिन को, कर सेजदा आदम पर ।
माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर ॥ १०

उसी अजाजीलको आदम पर नमन करनेका आदेश प्राप्त हुआ (उस समय अजाजीलने परमात्माका आदेश नहीं माना क्योंकि) वह परमात्माके आदेशका रहस्य समझ नहीं पाया, उसने मात्र आदमकी बाह्य आकृति ही देखी.

लानत हुई तिन को, हुआ गलेमें तोक ।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोडें ना वे लोक ॥ ११

इसलिए उसको धिक्कार मिली और वह (धिक्कार) उसके गलेमें फन्दाके समान हो गई. इस प्रकारकी बात सभी लोग स्पष्ट कहते हैं तथापि वे अपनी बाह्य दृष्टिको नहीं छोड़ते.

तिन दिया धका आदम को, इबलीस गेहूं खिलाए ।
काढ्या प्यारी भिस्त से, दुसमन संग लगाए ॥ १२

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि इबलीसने आदमको गेहूँ खिलाया. जिसके कारण उसे दुष्ट शत्रु (इबलीस) के साथ प्रिय मुक्तिस्थल (बहिश्त) से निकाला गया.

ए बिचारे क्या करें, सब आदम की नसल ।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड असल ॥ १३

इस प्रकार बहिस्कृत आदमके वंशज ये सांसारिक जीव कर भी क्या सकते हैं ? वे कुरानके आदेशोंका पालन भी नहीं कर सकते क्योंकि दुष्ट इबलीस उन्हें अपने मूल उद्गम स्थान (मायाजन्य संसार) की ओर ही खींचता है.

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बडे निसान ।
सोए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान ॥ १४

रसूल मुहम्मदने परमात्माका आदेश प्राप्त कर उनके अवतरणके गूढ़ रहस्यों

तथा कयामत (आत्म-जागृति) के सङ्केतोंको स्पष्ट (बड़े) शब्दोंमें लिख दिया है. वे ही परमात्मा अपनी पहचान करवानेके लिए अपने वचनोंके अनुरूप निश्चित समय पर प्रकट हो गए हैं.

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएने जाहेर ।
अंदर अरथ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखर ॥ १५

संसारके जीव (जीवसृष्टि) स्वयं बाह्य दृष्टिवाले होनेसे कुरानका भी मात्र बाह्य अर्थ ही ग्रहण करते हैं. वस्तुतः कुरानमें निर्दिष्ट सङ्केतोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हुए बिना वे इस अन्तिम दिन (कयामतके समय) को कैसे जान (पहचान) सकते ?

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधे कौल पर हद ।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद ॥ १६

लोग कयामतके दिनको पहचान सके इसीलिए इसके प्रकट होनेके सङ्केत (कयामतकी सात निशानियाँ) भी लिख दिए और ग्यारहवीं शताब्दी पर इन सङ्केतोंके प्रकट होनेकी समय सीमा भी बाँध दी किन्तु संसारके जीव कुरानके मात्र बाह्य अर्थको ग्रहण कर रसूलके वचनोंको ही निरस्त (रद्द) कर देते हैं.

कलाम अल्लाके माएने, सो भी कही इसारत ।
ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखरत ॥ १७

कुरानके रहस्य वैसे भी गूढ़ हैं और वे भी सङ्केत मात्रमें कहे गए हैं. इसलिए बहिस्कृत किए गए आदम और हव्वाकी सन्तानें ये जीवसृष्टि अन्तिम (कयामतके) समयको कैसे समझ सकतीं हैं ?

माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए ।
सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए ॥ १८

अल्पज्ञ मुल्ला तथा ब्राह्मणलोग कुरान तथा पुराण आदि धर्मग्रन्थोंका विपरीत (मनमाने) अर्थ करते आए हैं. इसलिए अन्तिम समय (कयामतके समय)

में जिब्रील फरिश्ताने प्रकट होकर उन काल्पनिक अर्थोंको चाट लिया अर्थात् बाह्य अर्थको समाप्त कर गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर दिया.

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर ।
ईसा मेहेदी महंमद, आए हिंदमें वरस्या नूर ॥ १९

कतेब ग्रन्थोंमें कहा गया है कि अन्तिम (कयामतके) समय पर नहरें उलटी चलेंगी अर्थात् धर्मग्रन्थोंका अर्थ करनेकी परम्परा बदल जाएगी तब स्वयंको धर्मग्रन्थोंके निकट (ज्ञाता) मानने वाले अनभिज्ञ लोग वास्तविकतासे दूर हो जाएँगे. ऐसे समयमें निजानन्द स्वामी (ईसा) का प्रशंसित धर्मगुरु (महदी मुहम्मद) के रूपमें भारत वर्षमें अवतरण हो गया और उन्होंने (महामतिके द्वारा) तारतम ज्ञानकी वर्षा की.

नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ ॥ २०

परब्रह्म परमात्माके ज्ञानका प्रकाश प्रकाशित होनेसे संघर्ष (खींचातान) दूर हो गया. धर्मग्रन्थोंके जिन रहस्योंका मात्र बाह्य अर्थ किया जा रहा था ऐसे कोई भी रहस्य (शब्द) स्पष्ट होनेमें शेष नहीं (सभी स्पष्ट हो गए)रहे.

महंमद आया ईसे मिने, तब अहंमद हुआ स्याम ।
अहंमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥ २१

कुरानके अनुसार रसूल मुहम्मदमें विद्यमान ब्राह्मीशक्ति जब ईसा रूहअल्लाह श्री देवचन्द्रजीमें प्रविष्ट होती है तब वे अहमद स्वरूप कहलाते हैं. जब ये अहमद स्वरूप महदीमें प्रविष्ट होते हैं तब ये तीनों स्वरूप एक होकर इमाम कहलाते हैं.

अलफ कह्या महंमद को, रूहअल्ला ईसा लाम ।
मीम मेहेदी पाकसों, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ॥ २२

कुरानमें कहे हुए अलिफ, लाम, मीममें-से रसूल मुहम्मद 'अलिफ', ईसा रूहअल्लाह 'लाम' और पवित्र महदी 'मीम' हैं. ये तीनों एक ही माने गए हैं.

महंमद ईसा आए म्याराजमें, और असराफील इमाम ।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम ॥ २३

ब्रह्म (म्याराजकी) रात्रि अर्थात् लैलतुलकद्रके तृतीय खण्डमें रसूल मुहम्मद तथा ईसा-सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीका अवतरण हुआ. इसी प्रकार अक्षरकी बुद्धि-इस्त्राफील एवं जिब्रील फरिश्ताके साथ मिलकर बुद्धजीने इमाम बनकर कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट किए.

माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्लाका कौल ।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल ॥ २४

कुरानके गूढ़ अर्थ, परमात्माके पुनः प्रकट होनेके वचनोंका रहस्य तथा ऐसे सभी सङ्केत निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी प्रदत्त तारतम ज्ञानके माध्यमसे इस प्रकार स्पष्ट कर दिए हैं.

बडे निसान आखरत के, आजूज माजूज दोए ।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड्या कोए ॥ २५

कुरानमें अन्तिम (कयामतके) समयके विशेष (बड़े) सङ्केतोंमें याजूज और माजूजका प्रकट होना कहा है जो याफिसके पुत्र कहलाते हैं. उन्होंने किसीको भी नहीं छोड़ा अर्थात् सबको ग्रास बना लिया.

कहे बडे सबन से, सौ गज का आजूज ।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज ॥ २६

उनमें याजूजको सबसे बड़ा बताया है जो सौ गज लम्बा होगा और सीमित दृष्टि (तंगचश्मा) वाला माजूज मात्र एक गज लम्बा होगा.

[वस्तुतः ये याजूज और माजूज दिन और रात माने गए हैं. मनकी वृत्तियाँ दिनमें चारों और दौडती रहती हैं इसलिए इसे सौ गज लम्बा कहा है इसी प्रकार रातमें ये वृत्तियाँ एक ओर केन्द्रित होती है इसलिए उसे मात्र एक गज लम्बा कहा गया है.]

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन ।
अरथ ऊपर के आखरत, क्यों पावें रात दिन ॥ २७

इन दोनों (याजूज और माजूज) के वंशकी संख्या चार लाख प्रकारकी तथा

सेना तीन प्रकारकी बताई गई है. कुरानका मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करनेवाले अल्पज्ञ जीव अन्तिम (कयामतके) समयके सङ्केत रूप इन दिन (याजूज) और रात (माजूज) के रहस्यको कैसे समझ पाते ?

ए तो गिनती कही दिनन की, आखरत बडे निसान ।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान ॥ २८

वस्तुतः कुरानमें इस प्रकारकी गणना अन्तिम (कयामतकी) घड़ीके आनेके लिए सङ्केत मात्रमें बताई गई है. किन्तु कुरानके इन गूढ़ रहस्योंको कौन स्पष्ट कर सकता है ?

काल याही दिन कहे, सो पोहोंच्या कौल पर आए ।
तब पिंड और ब्रह्मांड को, देत सबे उडाए ॥ २९

कुरानमें जिस घड़ीकी विशेष चर्चा हुई है वह यही समय है. इसी समय पर परमात्माके आनेकी बात कही है जो बुद्धजीके रूपमें निश्चित समय पर प्रकट हो गए हैं. अब बुद्धजी (तारतम ज्ञानके द्वारा) पिण्ड और ब्रह्माण्डके अस्तित्वको उड़ा रहे हैं [बुद्धजीने प्रकट होकर पिण्ड (शरीर) तथा ब्रह्माण्ड (संसार) में परमात्माको ढूँढ़नेकी मिथ्या मान्यता मिटा दी है.]

दाभातल अरज मके से, जाहेर होसी सब ठौर ।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर ॥ ३०

अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी) के विषयमें कुरानमें और भी कहा है कि मक्कासे दाभातुल-अर्ज प्रकट होकर सर्वत्र फैलेगा अर्थात् मानवोंके हृदयमें पाशवी (आसुरी) वृत्ति फैल जाएगी. (ऐसे समयमें बुद्धजी प्रकट होंगे जिनके) एक हाथमें मूसा पैगम्बरकी भाँति आसा (दण्ड) होगी और दूसरेमें सुलेमान पैगम्बरकी भाँति स्वर्णमुद्रा (तारतम ज्ञान) होगी.

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन ।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन ॥ ३१

उस समय उसी मनुष्यका मुख उज्ज्वल (प्रसन्न) होगा जिस पर बुद्धजी स्वर्णमुद्राकी छाप लगा देंगे अर्थात् जिसे बुद्धजी तारतम ज्ञान प्रदान करेंगे. इसी प्रकार जिसको वे आसा चुभा देंगे अर्थात् जिसको वे दण्डित करेंगे, उसका मुख काला (मलिन) हो जाएगा (तात्पर्य यह है कि तारतम ज्ञानसे वञ्चित लोग दुःखी होंगे).

उजल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर ।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखर ॥ ३२

उन उज्ज्वल मुख वालोंको कुरानमें ब्रह्मात्मा (मोमिन) कहा है और कालेमुख (स्यामुह) वालोंको अविश्वासी (काफिर) कहा है. इस प्रकार अन्तिम (कयामतकी) घड़ीमें मुक्तिस्थल (बहिश्त) में जानेवाले तथा नरक (दोजख) में जाने वाले जीवोंका स्पष्टीकरण हो जाएगा.

कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेलें हुती सबे कुफरान ।
जो लों स्याम बरारब ना हते, ना रसूल खबर फुरमान ॥ ३३

वस्तुतः वह अरबकी भूमि पशुवृत्ति वाली कहलाती थी क्योंकि वहाँके सभी लोग पहले आसुरीवृत्ति वाले थे. जब तक श्याम रसूलके रूपमें ब्राह्मी सन्देश लेकर बरारबमें नहीं आए तब तक यह दशा थी.

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन ।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन ॥ ३४

जब श्याम रसूल बनकर अरबकी धरती पर अवतरित हुए तबसे वहाँ पर ज्ञानका प्रकाश फैलने लगा. उन्होंने कुरानके माध्यमसे ब्रह्मात्माओंके प्रकट होनेकी जानकारी सभीको दी.

ल्याए बंदगी केहेलाया कलमा, वरस्या खुदा का नूर ।
सो नूर फिर्‌या खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर ॥ ३५

रसूलने ही वहाँ आकर उपासना (बन्दगी) के नियम बताए और सबको कलमा सुनाया. तब वहाँ पर ब्राह्मी तेज (खुदाई नूर) की वर्षा हुई. रसूलके चले जाने पर वह वर्षा समाप्त हो गई और वहाँ पर पूर्ववत् पशुवृत्ति अङ्कुरित हो गई.

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक ।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक ॥ ३६

वह सम्पूर्ण ब्राह्मी तेज अब इधर पूर्वकी भूमि (भारतवर्ष) में आ गया. जिससे वह भूमि पुनः पशुवृत्तिवाली हो गई जैसे ब्रह्मज्ञानके बिना पहले भी थी.

मोमिन मुख उजल भए, भए काफर मुख स्याह ।
यों मसरक और मगरब, दोनों दुरुस्त कह्या ॥ ३७

ब्रह्मज्ञानके अवतरण होने पर ब्रह्मात्माओंके मुख उज्ज्वल हो गए और अविश्वासी (काफिर) लोगोंके मुख काले (निश्तेज) हो गए. कुरानमें वर्णित पूर्व और पश्चिम दोनोंका विवरण इस प्रकार सत्य सिद्ध हो गया.

रूहअल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब ।
सूरज गुलबा आखरी, मगरब ऊग्या तब ॥ ३८

जब श्री देवचन्द्रजी रसूल मुहम्मदके तेजको लेकर इमाम महदीके रूपमें (पूर्वमें) प्रकट हुए तब पश्चिम (अरब) में कलह रूपी सूर्यका उदय हुआ.

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब ।
जाहेरी ढूंढे सूरज जाहेर, ए जो पढे आखरी सब ॥ ३९

इस प्रकार ब्राह्मी तेज (ब्रह्मज्ञान) पूर्व (भारत) की भूमिमें अवतरित हुआ और पश्चिम (अरब) की भूमिमें कलह (उपद्रव) स्वरूप निश्तेज सूर्यका उदय हुआ. कुरान पढ़कर मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करनेवाले लोग इस अन्तिम (कयामतकी) घड़ीमें पश्चिमसे उदय होनेवाले सूर्यकी राह देख रहे हैं.

ज्यादा चौदे तबक से, दजाल गधा इन हद ।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद ॥ ४०

अन्तिम (कयामतके) समयके सङ्केतके रूपमें कुरानमें और भी कहा है कि उन दिनों चौदह लोकोंकी सीमासे भी ऊँचा दज्जाल (नास्तिकता) का वाहन गधा पैदा होगा. उस काना (एकाक्ष) गधा पर सवार होनेवाले दज्जालका कद भी उतना ही ऊँचा होगा.

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ ।
आखर उमत महंमदी, करसी आए इनसाफ ॥ ४१

और भी कहा है कि रूहअल्लाह प्रकट होकर उस दज्जालको मार डालेंगे और संसारके लोगोंको उसके प्रभावसे मुक्त (शुद्ध) करेंगे. इस प्रकार अन्तिम (कयामतके) समयमें श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें आकर न्याय देंगे.

दम दजाल सबनमें, रेहेत दुनी दिल पर ।
ए जो पातसाह इबलीस, करत सबमें पसर ॥ ४२

यह दज्जाल (नास्तिकता) संसारके लोगोंके हृदय पर प्राणशक्तिके रूपमें व्याप्त है. इसीलिए दुष्ट इबलीस सबका सम्राट बनकर सर्वत्र छाया हुआ है.

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दजाल ।
जब ए दजाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल ॥ ४३

कुरानके इन प्रसङ्गोंको जानते हुए भी कुरानके ज्ञाता तथाकथित दज्जालके विशाल स्वरूपको प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं. (यदि दज्जालका प्रत्यक्षरूप होता तो) जब ईसा प्रकट होकर इस भयङ्कर (चौदह लोकोंसे ऊँचा) दज्जालको मार डालेंगे तब दुनियाँ (इतने बड़े दज्जालके शरीरसे दबकर) कैसे जीवित रह पाएगी ?

आखर आए असराफील, उडावसी बजाए सूर ।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर ॥ ४४

कुरानमें कयामतके सङ्केतोंमें यह भी कहा गया है कि अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी) में इस्राफील फरिश्ता प्रकट होगा और तारतम ज्ञानका सूर फूँककर बड़े-बड़े पर्वतों (पर्वतके समान मिथ्या ज्ञानके अहङ्कार) को उड़ा देगा. पुनः दूसरे सूर (स्वर) में तारतम वाणीके द्वारा परमात्माका प्रकाश फैलाकर सबको अखण्ड कर देगा.

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर ।
तब फिरसी सब फिरस्ते, एह बात चित धर ॥ ४५

इस प्रकार अन्तिम समयमें इस्राफील फरिश्ता तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेगा (तब नश्वर ब्रह्माण्डका अस्तित्व नगण्य हो जाएगा). तब सभी दैवी शक्तियाँ इस बातको हृदयमें धारणकर अपने-अपने स्थान पर लौट जाएँगी.

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर ।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर ॥ ४६

जब तारतम ज्ञानके प्रकाशसे कुरानका गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो गया तब इस ब्रह्मज्ञानके प्रकाशको ग्रहण कर संसारके जीव भी अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें स्थान प्राप्त करेंगे.

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेहेदी बिना न होए ।
सो साहेबने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए ॥ ४७

कुरानके ये गूढ़ रहस्य अन्तिम धर्मगुरु (इमाम महदी) के अतिरिक्त अन्य किसीसे भी स्पष्ट नहीं होंगे. स्वयं परमात्माने इस प्रकार कुरानमें उल्लेख करवाया है इसलिए यह महत्त्वपूर्ण कार्य अन्य कोई कैसे कर सकता है ?

प्रकरण १५ चौपाई ८१९

सूरत मीजान की

तुलाका प्रकरण (तुलनात्मक दृष्टिकोण)

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार ।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह बिचार ॥ १

ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए यह कहा जा रहा है किन्तु संसारके सभी जीव भी यह ब्रह्मज्ञान सुनेंगे. जो इस ब्रह्मज्ञान पर विचार करेगा उसका उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा.

फिरके सबोंने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक ।
ढूंढ ढूंढ के हम थके, पर पाया नाहीं हक ॥ २

संसारमें प्रचलित सभी सम्प्रदायके लोगोंने एक ही स्वरमें कहा कि हम चौदह लोकोंमें खोज-खोज कर थक गए किन्तु सत्य परमात्मा कहीं भी नहीं मिले.

वेद कतेब पढ पढ थके, केहे केहे थके इलम ।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम ॥ ३

वेद तथा कतेब ग्रन्थोंको पढ़कर तथा ज्ञानचर्चा कर ज्ञानीजन थक गए. उन्होंने भी अपने मुखसे स्पष्ट कहा कि हम अखण्ड भूमिकाको प्राप्त नहीं कर सके.

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूहअल्ला मिले मुझ ।
खोल दिए पट अरस के, जो बका ठौर थी गुझ ॥ ४

प्रियतम परमात्माने मुझ पर अति कृपा की जिससे उनकी आनन्द अङ्ग श्यामाजी मुझे सद्गुरुके रूपमें मिलीं. उन्होंने प्रकट होकर अखण्ड परमधामके द्वार खोल दिए जो अभी तक गुह्य रहे थे.

इलम दिया मोहे लुदंनी, आई असल अकल ।
सेहेरग से नजीक, पाया अरस असल ॥ ५

सद्गुरुने मुझे दिव्य तारतम ज्ञान दिया जिससे मुझमें परमधामकी जागृत बुद्धि आ गई. उसीके द्वारा मैंने अखण्ड परमधामको प्राणनली (शहरग) से भी निकट पाया (अनुभव किया).

और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत ।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत ॥ ६

फिर सद्गुरुकी कृपासे मुझे रसूल मुहम्मद द्वारा लाया गया सन्देश (कुरान) प्राप्त हुआ और उसके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हुए. इस प्रकार दूसरे साक्षी ग्रन्थको भी प्राप्त करने पर मुझे पूर्णब्रह्म परमात्माका यथार्थ अनुभव हुआ.

पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम ।
सक जरा ना रही, पाया कायम आराम ॥ ७

इसी प्रकार कुरानमें उल्लेखित परमधामके रहस्यपूर्ण सङ्केत मुझे प्राप्त हुए. अब मुझे लेशमात्र भी शङ्का नहीं है. मुझे तो शाश्वत (अखण्ड) शान्तिका अनुभव हो गया है.

अब करूं बका जाहेर, वास्ते अरस उमत के ।
कहूं अरस और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए ॥ ८

अतः अब मुझे परमधामकी ब्रह्मात्माओंके लिए अखण्ड परमधामका रहस्य

प्रकट करना है. अब मैं अखण्ड परमधाम तथा नश्वर संसारका रहस्य स्पष्ट करता हूँ जिससे ब्रह्मात्माएँ इनका सम्पूर्ण विवरण समझ सकेंगी.

अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अरस के ।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे ॥ ९

जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे अब इस तारतम ज्ञानका प्रकाश धारण करेंगी. साथ ही अखण्ड और नश्वरताको उदाहरण सहित समझेंगी जिससे उनके हृदयमें इनकी सुधि हो जाएगी.

नासूत और मलकूत का, निमूना देख कर ।
ए बल दिलमें लेए के, देखो अरस जानवर ॥ १०

नश्वर संसार तथा वैकुण्ठ धामके जीवोंकी शक्तिका अन्तर देखकर अब परमधामके प्राणियोंकी शक्ति पर हृदयपूर्वक विचार करो.

एक जानवर अरस का, मैं तौल्या तिन का बल ।
क्यों कहूं तफावत, ओ फना ए नेहेचल ॥ ११

मैंने परमधामके मात्र एक पशुकी शक्तिको (संसारके प्राणियोंके साथ) तौलना चाहा. उन दोनोंका अन्तर मैं कैसे वर्णन करूँ ? कारण कि, कहाँ अविनाशी धामके प्राणी और कहाँ नश्वर संसारके प्राणी !

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत बल बुध जेता ।
दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदरमें एता ॥ १२

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखें इत ।
आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत ॥ १३

मैंने लाखों ब्रह्माण्डोंके जीवोंकी शक्ति तथा कुशलताकी मानसिक रूपसे तुलना की और इतना ही हृदयमें धारण किया कि जिस प्रकार एक ओर बाजीगर द्वारा उत्पन्न किए गए असंख्य कबूतर तथा दूसरी ओर एक मनुष्य, इन दोनोंमें जितना अन्तर है उसी प्रकारका अन्तर अखण्ड परमधामके प्राणी तथा नश्वर संसारके जीवोंमें है.

कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते ।
ए जवाब है तिन को, देखो पटंतर ए ॥ १४

कोई कह सकते हैं कि ये जादूके कबूतर तो वास्तवमें हैं ही नहीं (उनका

कोई अस्तित्व ही नहीं है, वे तो मात्र प्रतीति हैं) किन्तु एक मनुष्य तो जीवित प्राणी है (उसका अस्तित्व है) उनके लिए भी यही उत्तर है कि नश्वर संसारके प्राणीका कोई अस्तित्व नहीं है जबकि अखण्ड परमधामका पशु भी शाश्वत है, दोनोंमें यही अन्तर है.

आगूं कायम अरस के, है चौदे तबक यों कर ।
ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर ॥ १५

अखण्ड परमधामके सम्मुख अनित्य ब्रह्माण्डके चौदह लोक उसी प्रकार अस्तित्वहीन हैं जिस प्रकार नश्वर जगतके जीवोंके सम्मुख जादूके काल्पनिक कबूतर अस्तित्वहीन हैं.

जो कछू पैदा कुन से, मैं तिनका देत निमूना ।
सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना ॥ १६

मैंने यह उदाहरण भी ऐसे नश्वर संसारका दिया है जो परमात्माके द्वारा होजा (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न हुआ है. वास्तवमें संसारकी नश्वर वस्तुओंका उदाहरण देकर परमधामकी अखण्डता (शाश्वतता) को कैसे समझाया जा सकता है ?

तो कह्या सबदातीत को, हद सबद पोहोंचत नाहें ।
ऐसे झूठ निमूना देए के, पछतात हों जीव मांहें ॥ १७

इसीलिए शास्त्रोंने परमधामको शब्दातीत कहा है क्योंकि अनित्य संसारके शब्द वहाँ तक पहुँच नहीं सकते. किन्तु नश्वर संसारके शब्दोंका उदाहरण देते हुए मुझे अन्तरसे पश्चात्ताप होता है.

कछुक सुख तो उपजे, हिसा कोटमां पोहोंचे तित ।
एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं ताथें दुख पावत ॥ १८

इन नश्वर शब्दों द्वारा दी गई उपमाका करोड़वाँ अंश भी यदि अखण्ड तक पहुँच पाता (अखण्डका लेशमात्र भी वर्णन कर सकता) तो मुझे कुछ आनन्द होता. किन्तु नश्वर शब्दोंका अंशमात्र भी परमात्मा तक नहीं पहुँचता है इसलिए मुझे (परमधामका वर्णन करनेमें) कष्ट होता है.

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त ।
इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत ॥ १९

मैंने संसारमें जो कुछ देखा और सुना है वे सभी वस्तुएँ अनित्य हैं. वस्तुतः इस अनित्य शरीरके द्वारा अखण्ड परमधामकी विशेषताओंका वर्णन कैसे हो सकता है ?

ताथें सिफत मैं क्यों करूं, अरस अजीम की ख्वाबमें इत ।
एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित ॥ २०

इसलिए मैं इस नश्वर संसारमें अखण्ड परमधामकी विशेषताओंका वर्णन कैसे करूँ ? इतना भी मैं धामधनीके आदेश द्वारा ही कह रहा हूँ अन्यथा इतना कहनेवाला भी तो कहीं नहीं है.

ताथें अरस और दुनी के, तफावत जानवर ।
कायम और फना की, क्यों आवे बराबर ॥ २१

इसीलिए अखण्ड परमधाम तथा नश्वर संसारके प्राणियोंका अन्तर स्पष्ट नहीं किया जा सकता. क्योंकि परमधामके नित्य तथा संसारके अनित्य प्राणियोंमें कैसे समानता हो सकती है ?

चुप किए भी ना बने, समजाए ना बिना मिसल ।
पसू पंखी अरस और खेल के, देखो तफावत बल ॥ २२

कुछ कहे बिना (मौन रहनेसे) भी कार्य सिद्ध नहीं होता और उदाहरण (दृष्टान्त) दिए बिना समझाया भी नहीं जा सकता. उपर्युक्त उदाहरणके द्वारा समझ लेना कि अखण्ड परमधाम तथा नश्वर संसारके पशु-पक्षियोंकी शक्तिमें क्या अन्तर है.

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरुड जांबू हनुमान ।
ए उठावें पहाड को, ऐसे कहे बलवान ॥ २३

इस संसारमें अङ्गद, बाली, सुग्रीव, गरुड, जाम्बवन्त, हनुमान आदि प्रसिद्ध बलशाली पशुपक्षी हुए हैं जो पर्वतोंको भी उठाया करते थे.

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर ।
राम कृस्न इनके सिर, तो केहे ऐसे जोरावर ॥ २४

नश्वर जगतके पशु-पक्षियोंमें भी इतनी शक्ति बतलाई है. इनको श्रीराम तथा श्रीकृष्णका संरक्षण प्राप्त था इसलिए ये इतने शक्तिशाली हुए हैं.

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत ।
लोक जिमी आसमान के, ए देखो तफावत ॥ २५

अब मैं वैकुण्ठवासी पशु-पक्षियोंकी शक्तिका वृत्तान्त कहता हूँ जिससे मृत्युलोक तथा देवलोकके पशु-पक्षियोंका अन्तर समझ लेना.

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर ।
गरुड बल ऐसा रखे, चले विस्नु मन पर ॥ २६

वैकुण्ठमें एक ओर भगवान विष्णु इतने शक्तिशाली हैं कि वे पूरे ब्रह्माण्डके पालन पोषणका भार उठाते हैं. दूसरी ओर उनके ही वाहन गरुड ऐसे समर्थ हैं कि वे भगवान विष्णुकी इच्छानुरूप तीव्र गतिसे चलते हैं.

देख बल इन खावंद का, जो मलकूत में बसत ।
कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बंदोंको बकसत ॥ २७

इस नश्वर संसारके स्वामीकी शक्तिको तो देखो जो वैकुण्ठमें रहते हैं और ऐसे करोड़ों नए संसारकी रचना कर अपने सेवकोंको दे सकते हैं.

ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर ।
ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरे उठे मिटे सागर ॥ २८

ये सभी भक्त तो मृत्युलोकमें हैं तथा उनके स्वामी भी मृत्युलोकसे परे वैकुण्ठमें रहते हैं. वास्तवमें ये दोनों लोक भी सागरमें उठ कर मिट जाने वाली लहरोंकी भाँति नश्वर हैं.

नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर ।
सो मलकूत के एक छिनमें, कै कोट जात मर मर ॥ २९

क्षर जगतके अवतारोंके सेवकोंमें भी इतनी शक्ति बतलाई गई है जबकि वैकुण्ठ लोकके एक क्षणमात्रमें ऐसे अनेक लोगोंका करोड़ों बार जन्म और मरण होता है.

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर ।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर ॥ ३०

वैकुण्ठ (देवलोक) के समक्ष मृत्यु लोकका अस्तित्व सागरकी लहरोंके समान है. इस प्रकार वैकुण्ठके समक्ष यह मृत्युलोक नगण्य अस्तित्व रखता है.

दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत ।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत ॥ ३१

यदि शून्य-निराकारको सागर समान मान लें तो यह वैकुण्ठ भी उसकी लहर समान होता है और इस वैकुण्ठकी भी सूक्ष्म लहरके समान नगण्य अस्तित्ववाला यह मृत्युलोक है.

ए तले ला मकान के, दोऊ फना के माहें ।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नाहें ॥ ३२

शून्य-निराकारके अन्तर्गत वैकुण्ठ अथवा मृत्युलोक दोनों ही नश्वर हैं. वैकुण्ठ तथा मृत्युलोककी विशेष शक्ति भी नितान्त (लेशमात्र भी) स्थायी नहीं है.

विस्नु ब्रह्मा रूद्र की, साहेबियां बुजरक ।
ए चौदे तबक की दुनियां, जाने याही को हक ॥ ३३

इस जगतमें भगवान् विष्णु, ब्रह्माजी तथा भगवान शङ्करके प्रभुत्वकी विशेष महिमा कही गई है. इसलिए चौदह लोकोंके जीव उनको ही सत्य परमात्मा मानते हैं.

बिना हिसाबें उमतें, करे सिफतें अनेक ।
सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक ॥ ३४

इनके भक्तजन भी संसारमें असंख्य हैं तथा अनेक प्रकारसे इनकी महिमा गाते हैं. वे सभी यही कहते हैं कि हमारे अधिपति ये ही हैं.

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन ।
कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुन ॥ ३५

वैकुण्ठके स्वामी त्रिगुणाधिपतियोंको ही लोग परमात्मा समझते हैं. कदाचित्

वे अधिक ज्ञान प्राप्तकर वैकुण्ठसे आगे बढ़ते भी हैं तो भी शून्य-निराकारमें ही लीन हो जाते हैं.

ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढे हक को अटकल ।
रात दिन करे सिफतें, पर पावे नहीं असल ॥ ३६

सत्यलोक (वैकुण्ठ) के स्वामी त्रिगुणाधिपति भी अनुमानके द्वारा ही परब्रह्म परमात्माकी खोज करते हैं. वे रात-दिन परमात्माकी महिमा गाते हैं तथापि अविनाशी परमात्माको प्राप्त नहीं कर सकते.

ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फिरस्ते समेत ।
सिफत कर कर आखर, कहे नेत नेत नेत ॥ ३७

इस सृष्टिमें ऐसे वैकुण्ठ भी असंख्य हैं तथा उनके अधिपति भी असंख्य हैं. उन्होंने भी अविनाशी परमात्माके गुण गाते हुए उसका पार नहीं पाया और अन्तमें परमात्माको 'नेति नेति' कह दिया.

करे कोट मलकूती सिफतें, देख नूर जलाल कुदरत ।
तो पट आडा ना टरे, कै कर कर गए सिफत ॥ ३८

करोड़ों वैकुण्ठाधिपति अक्षरब्रह्मके सामर्थ्यको देखकर उनकी महिमा गाते हैं. इस प्रकार उन लोगोंने अनेक प्रशंसा की तथापि उनके भ्रमका आवरण (पट) दूर नहीं हुआ.

ए सबे सिफतें करे, पर पोहोंचे न नूर जलाल ।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल ॥ ३९

ये सभी वैकुण्ठाधिपति अक्षरब्रह्मकी महिमा तो गाते हैं किन्तु वहाँ तक पहुँच नहीं पाते. क्योंकि इनकी उत्पत्ति ही शून्य-निराकारसे हुई है, इसलिए उनकी स्तुति-प्रार्थना तथा आचरण (कर्म) वहाँ तक पहुँच नहीं सकते.

इन विध चले जात हैं, आखर अव्वल से ।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने ॥ ४०

इस प्रकार अपने जीवनके आरम्भसे अन्त पर्यन्त प्रयत्न करते हुए अनेक लोग चले गए, अनेकोंने महिमा गाई किन्तु कोई भी अक्षरब्रह्मके तेजको प्राप्त नहीं कर सका.

अब देखो बल महंमद का, दई दुनियां को सरीयत ।
कह्या आखर रब आवसी, खोलसी हकीकत ॥ ४१

अब रसूल मुहम्मदकी क्षमताको देखो, उन्होंने संसारके लोगोंको कर्मकाण्ड (शराअ) का ज्ञान दिया और कहा कि अन्तिम समयमें परमात्मा प्रकट होंगे और वास्तविकताका ज्ञान देंगे.

आवसी उमत अरस से, ए खेल को देखन ।
करें हक को जाहेर, सब का एह कारन ॥ ४२

उन्होंने यह भी कहा कि परमधामसे ब्रह्मात्माएँ जगतका नश्वर खेल देखनेके लिए आएँगी और पूर्णब्रह्म परमात्माको भी प्रकट करेंगी. संसारकी यह सृष्टि भी ब्रह्मात्माओंके कारण ही हुई है.

कायम वतन करें जाहेर, करे जाहेर नूरजलाल ।
करें उमत अरस की जाहेर, करे जाहेर नूरजमाल ॥ ४३

उन्होंने और भी कहा कि ब्रह्मात्माएँ प्रकट होकर अखण्ड परमधामका रहस्य स्पष्ट करेंगी और अक्षरब्रह्मकी शक्तिको भी उजागर करेंगी. अपने मूल (परात्म) स्वरूपको प्रकट करते हुए पूर्णब्रह्म (नूरजमाल) को भी प्रकट करेंगी.

जब ए करें जाहेर, देवें पट उडाए ।
भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए ॥ ४४

जब ब्रह्मात्माएँ उपर्युक्त सभी बातोंको स्पष्ट करेंगी तब अज्ञानके आवरणको भी दूर कर देंगी. अन्तिम (कयामतके) समयमें सभी जीवोंको नश्वर जगतसे उठाकर मुक्ति स्थलोंमें अखण्ड कर देंगी.

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए ।
तो आखर आए सबन को, दई हैयाती पोहोंचाए ॥ ४५

ये सभी ब्रह्मात्माएँ परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीकी तेजस्वरूपा हैं और श्रीश्यामाजी स्वयं अक्षरातीतकी तेजस्वरूपा हैं. उन्होंने इस अन्तिम युगमें प्रकट होकर संसारके समस्त जीवोंको अमरत्व प्रदान किया है.

बारे हजार उमत की, रूहें जो इमदाए ।
जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए ॥ ४६

आप बैठे बीचमें, ले अपनी तीन सूरत ।
ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत ॥ ४७

कुरानके अनुसार परमधामकी बारह हजार ब्रह्मात्माओंको जिब्रील फरिश्ताके दोनों पङ्खों पर बैठाकर मुहम्मद अपने तृतीय स्वरूप इमाम महदीके रूपमें स्वयं बीचमें बैठेंगे तथा शून्य निराकारको पार कर अक्षर (नूर) से भी परे पहुँच जाएँगे.

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर ।
नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर ॥ ४८

मुहम्मदका इतना तेज है कि उसके प्रतापसे जिब्रील फरिश्ता भी मृत्युलोक, वैकुण्ठ तथा शून्य निराकारको पार कर अपने घर अक्षरधाम पहुँच जाते हैं.

एह बल महंमद के, जानवर का जान ।
दूजी गिरो फिरस्ते, पोहोंचाई नूर मकान ॥ ४९

मुहम्मद पर अवतरित जिब्रील फरिश्तामें इतनी शक्ति है कि उसने ईश्वरीसृष्टि (दूसरे समुदाय) को अक्षरधाम तक पहुँचा दिया.

गिरो फिरस्ते इत रहे, जबराईल मकान ।
एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान ॥ ५०

ईश्वरीसृष्टिका समुदाय, जिब्रील फरिश्ताके मूल स्थान इसी अक्षरधाममें है. वह इससे आगे नहीं जा सकता क्योंकि इस (समुदाय) का भी मूलधाम यही है.

जो रूहें अरस अजीम की, खासलखास उमत ।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत ॥ ५१

जो अखण्ड परमधामकी ब्रह्मात्माएँ हैं वे विशेष समुदाय कहलाती हैं. उनको लेकर श्रीश्यामाजी परमधाम (नूरतजल्ला) पहुँच जाएँगी जिनकी इस संसारमें तीन सुरताएँ मानी गई हैं.

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन ।
इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन ॥ ५२

ब्रह्मात्माएँ सुरतारूपसे संसारका खेल देखकर परमधाम लौट गईं. उन्होंने संसारके जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें अमरत्व प्रदान किया. वे मूल रूपसे परमधाममें बैठी हुई होने पर भी सुरतारूपसे संसारमें आकर इस प्रकार पुनः अपने अखण्ड धामको लौट जातीं हैं.

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत ।
ए झूठों इसक देखाए के, कायम सबों कर लेत ॥ ५३

चौदह लोकोंके सभी जीवोंको यह जिब्रील फरिश्ता जोश प्रदान करता है तथा नश्वर संसारके जीवोंको भी ब्रह्मात्माओंका सत्य प्रेम दिखाकर मुक्तिस्थलोंका सुख प्रदान करता है.

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर है महंमद ।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद ॥ ५४

इस प्रकार जिब्रील फरिश्ताकी शक्तिका क्या वर्णन करें जिसको मुहम्मदका संरक्षण प्राप्त है. इसके बल और बुद्धिकी प्रशंसा इस नश्वर जिह्वासे नहीं हो सकती.

कायम जिमी अरस की, सांची जो साबित ।
पसू पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत ॥ ५५

परमधामकी भूमि अखण्ड होनेसे सर्वदा नित्य कहलाती है. इसलिए इस अखण्ड भूमिमें सदैव रहने वाले पशुपक्षी भी अखण्ड (नित्य) कहलाते हैं.

कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक ।
तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक ॥ ५६

इस अखण्ड भूमिकाके स्वामीको पूर्णब्रह्म परमात्मा कहा जाता है अतः इस भूमिके पशुपक्षी भी सदा सर्वदा उनके समान चिन्मय हैं.

बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब ।
ए बल दिलमें लेय के, तौलो निमूना ख्वाब ॥ ५७

ऐसे अखण्ड परमधाममें असंख्य चिन्मय पशु तथा पक्षी हैं. उनके अलौकिक शक्तिको हृदयमें धारण कर स्वप्नके जीवोंके साथ उनकी तुलना करके देखो (उनके समक्ष स्वप्नके जीवोंका कोई अस्तित्व नहीं है.)

कोट इंड की दुनीय का, कूवत बल हिकमत ।
अपार अरस के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत ॥ ५८

करोड़ों ब्रह्माण्डोंके जीवोंके सामर्थ्य, बल एवं कुशलता की तुलना अपार परमधामके एक पशुकी शक्तिके साथ भी संभव नहीं है. वस्तुतः परमधामके पशुपक्षियोंके सामर्थ्यका वर्णन इस नश्वर जिह्वा तथा बुद्धिसे कैसे किया जाए ?

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन ।
झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड ला मकान सुन ॥ ५९

क्योंकि परमधामके पशुपक्षियोंकी शक्ति अवर्णनीय है. अतः उनके लिए नश्वर जगतका उदाहरण कैसे दिया जाए ? क्योंकि संसारकी सभी वस्तुएँ (प्राणी) स्वप्नवत हैं तथा संसारका मूल ही शून्य- निराकार है.

ए बल सबदातीत को, जो सांचे हैं सूर ।
और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर ॥ ६०

परमधामके पशुपक्षियोंकी शक्ति तो शब्दातीत है क्योंकि वे सभी सच्चे शूर-वीर हैं. उनकी शक्तिकी चर्चा इस नश्वर संसारमें कैसे की जा सकती है ?

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं कह्यो न जाए ।
सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों त्राजू तौलाए ॥ ६१

सत्य और असत्यका अन्तर मुखसे कभी भी कहा नहीं जा सकता. सत्य परमात्मा तथा असत्य संसारको एक ही तुलामें कैसे तौला जा सकता है ?

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत ।
झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत ॥ ६२

इसी प्रकार वैकुण्ठ तथा अक्षरधामका अन्तर भी कैसे बताया जाए ? वस्तुतः नश्वर जगत तथा अखण्ड अविनाशी धाम एवं परमात्माका सम्बन्ध ही कैसा ?

कोट मलकूत नासूत, एक पलमें करे पैदाए ।
सो नूर नजर देख के, एक छिनमें दे उडाए ॥ ६३

अक्षरब्रह्म इतने समर्थ हैं कि वे करोड़ों वैकुण्ठ तथा मृत्युलोकको पलमात्रमें उत्पन्न करते हैं और अपनी तेजोमयी दृष्टिसे देखते-देखते दूसरे ही क्षण उन्हें मिटा भी देते हैं.

ओ जाने हम कदीम के, आद हैं असल ।
कै चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल ॥ ६४

वैकुण्ठ आदि लोकोंके अधिपति स्वयंको अनादि मानते हैं, परन्तु अक्षरब्रह्मके एक ही पलमें ऐसे अनेक वैकुण्ठकी उत्पत्ति तथा लय हो जाता है.

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत ।
ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत ॥ ६५

अक्षरब्रह्मकी इच्छा (मूलप्रकृति) करोड़ों ब्रह्माण्डोंको उत्पन्न कर लय कर देती है. अक्षरब्रह्म इतने समर्थ हैं कि उनके एक पलके चतुर्थ अंशमात्रके सङ्केतसे यह कार्य होता है.

झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित ।
यों अरस और दुनीय के, कौन निमूना इत ॥ ६६

असत्य वस्तुओंका अस्तित्व ही नहीं होता और सत्य स्वतः प्रमाणित होता है. इसलिए अखण्ड परमधाम तथा स्वप्नवत् संसारकी तुलनामें कौन-सी उपमा दी जाए ?

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें ।
तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्यांहें ॥ ६७

इस प्रकार परमधामके पशुपक्षियोंकी शक्ति अतुलनीय है, उनकी उपमाके लिए भी नश्वर संसारमें कोई वस्तु नहीं है. उपमा तो तभी दी जा सकती है जब कोई वस्तुका अस्तित्व हो.

ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर ।
तो मुखसे सबद ना केहे सकों, इन बल हक जहूर ॥ ६८

ऐसे अति शक्तिशाली पशुपक्षी परब्रह्म परमात्माके सान्निध्यमें रहते हैं. इस प्रकार पूर्णब्रह्मके निकट रहनेवाले पशुपक्षीके बलका वर्णन इस जिह्वासे नहीं हो सकता.

जो बसत अरस जिमिएं, या नजीक या दूर ।
रात दिन इन के अंगमें, बरसत हक का नूर ॥ ६९

जो पशुपक्षी परमधामकी अखण्ड भूमिकामें परब्रह्म परमात्माके निकट या दूर रहते हैं उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें रात-दिन धामधनीके तेजकी वर्षा होती रहती है.

यों अरस के जानवर, सो सारे हीं पेहेलवान ।
वरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान ॥ ७०

इस प्रकार परमधामके सभी जानवर एवं पशुपक्षी अति बलशाली हैं क्योंकि उन पर परमकृपालु परमात्माके तेजोमयी दृष्टिकी वर्षा होती रहती है.

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार ।
नजरों अमी रस पीवत, अरस खावंद सींचनहार ॥ ७१

इन चिन्मय जानवर पशुपक्षियोंकी शक्ति तथा बुद्धिका भी कोई पारावार नहीं है. वे सदा सर्वदा धामधनी अक्षरातीतकी कृपादृष्टिका अमृत रस पान करते हैं.

कौन बल होसी इन का, देखो दिल बिचार ।
जिन का सका साहेब, पल पल सींचनहार ॥ ७२

इनमें कितनी महान शक्ति होगी, जरा हृदयपूर्वक विचार करके तो देखो ?

जिनको पल-पल अमृतरस पिलानेवाले स्वयं धामधनी पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं.

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूंके देवे तोड ।
तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड ॥ ७३

परमधामके ये पशुपक्षी ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्डोंको एक फूँकमें उड़ा देंगे (ऐसा कहा जाए) तो भी उनके लिए यह तुलना उपयुक्त नहीं हो सकेगी.

उडावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर ।
उड जाएं इन के बाउसों, जब ए उठावें पर ॥ ७४

परमधामका एक छोटा-सा प्राणी भी ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्डोंको उड़ा सकता है. जब ये पक्षी पङ्ख फैलाकर उड़ने लगते हैं तब पङ्खकी हवा मात्रसे ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड धूलकी भाँति उड़ जाते हैं.

ए निमूना अरस ख्वाब का, देखो तफावत ।
देखो अकल असल की, जो होवे अरस उमत ॥ ७५

इस दृष्टान्तके द्वारा अखण्ड पमरधाम तथा नश्वर संसारका अन्तर समझ लो. जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे अपनी मूल (जागृत) बुद्धिके द्वारा यह अन्तर स्पष्ट समझ लें.

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक ।
देने पेहेचान गिरोह को, या से जानें हक ॥ ७६

ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए ही इन चौदह लोकोंकी रचना की गई है. जिससे वे इनकी नश्वरताको देखकर परमधामकी शाश्वतता तथा धामधनीकी महिमाको पहचान सकें.

पावने बुजरकी अरस की, और बुजरकी खुदाए ।
पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इमदाए ॥ ७७

परमधामकी महिमा, धामधनीका प्रभुत्व तथा स्वयंका महत्त्व समझनेके लिए ही सदा सर्वदा परमधाममें रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें अवतरित हुई हैं.

सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे ।
अरस लजत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए ॥ ७८

उपर्युक्त महिमाको तभी जाना जा सकता है जब (अखण्ड और नश्वरका) हृदयपूर्वक चिन्तन हो. परमधामकी महिमाका निश्चित ज्ञान होने पर ही वहाँके आनन्दका अनुभव हो सकता है.

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
बिचार देखो हादीय की, बानी ले दिलमों ॥ ७९

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम परमधामके अखण्ड आनन्दका अनुभव करनेके लिए संसारमें आई हो, तुम्हें सोनेके लिए यहाँ नहीं भेजा है. इसलिए अपने सद्गुरु निजानन्द स्वामीके वनचनोंको हृदयपूर्वक विचार कर देखो.

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नाहें ।
सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अरस के माहें ॥ ८०

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम जिस ब्रह्माण्डको देख रही हो वस्तुतः उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है. अखण्ड परमधामकी यथार्थताको समझानेके लिए यहाँ पर कोई उदाहरण ही नहीं है (इसलिए तुम्हें यह असत्य जगत दिखाया है ताकि इसकी नश्वरताको देखकर तुम परमधामकी शाश्वतताको समझ सको).

जब खावंद अरस देखिए, तब तो एही एक ।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख ॥ ८१

जब परमधामके स्वामी अक्षरातीतके सम्बन्धमें देख लेंगे तब ज्ञात होगा कि वे ही एक परम सत्य हैं, उनके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है, चाहे लाखों बार क्यों न देख लिया जाए.

जो कछू अरस में देखिए, सो सब जात खुदाए ।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इफ्तदाए ॥ ८२

परमधाममें जो कुछ दृष्टिगोचर होता है वह सब परमात्माका ही स्वरूप है.

वहाँके क्रीड़ास्थल, वन, उपवन सभी सामग्री उनके ही स्वरूप हैं.

ना अरस जिमिएं दूसरा, कोई और धरावे नाऊं ।
ए लिख्या वेद कतेबमें, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं ॥ ८३

परमधामकी अद्वैत भूमिकामें पूर्णब्रह्मके अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुका अस्तित्व (नाम, निशानी) ही नहीं है. वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें भी यहीं लिखा है कि पूर्णब्रह्मके अतिरिक्त कुछ है नहीं.

और खेलौने जो हक के, सो दूसरे क्यों केहेलाए ।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इसदाए ॥ ८४

परमधामकी सभी वस्तुएँ धामधनीके लीलापात्र (खिलौने) हैं, इसलिए वे उनसे भिन्न कैसे कहलाएँगी ? धामधनीके अतिरिक्त यदि कुछ होता तभी तो उनसे भिन्न कहा जा सकता.

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए ।
ए खेल हैं खावंद के, ए जो चली कतारें जाए ॥ ८५

परन्तु जो सृष्टि अक्षरब्रह्मकी कल्पनाके द्वारा उत्पन्न और लय होती रहती है उसे दूसरा कैसे कहा जाए ? क्योंकि यह तो उनकी कल्पनाका ही खेल है और यहाँके जीव भी अन्धानुकारण करते चले जा रहे हैं.

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नाहें ।
ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाएं ॥ ८६

इस नश्वर खेलके जीव पूर्णब्रह्मको पहचानते ही नहीं अन्यथा निरन्तर बनकर मिटनेवाले इस (अस्तित्वहीन) खेलको दूसरा क्यों कहते.

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार ।
सो लाही लिए जात है, ज्यों चले चींटी हार ॥ ८७

नश्वर जगतके जीवोंको अखण्ड अविनाशी परमात्माकी पहचान कैसे हो सकती है ? इसलिए वे समझे बिना चींटियोंकी हारकी भाँति असत्यके पीछे चलते रहते हैं.

बडी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक ।
लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक ॥ ८८

परमात्माकी महिमा ही अति भारी है और उनकी लीलाएँ (खेल) भी गरिमामयी होती हैं. इस प्रकार वेद, कतेब आदि धर्मग्रन्थोंमें स्पष्ट लिखा है तथापि सांसारिक जीवोंकी शङ्काएँ नहीं मिटती.

झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल ।
खेल देखें पाइयत है, खुद खावंद का बल ॥ ८९

सत्य परमधाम और असत्य संसारका यही उदाहरण है कि परमधाम अखण्ड है तथा संसार नश्वर है परन्तु नश्वर संसारको देखने पर ही पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रभुत्वको पहचाना जा सकता है.

असल आदमियों मिने, कोई पाइए उमत का एक ।
ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक ॥ ९०

संसारमें उच्च कोटिके मनुष्योंमें भी कोई एक ही ब्रह्मवासना मिलती है. सामान्य जीव तथा ब्रह्मात्माओंके अन्तरको हृदयसे विचारकर विवेकपूर्वक देखो.

अब कहूं मैं तिन को, अरस खावंद की बात ।
खडियां तले कदम के, जो हैं हक की जात ॥ ९१

अब मैं उन ब्रह्मात्माओंको धामधनीकी बात कह रहा हूँ, जो धामधनीकी ही अङ्गनाएँ हैं तथा सदैव उनके ही चरणोंमें आश्रित हैं.

जो उतरे हैं अरस अजीम से, रूहें और फिरस्ते ।
कहिए जात खुदाए की, असल हैं अरस के ॥ ९२

सर्वोच्च धाम परमधामसे जो ब्रह्मात्माएँ ईश्वरीसृष्टिके साथ इस नश्वर जगतमें अवतरित हुईं हैं, उनका ही मूल स्थान अखण्ड परमधाम है तथा वे ही परमात्माकी अङ्गभूता मानी जाती हैं.

ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए ।
एही हकुलयकीन, जो अरस दरगाह के होए ॥ ९३

पूर्णब्रह्म परमात्माकी बात भी वे ही ब्रह्मात्माएँ सुनेंगी. इनको ही कुरानमें परमात्माके प्रति शीघ्र विश्वास लानेवाली (हक-उल-यकीन) कहा है तथा उनका घर परमधाम बताया है.

सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अरस से ।
उतरते अरवाहोंसों, कौल किया हक ने ॥ ९४

कुरान यह भी स्पष्ट कहता है कि जो ब्रह्मात्माएँ परमधामसे संसारमें अवतरित हुई हैं उनको उतरते समय परमात्माने वचन दिए थे.

कह्या उतरते हक ने, अलस्तो बे रब्बकुम ।
फेर कह्या अरवाहोंने, वले न भूलें हम ॥ ९५

ब्रह्मात्माओंके संसारमें अवतरणके समय परमात्माने कहा, क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ ? (अलस्तु बिरब्ब कुम). तब ब्रह्मात्माओंने कहा था ''निश्चय ही आप हमारे स्वामी हैं, हम कभी भी इस बातको नहीं भूलेंगीं.''

ए देत अरस निसानियां, याद आवसी तिन ।
सरत करी खावंदने, उतरते अरस रूहन ॥ ९६

इस प्रकारके परमधामके सङ्केत बताने पर ब्रह्मात्माओंको अपने मूल घरकी बात स्मरण हो जाएगी क्योंकि उनके अवतरणके समय परमात्माने उन्हें (स्वयं आनेका) वचन दिया था.

अब जो असल उमत का, ताए देऊं अरस निसान ।
तिन विध देऊं साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान ॥ ९७

अब मैं परमधामकी आत्माओंको परमधामके चिह्न (सङ्केत) बता देता हूँ. उनको मैं उसी प्रकारकी साक्षी दूँगा जिससे उन्हें पहचान हो जाए.

कलाम अल्लाकी साहेदी, और हदीसें महंमद ।
तुमें कहूं तौहीद की, ले रूहअल्ला साहेद ॥ ९८

अब मैं तुम्हें ब्राह्मी आदेश कुरान, रसूल मुहम्मदके कथनरूप हदीस तथा

निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराजके वचनोंकी साक्षी देकर अद्वैत परमधामकी बात समझाता हूँ.

नूर आवे दीदार को, लेने सुख सुभान ।
ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान ॥ ९९

अक्षरब्रह्म अक्षरातीतका परम सुख (आनन्द) प्राप्त करनेके लिए नित्य उनके दर्शनार्थ आते हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके इन अखण्ड सुखोंका महत्त्व देखो, उन्हीं सुखोंकी पहचानके लिए इस नश्वर जगतकी रचना हुई है.

नूरें चाह्या दिलमें, देखूं इसक रूहन ।
तब तुमें खेल नूर का, दिलमें हुआ देखन ॥ १००

अक्षरब्रह्मने जब अक्षरातीत धनी एवं ब्रह्मात्माओंके प्रेमानन्दमयी लीला देखनेकी अन्तर इच्छा की उसी समय तुम्हारे हृदयमें भी अक्षरब्रह्मका खेल देखनेकी इच्छा उत्पन्न हुई.

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिलमें आन ।
ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान ॥ १०१

हे ब्रह्मात्माओ ! हृदयपूर्वक विचार करो कि यह खेल तुम्हारे लिए ही बनाया गया है. यह मिथ्या खेल इसीलिए दिखाया गया है कि इसकी नश्वरताको देखकर तुम्हें अखण्ड परमधाम तथा धामधनीकी पहचान हो सके.

बिचारो रूहें अरस की, जो देखाई झूठ नकल ।
देखो तफावत दिलमें, ले अपनी असल अकल ॥ १०२

हे परमधामकी आत्माओ ! विचार करो, यह नश्वर संसारका खेल तुम्हें दिखाया जा रहा है. अपनी मूल (जागृत) बुद्धि हृदयमें धारण कर नश्वर संसारकी असत्यता तथा अखण्ड परमधामकी शाश्वतताका अन्तर समझ लो.

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम ।
पेहेलें चीन्हो आपको, पीछे हादी और खसम ॥ १०३

तुम्हें यथार्थ पहचान करवानेके लिए यह मायाका खेल दिखाया गया है. इसलिए अब सर्वप्रथम स्वयंको पहचान लो तत्पश्चात् श्यामाजी तथा पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीराजजीकी पहचान करो.

ए खावंद सिर अपने, आपन इनके अंग ।
अरस वतन अपना, कायम हमेसा संग ॥ १०४

धामधनी परब्रह्म परमात्मा हमारे शिरमौर हैं. हम सभी आत्माएँ उनकी अङ्गनाएँ हैं. अखण्ड परमधाम हमारा मूल घर है जहाँ हम सभी सदैव एक साथ रहतीं हैं.

कायम जिमी अरस की, साहेबी पूरन कमाल ।
तो कैसा निमूना इन का, जिन सिर नूर जमाल ॥ १०५

परमधामकी भूमि अखण्ड है, धामधनीका प्रभुत्व भी श्रेष्ठ तथा परिपूर्ण है. जिस परमधामके स्वामी स्वयं अक्षरातीत परमात्मा है उसकी उपमा (तुलना) कैसे दी (की) जा सकती ?

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और ।
कायम जिमीमें दूसरा, काहूं न पाइए ठौर ॥ १०६

परमधामकी उपमा तभी दी जा सकती है जब उसके समान या उससे छोटी किसी वस्तुका अस्तित्व वहाँ पर हो. वस्तुतः अखण्ड (अद्वैत) भूमिकामें उस (परमधाम) के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान ही नहीं है.

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन ।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन ॥ १०७

न अक्षर ब्रह्मकी तथा न ही अखण्ड परमधामकी कोई उपमा हो सकती है. इसी प्रकार पूर्णब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंकी उपमा भी नहीं हो सकती.

महामत कहे ऐ मोमिनो, तुम हो बका के ।
हक अरस किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते ॥ १०८

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! तुम सब अखण्ड परमधामके वासी हो. इस प्रकार तुम्हारे लिए ही पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा अखण्ड परमधामका रहस्य प्रकट किया है.

अरस अजीमकी हक मारफत महाकारन

(परमधाम तथा परमात्माकी पहचान एवं महाकारण)

कहूं अरस अरवाहों को, रूहअल्ला के इलम ।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम ॥ १

निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके तारतम ज्ञानके प्रतापसे मैं ब्रह्मात्माओंको यह कह रहा हूँ, जैसी मुझे आज्ञा हुई है. इसी ज्ञानसे पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान हो सकती है.

और कहूं मैं अरस की, ज्यों खबर उमत को होए ।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए ॥ २

साथ ही मैं परमधामकी बात कहता हूँ जिससे ब्रह्मात्माओंको उसका यथार्थ ज्ञान हो जाए. मैं अखण्ड धामका सम्पूर्ण विवरण स्पष्ट करता हूँ जिससे सभीको उसकी सुधि हो जाए.

हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत ।
नूर मकान जाहेर करूं, ए एकै जात सिफत ॥ ३

पूर्णब्रह्म परमात्माकी अङ्गभूता श्यामाजी, ब्रह्मात्माएँ, सम्पूर्ण परमधाम तथा अक्षरधामका रहस्य प्रकट करता हूँ. वस्तुतः ये सभी एक ही अद्वैत स्वरूपकी महिमा है.

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर ।
ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर ॥ ४

पूर्णब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामाजी (मुहम्मद) उनके ही तेज स्वरूपा हैं तथा ब्रह्मात्माएँ श्यामाजीकी किरणें हैं. ये परमधाम सर्वदा अद्वैत स्वरूपमें हैं तथा सभीमें इसी अद्वैतताका प्रकाश व्याप्त है.

ए जो सदरतुल मुंतहा, ए है कायम अरस ।
ए जात सिफात एकै, ए हैं अरस परस ॥ ५

कुरानमें जिसे 'सद्रतुल मुन्तहा' कहा गया है वह अविनाशी अक्षरधाम है.

इसमें भी परमधामके समान विशेषताएँ हैं. अक्षर और अक्षरातीत धाममें परस्पर सदृश शोभा सामग्री है.

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात ।
और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अरस सिफात ॥ ६

अक्षरब्रह्म, श्यामाजी तथा उनकी अङ्गना ब्रह्मात्माएँ ये सभी अक्षरातीतके ही अङ्ग हैं. इसी प्रकार वन, उपवन, यमुनाजी, हौजकौसर आदि परमधामकी ये सभी सामग्रियाँ अक्षरातीतके प्रभुत्वकी ही महिमा है.

पार ना अरस जिमी का, ना बागों का पार ।
पार ना पसू पंखियन को, ना कछू खेल सुमार ॥ ७

परमधामकी भूमिका, वन, उपवन, पशुपक्षी तथा उनकी लीला इत्यादिका कोई पारावार नहीं है.

पार ना बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए ।
पार ना इसक आराम को, नूर पार ना इत कोए ॥ ८

उन पशु-पक्षियोंकी बुद्धि, क्षमता, कुशलता तथा सुगन्धिका कोई परावार नहीं है. इतना ही नहीं उनके प्रेम, विश्रान्ति, तेज इत्यादि किसीका भी पार नहीं पाया जा सकता.

एक पात वृक्ष को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर ।
ना होए नया कछू अरसमें, जंगल या जानवर ॥ ९

परमधाममें एक वृक्षका पत्ता भी नहीं गिरता और पक्षियोंके पङ्ख भी नहीं टूटते हैं. वहाँके वन तथा पशु-पक्षियोंमें न कोई पुराना होता है और न ही कोई नयाँ उत्पन्न होता है (सभी समरस होते हुए नित्यनूतन शोभा प्रदान करते हैं).

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन ।
सो वास्ता कहूं इन भांतसों, ज्यों होए सबे रोसन ॥ १०

अब मैं इस नश्वर खेलका विवरण देता हूँ कि इसकी रचना किसके लिए की है ? इस खेलके मूलकारण (महाकारण) को इस प्रकार स्पष्ट करता हूँ, जिससे सब कुछ स्पष्ट हो जाए.

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम ।
होए पलमें पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम ॥ ११

अक्षरातीतके सदंश अक्षरब्रह्म अक्षरधाममें रहते हैं, उनको अक्षरातीतका आदेश प्राप्त होता है. इन्हीं अक्षरब्रह्मके द्वारा सृष्टिमें लाखों ब्रह्माण्ड पल मात्रमें उत्पन्न होकर मिट जाते हैं.

अरस खावंद है एकला, आपै हक जात ।
बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात ॥ १२

धामधनी अक्षरातीत अद्वितीय (एक ही) हैं. परमधामकी सम्पूर्ण सामग्री उनके ही स्वरूप हैं. ऐसे अक्षरातीत धनीका प्रभुत्व प्रकृतिजन्य खेल देखे बिना समझा नहीं जा सकता.

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत ।
ए खेल इन खावंदके, देखो नूर सिफत ॥ १३

इधर अक्षरधाममें अक्षरातीत धनीकी आज्ञानुसार अक्षरब्रह्म प्रकृतिजन्य खेलकी कल्पना करते रहते हैं. संसारका यह खेल जिनके द्वारा रचाया गया है, उन अक्षरब्रह्मकी महिमाको देखो.

खेलमें कै मुदत, होत है दुनियां कों ।
कै कोट होत पैदा फना, नूर के निमखमों ॥ १४

इस खेलमें सांसारिक जीवोंको अत्यधिक समय व्यतीत हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है किन्तु अक्षरब्रह्मके निमेष मात्रमें ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं.

जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान ।
सो हुकम तब ना हुआ, जिनथें उपजी जहान ॥ १५

जब आकाश या धरती की उत्पत्ति नहीं हुई थी तब जिनसे यह सम्पूर्ण सृष्टि होती है उन अक्षरब्रह्मको भी अक्षरातीतका आदेश प्राप्त नहीं हुआ था.

अब सुनों इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते ।
फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फिरस्ते ॥ १६

अब इस खेलका विवरण सुनो जिसे देखनेके लिए ब्रह्मात्माएँ अवतरित हुई हैं. उन्हीं ब्रह्मात्माओंके नाम पर सन्देश लेकर रसूल मुहम्मद आए तथा ईश्वरीसृष्टि भी अवतरित हुई.

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान ।
चौदे तबक भई दुनियां, आखर फना निदान ॥ १७

शून्य और निराकारके अन्तर्गत आकाश एवं धरतीके बीच यह खेल रचाया गया. इस प्रकार चौदह लोकोंयुक्त यह ब्रह्माण्ड बना जो अन्तमें अवश्य नाश हो जाएगा.

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अरस उमत ।
आखर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत ॥ १८

इस खेलकी रचना प्रशंसित श्यामाजी (मुहम्मद) तथा ब्रह्मात्माओंके लिए हुई है. वे ही अन्तिम समयमें प्रकट होकर इसकी यथार्थता प्रकट करेंगे.

अरस उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात ।
करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात ॥ १९

अन्तिम समयमें ब्रह्मात्माएँ प्रकट होंगी तथा अद्वैत परमाधामका रहस्य भी स्पष्ट होगा. श्यामाजीके अवतरणकी यही महिमा होगी कि वे संसारके जीवोंको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगी.

रूहअल्ला उतरे अरस से, होय काजी लेसी हिसाब ।
दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब ॥ २०

कुरानमें इस प्रकारका उल्लेख है कि रूहअल्लाह परमधामसे अवतरित होंगे और न्यायाधीश बनकर सभीका लेखा-जोखा लेंगे तथा अपने दर्शनसे संसारके जीवोंको परम पद दिलाएँगे.

महंमद मेहेदी आवसी, करसी इमामत ।
बका पर सेजदा गिरोह को, करावसी आखरत ॥ २१

यह भी लिखा है कि अन्तिम समयमें महदी मुहम्मद प्रकट होकर सबको धर्मोपदेश (इमामत) देंगे तथा आत्माओंको एक ही परमात्माके प्रति नमन करवाएँगे.

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें ।
किस वास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किनने ॥ २२

इस प्रकार सभी धर्मग्रन्थ यही कहते हैं कि परमात्माके आदेशसे ही यह खेल बना है. परन्तु किसीने भी यह नहीं कहा कि किसके लिए इस खेलकी रचनाका आदेश हुआ है ?

अब देखो दुनियां जाहेरी, करमकांड सरीयत ।
इन के इसक ईमान की, कहूं सो हकीकत ॥ २३

संसारके बाह्य कर्मकाण्ड (शराअ) में पड़े हुए लोगोंका आचरण अब देखो. मैं इनके प्रेम और विश्वासकी वास्तविकताको प्रकट कर रहा हूँ.

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक ।
तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाहीं हक ॥ २४

संसारके लोग कहते हैं कि परमात्माकी आकृति (स्वरूप) निश्चय ही नहीं है. यदि परमात्माका कोई स्वरूप ही नहीं है तो इस संसारको बनानेका आदेश किसने दिया ?

ना ठौर ठेहेरावें अरस को, ना हक की सूरत ।
हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित ॥ २५

ऐसे तथाकथित ज्ञानीजन परमात्माके धाम और स्वरूपका निश्चय नहीं कर पाते. सृष्टि रचनाके लिए परमात्मा द्वारा दिए गए आदेशको तो वे प्रमाणभूत मानते हैं किन्तु उनके स्वरूपको नहीं मानते. वस्तुतः स्वरूपके बिना आदेश किसने दिया ? (इस पर विचार नहीं करते).

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर ।
रद बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर ॥ २६

रसूल मुहम्मदने तो परमात्माको किशोर स्वरूप (अमरद सूरत) वाला कहा है जो अक्षर (नूर) के परे अक्षरातीत (नूर तजल्ला) हैं. रसूलने तो परमात्माके निकट पहुँचकर अपनी आत्माओंके (समुदायके) लिए वार्तालाप भी किया.

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नबे हजार ।
तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार ॥ २७

उस समय परमात्माने नब्बे हजार शब्दोंमें ज्ञान देकर यह आदेश दिया कि इनमें-से तीस हजार शब्दोंको स्पष्ट करना. अन्य तीस हजार शब्दोंको किस प्रकार (सङ्केत मात्रमें) प्रकट करना यह तुम्हारे अधीन है.

और तीस गुझ रखो, वे आखर पर मुदार ।
सो हम आए के खोलसी, अरस बका के द्वार ॥ २८

शेष तीस हजार शब्दोंको गुप्त रखो, वे अन्तिम (कयामतके) समय पर प्रकट करनेके लिए हैं. उस समय हम स्वयं प्रकट होकर परमधामके द्वार खोलेंगे.

सो साहेब आखर आवसी, किया महंमद सों कौल ।
भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल ॥ २९

वे परमात्मा अन्तिम समयमें अवश्य आएँगे. उन्होंने रसूल मुहम्मदको अपने आनेका वचन दिया है. उस समय प्रकट होकर वे सभी जीवोंके लिए अखण्ड मुक्तिस्थलोंके द्वार खोल देंगे.

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार ।
तो भी ईमान ना दुनी को, जो एती करी पुकार ॥ ३०

अन्तिम समयमें वे न्यायाधीश बनकर बैठेंगे. तब सभीको उनके दर्शन होंगे. इतना सब कुछ कहकर पुकार करने पर भी परमात्माके आगमनके प्रति संसारके लोगोंको विश्वास नहीं हुआ.

ऐसा ईमान इन दुनी को, कहे महंमद को बरहक ।
और महंमद के फुरमाए में, फेर तिनमें ल्यावे सक ॥ ३१

संसारके लोगोंका विश्वास ही इस प्रकारका है कि वे रसूल मुहम्मदको सत्यनिष्ठ

(बरहक) कहते हैं किन्तु उनके आदेश (फुरमान) पर सन्देह करते हैं.

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर ।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर ॥ ३२

रसूल मुहम्मदने तो परमात्माके निकट पहुँचकर उनसे बातें की. किन्तु संसारके लोग (बाह्यदृष्टिवाले) उन परमात्माके स्वरूपको ही नहीं मानते, जिनके साथ रसूलकी इतनी बातचीत हुई है.

और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार तीन ।
हादी हुकमें रूहें फिरस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन ॥ ३३

अब मैं महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र) की बात कहता हूँ, जिसके तीन खण्ड बतलाए गए हैं. (उनमें-से इस तृतीय खण्डमें) परमात्माके आदेशसे सद्गुरु (हादी), ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि सत्यधर्मके मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुए हैं.

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर ।
गिरो उतरी अरस से, जो चढी किस्ती पर ॥ ३४

इसी प्रकार पूर्वमें रासलीला (नूह तूफान) के समय अर्थात् इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के मध्य भागमें परमधामसे अवतरित इन ब्रह्मात्माओंको योगमायाकी नौकामें चढ़ाकर वृन्दावन पहुँचाया गया.

दो तकरार पेहेलें कहे, जो गुजरे माहें लैल ।
तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥ ३५

इस महिमामयी रात्रिके दो खण्डों (व्रज और रास) की लीलाएँ पहले ही सम्पन्न हो गईं. व्रज तथा रास (हूद तथा नूह तूफान) के पश्चात्की इस तीसरी लीलाको जागनी अर्थात् प्रभातकी लीला कहा गया है.

दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार ।
कह्या बेहेतर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार ॥ ३६

रसूल मुहम्मद (हिजरी सन) की दशमी शताब्दी तक संसारकी गणनामें एक हजार वर्ष होते हैं (जिनको कुरानमें खुदाका एक दिन बताया है) इसी प्रकार हजार महीनेसे भी अधिक लम्बी रात (करीब सौ वर्षकी) भी बताई गई है.

तत्पश्चात् (ग्यारहवीं शताब्दीके बाद) महिमामयी रात्रिको तीसरे खण्डका आरम्भ माना गया है.

महंमद मेहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल ।
रूहें फिरस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील ॥ ३७

इसी तीसरे खण्डमें ईसा रूह अल्लाह (सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज) तथा मुहम्मद महदी (अन्तिम धर्मगुरु) के साथ इस्राफील एवं जिब्रील फरिश्ते अवतरित हुए. ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टिकी वकालतके लिए परमात्माने इन दोनोंको भेजा है.

रहे साल चौरासी लैल में, तिन ऊपर हुई फजर ।
अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातून खुली नजर ॥ ३८

इस प्रकार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) चौरासी वर्ष पर्यन्त इस महिमामयी रात्रिके तीसरे खण्डमें (प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूपमें जागनी कार्य करते) रहे. तत्पश्चात् मेरे हृदयमें पूर्णरूपेण ज्ञानका प्रभात हुआ (तब मैंने लौकिक कार्य त्यागकर दीवसे पूर्णतः धर्मका कार्य आरम्भ किया) इस प्रकार रसूल मुहम्मदके पश्चात् ग्यारहवीं शताब्दीके समयमें मेरी अन्तर्दृष्टि पूर्णतः खुल गई. (तबसे मैं धर्मकार्य छोड़कर लौकिक कार्यमें प्रवृत्त नहीं हुआ.)

चौदे तबकों न पाइया, अरस हक का कित ।
सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत ॥ ३९

चौदह लोकोंके कोई भी प्राणी यह नहीं समझ सके कि पूर्णब्रह्म परमात्माका धाम कहाँ है ? सद्गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञानने ऐसे अगम्य परमधामको प्राणनलीसे भी निकट दिखा दिया.

अरस ना चौदे तबकमें, सो लिए इलम ईसा के ।
नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अरस बैठाए ले ॥ ४०

चौदह लोकोंमें परमधामका ज्ञान नहीं था. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ही इस ब्रह्मज्ञानको लेकर संसारमें आए हैं. इसीके द्वारा उन्होंने परमधामको प्राणनली (शहरग) से भी निकट दिखाया और ऐसा अनुभव करवाया कि हम परमधाममें बैठे हुए ही संसारका यह खेल देख रहे हैं.

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम ।
तूं रूह है अरस अजीम की, तुझ को दिया हुकम ॥ ४१

इस प्रकार सद्गुरुने मुझपर अति कृपा करते हुए ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) दिया और कहा कि तुम परमधामकी आत्मा (इन्द्रावती) हो, तुम्हारे लिए यह आदेश है –

गिरो आई लैल के खेलमें, सो तुमें मिलसी आए ।
दिल साफ इनों के करके, अरसमें लीजे उठाए ॥ ४२

ब्रह्मात्माएँ संसारके अज्ञानमय खेलमें (सुरता रूपसे) अवतरित हुई हैं, वे सभी आकर तुम्हें मिलेंगी. तारतम ज्ञानके द्वारा उनके हृदयको निर्मल बनाकर उन्हें परमधाममें जागृत करना.

ए बात मैं दिलमें लई, तब महंमद हुए मेहेरबान ।
हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान ॥ ४३

जब मैंने सद्गुरुकी यह आज्ञा हृदयपूर्वक शिरोधार्य की तब वे मुझ पर अति कृपालु बने. उन्होंने मेरे हृदयमें बैठकर कुरानमें निर्दिष्ट यथार्थ ज्ञान (हकीकत) एवं पूर्ण पहचान (मारिफत) के साङ्केतिक रहस्योंको स्पष्ट कर दिया.

सब सुध भई अरस की, हुई हकसों निसबत ।
गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अरस न्यामत ॥ ४४

सद्गुरुके ज्ञानसे मुझे परमधामकी सभी सुधि प्राप्त हुई, धामधनीके साथका मेरा सम्बन्ध भी स्पष्ट हो गया. अब परमधामकी आत्माएँ मुझे मिलने लगी हैं, उन्हें मैं परमधामकी अमूल्य सम्पदाओंसे अवगत करवा देता हूँ.

ए सुकन पेहेलें लिखे, बीच कतेब वेद ।
सोए करत हों जाहेर, जो दिए दोऊ हादियों भेद ॥ ४५

ब्रह्मात्माओंकी यह बात वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें पहलेसे ही सङ्केत रूपमें लिखी गई थी. मैं उन्हीं बातोंको प्रकट कर रहा हूँ जिनका रहस्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी प्रदत्त तारतम ज्ञान एवं रसूल मुहम्मदके कुरानके द्वारा स्पष्ट

हुआ है.

रूहें बेनियाज थीं, बीच दरगाह बारे हजार ।
जाने ना आप अरस की, साहेबी अपार ॥ ४६

अखण्ड परमधाममें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ अपनी ही मस्ती में थी. उन्हें अपनी तथा परमधामकी महिमाकी सुधि नहीं थी.

सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध बिरह मिलाप ।
ना सुध बुजरक अरस की, खबर न खावंद आप ॥ ४७

आनन्दमय परमधाममें उन्हें दु:ख-सुखका तथा विरह-मिलनका कोई अनुभव नहीं था. यहाँ तक कि उन्हें महान परमधाम, परब्रह्म परमात्मा तथा स्वयंकी सुधि भी नहीं थी.

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बडा क्यों कर ।
ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर ॥ ४८

ब्रह्मधाममें ब्रह्मात्माओंको स्वामी तथा सेवककी सुधि ही नहीं थी. अद्वैत भूमिमें छोटे और बड़े कैसे हो सकते हैं ? (सब एकरस हैं). उन्हें अद्वैत (ब्रह्म) तथा द्वैत (माया) की एवं सत्य तथा असत्यकी भी सुधि नहीं थी.

ना सुध दोस्त ना दुसमन, ना सुध नफा नुकसान ।
ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान ॥ ४९

मित्र तथा शत्रु, लाभ तथा हानि, दूर तथा निकट, विश्वास तथा अविश्वास किसीकी भी सुधि उन्हें नहीं थी.

तिसवास्ते खेल देखाइया, ए बात दिलमें आन ।
झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान ॥ ५०

उपर्युक्त सभी बातोंको हृदयङ्गम कर धामधनीने इसीलिए यह मायाका खेल दिखाया कि इन अनित्य उदाहरणोंको दिखाने पर ब्रह्मात्माओंको सत्य (परमात्मा) की पहचान हो सके.

सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और ।
झूठ नकल देखे बिना, पावें ना अरस ठौर ॥ ५१

धामधनीको यह अनुभव करवाना था कि उनका ही प्रभुत्व सत्य है. उनके

अतिरिक्त किसीका भी अस्तित्व नहीं है. किन्तु संसारके इस मिथ्या प्रतिबिम्बको देखे बिना ब्रह्मात्माओंको अखण्ड धामके महत्त्वका अनुभव नहीं हो सकता था.

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत ।
कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत ॥ ५२

उदाहरण दिए बिना यह स्पष्ट नहीं होता है कि अनित्य संसार और नित्य परमधाममें क्या अन्तर है ? कुछ अन्य पदार्थ (द्वैत-माया) को देखे बिना अद्वैत परमात्माका महत्त्व भी तो ज्ञात नहीं होता.

यों जान बीच बका मिने, दिलमें ल्याए हक ।
नूर जलाल रूहन को, देखें असल इसक ॥ ५३

परमधामके अन्तर्गत इन सभी बातों पर विचार कर श्रीराजजीने अपने हृदयमें यह भाव लिया कि मेरे सत अङ्ग अक्षरब्रह्म मेरी ब्रह्मात्माओंके सत्य प्रेमका प्रत्यक्ष अनुभव करें.

और लिया ए दिलमें, जो अरवाहें अरस की ।
दूजी बिना जाने नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥ ५४

श्री राजजीने यह भाव भी अपने हृदयमें लिया कि परमधामकी ब्रह्मात्माएँ द्वैत मायाको देखे बिना नहीं जान पाएगी कि अपने धनीका प्रभुत्व (महिमा) किस प्रकार है.

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक ।
तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक ॥ ५५

ब्रह्मधाममें अद्वैत परमात्माके अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नहीं, सर्वत्र उन्हीं अद्वैत स्वरूपकी सत्ता है. इसलिए उनके अतिरिक्त द्वैत मायाका विस्तार देखे बिना उन्हें कौन श्रेष्ठ कह पाएगा ?

असल होए जित अकेला, और होए नाहीं नकल ।
सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल ॥ ५६

जहाँ पर वास्तविक (असल) स्वरूप ही हो, प्रतिबिम्ब हो ही नहीं तो

प्रतिबिम्बको देखे बिना कैसे पहचान होगी कि यह वास्तविक है.

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख ।
ए सुख लजत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख ॥ ५७

इसी प्रकार जहाँ पर कोई दुःख हो ही नहीं, मात्र सुख ही सुख हो तो उस सुखका अनुभव तभी हो पाएगा जब कुछ दुःख भी देख लिया जाए.

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट ।
सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ ॥ ५८

जिस परमधाममें यावत् सामग्रियाँ सत्य ही सत्य हैं वहाँ पर हठ (जिद) करने पर भी सत्य और असत्यका निरूपण नहीं हो सकता. वस्तुतः सत्य परमात्माकी यथार्थ पहचान तभी होगी जब कोई नश्वर अथवा मिथ्या (झूठा) उदाहरण सामने आ जाए.

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए ।
तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए ॥ ५९

जहाँ पर अन्य कोई है ही नहीं मात्र एक ही अद्वैत स्वरूप है, तो उन अद्वैत स्वरूप परमात्माकी सुधि अर्थात् परमात्मा एक ही है इस तथ्यकी पुष्टि होना किसी दूसरे (द्वैत मायाके) उदाहरणके बिना कैसे सम्भव होगा ?

जित साहेब होवें एकला, ना साहेदी दूजे बिन ।
बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन ॥ ६०

जहाँ पर एक परमात्मा (अद्वैतस्वरूप) ही हैं उस परमधामकी साक्षी द्वैत मायाके विवेचन बिना कैसे सम्भव हो सकती है ? इसलिए शास्त्रादिकी साक्षी दिए बिना अद्वैत परमात्माके प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकेगा ?

तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक ।
सो न आवे ख्वाबी दम पर, जोलों होए न रूहें बुजरक ॥ ६१

इसीलिए कुरानमें भी कहा है कि परमात्मा एक हैं तथा उनके सन्देशवाहक रसूल श्रेष्ठ (सत्य) हैं. ऐसे महान रसूल श्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंका आना निश्चय हुए बिना स्वप्नके जीवोंके लिए सन्देश लेकर नहीं आते.

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम ।
महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम ॥ ६२

इन्हीं ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए धामधनीके आदेशसे संसारका यह खेल रचाया गया है और रसूल मुहम्मद भी ब्रह्मात्माओंके लिए धामधनीका सन्देश लेकर इस जगतमें आए हैं.

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत ।
अरस रूहें फिरस्ते, हुई हक की मारफत ॥ ६३

रसूल मुहम्मद जिस कुरानको ले आए हैं, अब उसकी यथार्थता स्पष्ट कर दी गई है. इससे परमधामकी ब्रह्मात्माएँ, ईश्वरीसृष्टि तथा पूर्णब्रह्म परमात्माकी पूर्ण पहचान हो गई है.

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत ।
भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत ॥ ६४

कुरान आदि ग्रन्थोंमें पहलेसे ही जिसका वर्णन किया गया था वह कयामतकी घड़ी आ पहुँची है. इस घड़ीके लिए यह कहा गया था कि संसारके जीवोंको मुक्तिस्थलोंका सुख दिलाकर श्यामाजी (सद्गुरु) ब्रह्मसृष्टियोंके समुदायको लेकर परमधाममें जागृत होंगी.

इन विध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी ।
देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥ ६५

इस प्रकारका विवरण मैंने इसीलिए दिया है कि ब्रह्मात्माएँ इससे धामधनीकी महिमा जान लें. वस्तुतः नश्वर खेलको दिखाए बिना धामधनीके प्रभुत्वको वे नहीं जान पाएँगीं.

हकें देखाई अरस साहेबी, हादी रूहों को यों कर ।
दुई देखाई झूठ ख्वाबमें, पावने पटंतर ॥ ६६

इस प्रकार नश्वर खेल दिखा कर धामधनीने श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको परमधामका महत्त्व समझाया. सत्य और असत्य (द्वैत और अद्वैत) का अन्तर स्पष्ट करवानेके लिए उन्होंने स्वप्नवत् संसारमें मायाका द्वैत भाव दिखा दिया.

चढना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत ।
तिन पर ला मकान है, तिन पर नूर बका साबूत ॥ ६७

अब इस मृत्युलोक (नासूत) से अपनी सुरताको ऊपर चढ़ाना है. मृत्युलोकके ऊपर (चौदह लोकोंसे सर्वोच्च) वैकुण्ठ धाम (मलकूत) है, उससे ऊपर शून्य-निराकार (ला मकान) है तथा उससे भी ऊपर अखण्ड अक्षरधाम है.

कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत ।
खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत ॥ ६८

इस नश्वर जगत (मृत्युलोक) के करोड़ों जीव वैकुण्ठ आदि धामके अधिपति (ब्रह्मा,विष्णु ,महेश) की पूजा करते हैं और उनको ही परब्रह्म मानते हैं. संसारमें वैकुण्ठ धामकी इतनी बड़ी महिमा बतलाई गई है.

कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत ।
नूर सिफत कर कर गए, पर आगूं ना पोहोंचत ॥ ६९

ऐसे करोड़ों वैकुण्ठ लोकोंके स्वामी शून्य निराकार (महाशून्य) के अन्तर्गत हैं. उन्होंने अक्षरब्रह्मकी महिमा वारंवार गाई है तथापि वे (शून्य निराकारसे) आगे नहीं पहुँचे हैं.

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बांझा सींग ससक ।
आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखी रंचक ॥ ७०

वेदादि शास्त्रोंमें नश्वर संसारके लिए अनेक संज्ञाएँ दी गईं हैं. वहाँ पर बन्ध्यापुत्र, शशक शृङ्ग (खरगोशके सींग), आकाश पुष्प इत्यादि उपमा देकर इस जगतके लेशमात्र अस्तित्व को भी नकारा है.

कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला ।
ए कुन केहेते हो गया, सो कयामत को फना ॥ ७१

इसी प्रकार कतेब ग्रन्थोंमें भी यही कहा है कि शून्य निराकार (ला मकान) के नीचेका खेल अस्तित्वहीन-नहींवत् (ला) है. यह सब परमात्माके द्वारा

'होजा' (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न हुआ है और प्रलय (कयामत) के समय नष्ट हो जाएगा.

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर ।
इन की सहूर सुरैया लग, सो हकें पोहोंचे क्यों कर ॥ ७२

जो लोग इस नश्वर जगतका ही महत्त्व जानते हैं वे जादुई खेलके कबूतरके समान (स्वप्नवत्) हैं. इनकी समझ भी ज्योतिस्वरूप (सुरैया) पर्यन्तकी ही है. इसलिए वे पूर्णब्रह्म परमात्मा तक कैसे पहुँच सकते हैं ?

कहें कबूतर खेल के, खेल सरीक हक का ।
हक हमेसा वेद कतेबमें, खेल तीनों काल फना ॥ ७३

जादुई खेलके कबूतरके समान स्वप्नवत् संसारके जीव इस नश्वर जगतके खेलको पूर्णब्रह्म परमात्माके समान अखण्ड मानते हैं. वेद कतेब आदि ग्रन्थोंमें तो परमात्माको शाश्वत कहा है और इस रचनाको तीनों काल (भूत, वर्तमान और भविष्य) में अनित्य कहा है.

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें ।
ना सरीक ना निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों माहें ॥ ७४

वेद, कतेब आदि धर्मग्रन्थोंमें यह भी कहा है कि एक परब्रह्म परमात्माके तेज (नूर) का ही अस्तित्व (प्रभुत्व) है, उसके अतिरिक्त इस खेलका कोई अस्तित्व नहीं है. न कोई परमात्माके समान हो सकता है और न ही उसका कोई उदाहरण बन सकता है.

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक ।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक ॥ ७५

इस प्रकार स्वप्नवत् खेल अनित्य है और पूर्णब्रह्म परमात्मा शाश्वत हैं. परन्तु जैसे परमात्माकी अपरिमित महिमा है वैसे ही यह नश्वर खेल भी अद्भुत है.

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत ।
ए झूठा खेल देखाइया, लेने हक लज्जत ॥ ७६

सत्य परमात्माको समझानेके लिए नश्वर जगतका उदाहरण दिया जाता है.

वस्तुतः सत्य और असत्यका सम्बन्ध ही क्या ? किन्तु ब्रह्मात्माओंको यह नश्वर खेल इसीलिए दिखाया गया कि वे इससे अखण्डका अनुभव कर सकें.

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल ।
ऐसी नूर जलाल की, कुदरत रखे बल ॥ ७७

अक्षरब्रह्मके पलमात्रमें करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं. वस्तुतः अक्षरब्रह्मकी प्रकृति (सङ्कल्प शक्ति) मात्रमें इतना बड़ा सामर्थ्य है.

तिन से कायम होत है, सदरतुल मुंतहा जित ।
होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत ॥ ७८

कुरानमें जिसको 'सद्रतुल मुंतहा' कहा है ऐसे अक्षरधामके स्वामी द्वारा नित्यप्रति ब्रह्माण्डोंकी रचना एवं लयका सङ्कल्प होता रहता है. अक्षरब्रह्मके इस धामकी महिमाका वर्णन नश्वर जिह्वा द्वारा सम्भव नहीं है.

सदरतुल मुंतहा थें, आवत नूर जलाल ।
जित है अरस अजीम, खावंद नूर जमाल ॥ ७९

अक्षरधामसे अक्षरब्रह्म नित्यप्रति अपने धनी अक्षरातीतके दर्शनके लिए परमधाम आते हैं, जहाँ पर परमधामके धनी अक्षरातीत विराजमान हैं.

सो नूर नूरतजल्ला के, दायम आवें दीदार ।
इन दरगाहमें उमत, रूहें बारे हजार ॥ ८०

ऐसे अक्षरब्रह्म (नूर) नित्यप्रति अक्षरातीत (नूर तजल्ला) के दर्शनके लिए परमधाम आते हैं. इसी अक्षरातीत परमधाममें बारह हजार ब्रह्मात्माओंका समुदाय है.

एह मरातबा रूहन का, जिन का हादी अहंमद ।
मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद ॥ ८१

ब्रह्मात्माओंकी यह बड़ी प्रतिष्ठा है कि स्वयं श्यामाजी उनके शिरोमणि सद्गुरु बनकर इस खेलमें आई हैं. कुरानके अनुसार जब यह मीम गाँठ खुल जाएगी अर्थात् माया (फरामोशी नींद) का आवरण दूर हो जाएगा (ब्रह्मात्माएँ धाममें जागृत होंगी) तब वे सभी स्वयंको अद्वैत स्वरूप परमात्मा (हक अहद वाहिद) में ही एकाकार पाएँगीं.

महामत कहें ऐ मोमिनो, देखो खसम प्यार ।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार ॥ ८२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके प्रेमको तो देखो. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (ईसा) और रसूल मुहम्मदने मेरे अन्दर विराजमान होकर सभी द्वार खोल दिए अर्थात् सभी धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट कर परमधामका अनुभव करवा दिया.

प्रकरण १७ चौपाई १००९

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत ।
कौल किया था हकने, सो आई कयामत ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! अब तुम इस अज्ञानरूपी नींदसे जागृत हो जाओ. धामधनीने अपने प्रकट होनेका जो वचन दिया था वह आत्म-जागृति (कयामत) की घड़ी आ गई है.

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत ।
फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत ॥ २

धामधनीके आदेशसे जिब्रील फरिश्ता मक्कासे अधिकार पत्र (वसीयतनामा) ले आया. उसके साथ ही वह कुरानकी शक्ति (बरकत) फकीरोंका आशीर्वाद (शफकत) तथा लोगोंका विश्वास आदि भी लेकर आ गया.

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखर ।
जो होवे अरवा अरस की, सो नींद करे क्यों कर ॥ ३

कुरानमें यही कहा है कि मुहम्मदी ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तमें प्रायश्चित्त (तौबा) का द्वार भी बन्द हो जाएगा. इन बातोंको सुनकर परमधामकी आत्माएँ अज्ञानरूपी नींदमें कैसे पड़ी रहेंगी ?

आए लैल के खेलमें, लेने अरस लज्जत ।
सुख सांचे झूठे दुखमें, लेने को एह बखत ॥ ४

परमधामके अखण्ड आनन्दका विशेष अनुभव करनेके लिए ही ब्रह्मात्माएँ इस स्वप्नवत् खेल (लैल) में अवतरित हुई हैं. इस अनित्य संसारके दुःखोंमें

रहते हुए परमधामके अखण्ड आनन्द (सुख) का अनुभव करनेका यही सुअवसर है.

आपन बैठे बीच अरस के, अरस को नाहीं सुमार ।
दसों दिस मन दौडाइए, काहूं न आवे पार ॥ ५

वस्तुतः हम सभी अखण्ड परमधामके अन्तर्गत मूलमिलावामें ही बैठी हैं. परमधामका कोई पारावार नहीं है. दसों दिशाओंमें मन दौड़ाएँ तथापि उसका पार पाया नहीं जा सकता.

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अरस अपने इत ।
हक हादी रूहें मिलाए के, उडाए दै गफलत ॥ ६

परमधामके मूलमिलावामें बैठाकर धामधनीने स्वप्नवत् जगतका खेल दिखाया और यहाँ पर श्यामाजीने तारतम ज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माओंको एकत्र कर जागृत किया एवं अज्ञानरूपी नींदको उड़ा दिया.

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अरस खसम ।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अरस में तुम ॥ ७

वस्तुतः इस स्वप्नवत् खेलका लेशमात्रभी अस्तित्व नहीं है. वास्तवमें जो है वह धामधनी तथा उनका आदेश ही है. इसलिए यहाँ बैठे-बैठे तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होकर स्वयं परमधाममें बैठे हुए अनुभव करना चाहिए.

अरस बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख ।
ज्यों पेड झूठे ख्वाब का, उड जाए सब दुख ॥ ८

हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामके वन, उपवन, हौज कौसर, यमुनाजीको स्मरण करते हुए धामधनीके अखण्ड सुखोंका अनुभव करो. जैसे ही संसारका स्वप्न निर्मूल हो जाएगा वैसे ही यहाँके सभी दुःख भी उड़ जाएँगे.

असल आराम हिरदे मिने, अरस को अखंड ।
तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड ॥ ९

जब हृदयमें परमधामके वास्तविक आनन्दका अनुभव हो जाएगा तब इस स्वप्नवत् खेलके पिण्ड तथा ब्रह्माण्डका अस्तित्व भी मिट जाएगा.

कायम हक के अरसमें, बैठे अपने ठौर ।
हक के इत वाहेदतमें, कोई नाहीं काहूं और ॥ १०

धामधनीके अखण्ड घर परमधामके मूलमिलावामें हम सब आत्माएँ बैठी हैं. धामधनीके इस अद्वैत भूमिमें उनके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, इसक लीजे हक ।
असल अरस के बीचमें, हक का नाम आसिक ॥ ११

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! इस प्रकार धामधनीका अखण्ड प्रेम प्राप्त करो. क्योंकि अखण्ड परमधाममें श्रीराजजीको प्रेमी (आशिक) कहा गया है.

प्रकरण १८ चौपाई १०२०

किताब कुरानकी, इनमें एते बाब हैं, खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, म्याराज नामेका, खुलासा इसलामका, भिस्त सिफायत का बेवरा, हककी सूरत का, नाजी फिरके का, रूहोंकी बिने, नूर नूरतजल्ला, जहूर नामा, दो नामा के प्रकरण पाँच, मीजान, अरस अजीमकी महाकारन, मोमन आए अरस अजीम से.

श्री खुलासा सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर